मनोहरदास चतुर्वेदी

तरुण-भारती

गुलदार का शिकार

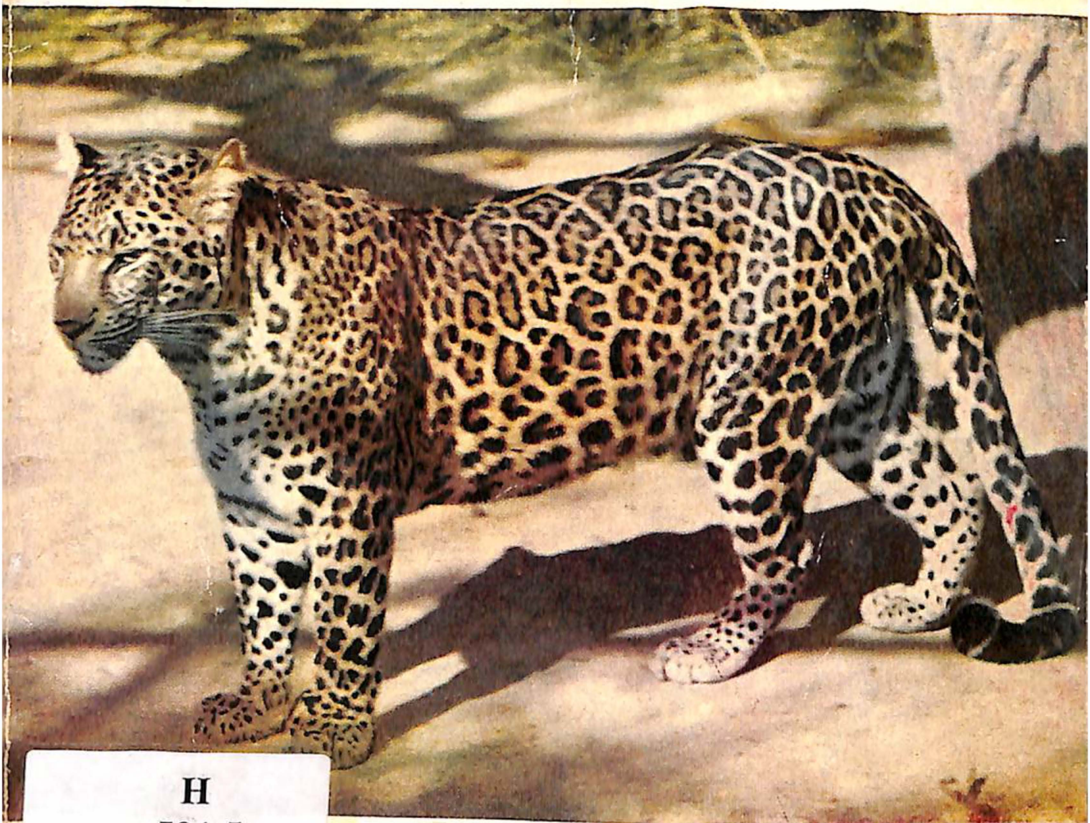

H
591.5
C 392 G

H
591.5
C392G

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY * SIMLA

CATALOGUED

गुलदार का शिकार

तरुण-भारती

गुलदार का शिकार

मनोहरदास चतुर्वेदी

अनुवादक
श्रीकान्त व्यास

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नयी दिल्ली

मार्च १९७० (फाल्गुन १८९०)

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक की रॉयल्टी
भारतीय वन्य-जीव-सुरक्षा सोसायटी, देहरादून,
को प्रदत्त है।

रु० : ३.२५

H
591.5
C392G

34464
28.4.70

Library IIAS, Shimla
H 591.5 C 392 G
00034464

सचिव, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-५, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली १६
द्वारा प्रकाशित व हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, क्वींस रोड, दिल्ली-६ द्वारा मुद्रित।

प्रस्तावना

नेशनल बुक ट्रस्ट ने 'द नेहरू यू डोंट नो' नामक अपनी पुस्तक के साथ 'यंग इंडिया' पुस्तकमाला का समारम्भ किया था, जिसका उद्देश्य भारत के नवयुवकों की ज्ञान संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। इस पुस्तकमाला में महापुरुषों के प्रेरणाप्रद जीवन-चरित्र और विख्यात साहसिक कार्यों के परिचय के साथ ही विज्ञान और तकनीक के द्वारा उद्घटित आश्चर्यमय जीवन संसार की रोचक झाँकियाँ भी सम्मिलित हैं।

'गुलदार का शिकार' (द पैंथर ऑन द प्राउल) इस माला की दूसरी पुस्तक है।

सिंह का उल्लेख संसार भर की लोककथाओं और बोधकथाओं में हुआ है, तथा शेर को मोहनजोदड़ो और हड़प्पा (ई० पू० २,५००-१,५००) की हाल में खोदकर निकाली गयी सभ्यताओं की मोहरों पर सम्मान का स्थान प्राप्त हुआ है, लेकिन गुलदार पर युगों से बहुत कम ध्यान दिया जा सका है।

निनेवेह के असीरियाई महलों में सिंह को चित्रित किया गया है। मिस्र के प्राचीन मकबरों और भारत के अनेक मंदिरों के प्रवेश-द्वार पर सिंह पहरा दे रहा है। आर्यों के महाकाव्यों के साथ ही बाईबिल में भी इसका उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार शेर को बौद्ध जगत में बड़ा सम्मान प्राप्त है। लेकिन केवल ग्रीक लोगों ने ही गुलदार को आर्तेमिस, सीबेल और सर्से जैसे अपने देवी-देवताओं के साथ सम्बद्ध करके इसे मान्यता प्रदान की है।

इस प्रकार मानव कल्पना को प्रभावित करने में असफल रहने के कारण गुलदार को अपने बड़े सगे-संबंधियों की अपेक्षा लगभग गुमनाम ही रहना पड़ा है। गुलदार को न तो किसी राजा ने अपने शस्त्रास्त्रों पर चिह्नित किया और न किसी योद्धा ने इसे साहस और वीरता के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया। शेर-दिल बहादुर तो सुने गये हैं लेकिन गुलदार-दिल कोई नहीं कहलाया, और न कभी किसी सम्राट या धर्माध्यक्ष ने अपने नाम को इसके नाम से विभूषित करना आवश्यक समझा। अशोक स्तम्भ के सिंह तो भारत सरकार के राज्य-चिह्न में प्रतिष्ठित हैं, लेकिन अशोक के शिलालेखों में गुलदार का कहीं जिक्र नहीं है।

खुले जंगलों के बीच फैले घास के मैदानों में निर्भय घूमते हुए सिंहों की शाही

शान ने हमेशा मनुष्य को प्रभावित किया है। यही कारण है कि मानव सभ्यता ने सिंह को सबसे अधिक प्रतिष्ठा प्रदान की है।

दूसरी ओर, शेर अपने शानदार रंगीन व्यक्तित्व को घने जंगलों में छिपाये रहता है, रात के अंधेरे में ही बाहर आता है और अपने आपको लोगों की नजरों से छिपाने की पूरी कोशिश करता है। इसीलिए शेर की शाही चाल, उसकी दिलेरी और उसकी धारियोंदार खाल की सुन्दरता तब तक रहस्य के आवरण में ही छिपी रही जब तक कि पहली बार बंगाल में अंग्रेजों की नजर उस पर न पड़ी—इसीलिए बंगाल का शेर प्रसिद्ध हुआ।

लेकिन गुलदार—जंगल का यह अत्यन्त द्रुतगामी प्रेत—शेर की अपेक्षा रहस्य के गहरे आवरण में छिपा रहता है। इसीलिए कोई आश्चर्य नहीं कि इसका अद्वितीय सौन्दर्य और इसकी असाधारण धूर्तता प्रशंसकों की नज़रों से परे ही रह जाती है।

स्वर्गीय श्री मनोहरदास चतुर्वेदी ने अपनी इस पुस्तक में गुलदार के उसी रंगारंग व्यक्तित्व और निराली शान को उजागर करने का प्रयास किया है, जिसे गुलदार अपनी घोर एकान्तप्रियता और रहस्यमयता के कारण एक लम्बे समय से लोगों की नजरों से छिपाये रखने में सफल रहा है।

—**बालकृष्ण केसकर**

नयी दिल्ली
सितम्बर, १९६९

विषय-सूची

		पृष्ठ
	प्रस्तावना	पांच
अध्याय		
१.	गुलदार और उसका निवास-स्थान	१
२.	गुलदार या तेंदुआ	७
३.	गुलदार की ज्ञानेन्द्रियाँ	१५
४.	सामान्य व्यवहार	२१
५.	प्राकृतिक संतुलन में गुलदार की भूमिका ...	३४
६.	गुलदार के शत्रु	४८
७.	गुलदार का भविष्य	७६
८.	गुलदार के निकट सम्बन्धी	८३
	सन्दर्भ	९३

१. गुलदार और उसका निवास-स्थान

"हुज़ूर, उस हत्यारे गुलदार ने यह तीसरा बछड़ा उठाया है !" उस दल के अगुआ ने कहा जो एक दिन सुबह ही मुझ से मिलने के लिए बैलपड़ाव आ पहुँचा था। मैं वहाँ डेरा डाले पड़ा था। उस इलाके के मवेशी पालने वाले इस गुलदार के अत्याचार से निश्चय ही बहुत पीड़ित थे। वह उनके बहुत से मवेशी खा चुका था। अब निराश होकर वे मुझसे सहायता माँगने आये थे।

मैं अभी-अभी नाश्ता खत्म करके जंगल के मुआइने पर जाने की तैयारी कर रहा था। उन लोगों की बात सुनकर मुझे उस गुलदार के हमले पर नहीं बल्कि हमले के उसके समय के बारे में आश्चर्य हुआ। पूछताछ से मालूम हुआ कि उसके पिछले सभी हमले गोधूलि वेला के झुटपुटे में हुए थे, जब मवेशी खत्ते की ओर लौट रहे होते थे। लेकिन उसका यह हमला सुबह-सुबह हुआ था, बिलकुल दिन के उजाले में जब कि मवेशी पास के चरागाह की ओर जा रहे थे। उसने एक बछड़े पर हमला किया, जो कुछ पिछड़ गया था। इस खबर को लाने वाले चरवाहे बहुत घबराये हुए थे। मैंने स्वभावत: उनसे और विस्तार में जानना चाहा। उन्होंने उस बछड़े के बारे में तो बहुत कुछ बताया जो मारा गया था, लेकिन उसे मारने वाले गुलदार के बारे में वे एक शब्द भी नहीं बता सके। उन्होंने मुझे बछड़े की उम्र और रंग-रूप के बारे में, यहाँ तक कि वह बछड़ा था या बछिया आदि सब कुछ बता डाला। लेकिन गुलदार के बारे में कुछ भी नहीं कह सके। हमला इतनी तेज़ी से हुआ था कि वे हमलावर को एक नज़र भी देख नहीं सके। वे तो सिर्फ इतना ही जान सके थे कि यह शायद कोई लकड़बग्घा था।

इस खूँखार जानवर की हत्यारी प्रवृत्ति के बारे में लोगों में चिन्ता होना स्वाभाविक ही था। क्योंकि जब एक बार कोई गुलदार ढोर-डाँगर को उठाना शुरू कर देता है, तो फिर वह शिकार के दूसरे जानवरों को मारने के कठिन काम को शायद ही कभी पसन्द करता है। इस विपत्ति से इलाके के लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए कुछ तो करना ही था।

इसलिए पास ही जंगल में चल रहे काम को देखने जाने के पहले मैंने अपने शिकारी भीमसिंह से चरवाहों के साथ जाकर मारे गये जानवर का पता लगाने

तथा वहीं सबसे पास के पेड़ पर मचान बाँधने का आदेश दिया।

जब चाय के समय तक मैं अपने काम पर से लौट कर वापस आया तो भीमसिंह मेरा इन्तज़ार कर रहा था। उसने बताया कि जब वह मचान बाँध रहा था तो गुलदार वहीं पास ही कहीं मौजूद था, क्योंकि आसपास बराबर चीतल चीख रहे थे। उसने आग्रह किया कि मुझे देर नहीं करनी चाहिए और तुरन्त मचान पर चला जाना चाहिए।

जल्दी से एक प्याला चाय पीकर मैं अपना हाथी लेकर भीमसिंह के साथ उस गुलदार के मारे हुए जानवर की खोज में निकल पड़ा। हम लोगों को उस जगह पहुँचने में देर नहीं लगी, जहाँ सवेरे ही दुर्घटना घटी थी। मचान उस जगह के पास ही एक ऊँचे पेड़ पर बाँधा गया था। मचान को पत्तों और टहनियों से बड़ी सावधानी से छिपा दिया गया था। एक छोटी-सी सीढ़ी और अपने हाथी की मदद से मैं अपनी राइफल लेकर मचान पर जा पहुँचा। मचान पर आराम से बैठने के बाद मैंने भीमसिंह से जानवर की लाश खोलने के लिए कहा, जो मेरे सामने ही घासफूस और टहनियों के एक बड़े से ढेर में छिपी पड़ी थी। उसे इस प्रकार भेड़ियों, लकड़बग्घों और गिद्धों की नज़र से बचा कर रखा गया था जो आसपास जंगल में उसके मांस के लिए शोर मचा रहे थे।

जब भीमसिंह लाश को बाहर निकालने के लिए आगे बढ़ा तो यह देख कर भौंचक्का रह गया कि लाश वहाँ से गायब हो चुकी थी। ऐसा लगता था जैसे इस बीच बछड़े में जान आ गयी हो और वह वहाँ से चुपचाप चला गया हो। गुलदार ने इतनी सफ़ाई से लाश वहाँ से गायब की थी कि घासफूस का वह ढेर जैसे का तैसा ही बना रहा—शायद कोई मनुष्य भी ऐसी सफाई नहीं दिखा सकता था। जब मचान बाँधा जा रहा था तब अपने 'शिकार' के आसपास चलने वाली कार्रवाई से परेशान होकर गुलदार उसे उस समय एक नज़र देखने के लिए आया होगा जब बीच में कुछ देर के लिए भीमसिंह वहाँ से चला आया था। ज़ाहिर है, उसे यह सब कुछ पसन्द नहीं आया होगा, और उसने मचान को पेड़ पर वैसे ही टँगा रहने दिया और अपना 'शिकार' वहाँ से हटा ले जाने का फैसला कर लिया होगा।

इस तरह खेल खत्म हो चुका था। लेकिन मैंने हिम्मत हारने से इनकार कर दिया। मैं अपने हाथी पर सवार होकर 'शिकार' के घसीटे जाने के चिह्नों का अनुसरण करने लगा। कुछ ही देर बाद मैंने उसका पता लगा लिया। उसे पिछली जगह से लगभग दो सौ गज़ दूर एक झाड़ी में छिपा दिया गया था। मैं अपने हाथी

पर सवार—घनी झाड़ियों में गुलदार की तलाश करने लगा। इस बीच भीमसिंह ने फ़ौरन मचान को वहाँ से हटा कर उस जगह के पास के एक पेड़ पर बाँध दिया जहाँ इस समय बछड़े की लाश पड़ी हुई थी। गुलदार मेरे हाथी से बचने की कोशिश में इतना उलझा रहा कि न तो वह मुझे देख पाया और न उसे यही पता चल सका कि नया मचान 'शिकार' की नयी जगह के ऊपर ही बाँधा जा रहा है।

जब मचान तैयार हो गया तो मैंने भीमसिंह की जगह संभाल ली। मैं मचान पर पहुँच गया और भीमसिंह कूद कर हाथी पर सवार हो गया। महावत हाथी को झाड़ियों में से हाँकता हुआ पीछे एक सूखे नाले के पार ले गया। गुलदार कुछ दूर तक तो हाथी का पीछा करता रहा, और जब उसने देखा कि खतरा टल गया है तो वह फौरन अपने 'शिकार' के पास लौट आया। जब वह फिर से बछड़े की लाश को घसीट रहा था तो मैंने निशाना साध कर उसके कन्धे के पास गोली मार दी। लेकिन उसकी खाल के सुनहरे रंग को धीरे-धीरे फीका पड़ते देख कर मुझे कितना अफसोस हुआ ! ईश्वर की सृष्टि के सब से सुन्दर नमूने को अपने पैरों में माँस के एक ढेर के रूप में परिवर्तित होते हुए देखने से बढ़ कर दुःखद और हृदय-विदारक अनुभव और क्या हो सकता है ! लगता है, किसी शिकारी के जीवन में केवल दो बड़े संत्रास हो सकते हैं : एक तो उस शिकार को न प्राप्त कर पाना जिसकी उसे खोज है, और दूसरा जो इससे भी अधिक गहरा है, वह है अन्त में उसे प्राप्त करने के बाद नष्ट करने पर विवश होना।

मेरी गोली से मरे हुए उस पहले गुलदार ने मुझ पर यह असर डाला। उसके बाद से चौकड़ी भरते इस सुन्दर जीव से मेरी अनगिनत मुठभेड़ें हो चुकी हैं। साल पर साल गुजरते गये हैं और मैं उसकी सुन्दर छरहरी देह की अद्वितीय सुन्दरता पर मुग्ध होता रहा हूँ। इसकी रहस्यमय सहजबुद्धि और इसके मन-मौजी तौर-तरीकों पर मुझे हमेशा अचरज होता रहा है। बहुत सोच-विचार कर मैं इस फ़ैसले पर पहुँचा हूँ कि अपनी बेमिसाल चालाकी और अपनी रंगारंग और शानदार खूबसूरती में गुलदार अपने से अधिक बड़े सगे-सम्बन्धियों को मीलों पीछे छोड़ देता है।

दिल्ली प्रजाति के अन्य बड़े हिंस्र-जीवों में गुलदार ही ऐसा है जो सारी दुनिया में इफ़रात से मिलता है। यह समस्त एशिया और अफ्रीका में काफ़ी बड़ी संख्या में पाया जाता है, तथा उत्तरी और दक्षिणी अमरीका में इसका अपेक्षाकृत अधिक तगड़ा भाईबंद 'जैगुआर' इसका प्रतिनिधित्व करता है। भूविज्ञानियों द्वारा

ज़मीन से खोद कर निकाले गये जीवाश्मों से पता चलता है कि मध्य और दक्षिणी यूरोप में भी कभी यह पाया जाता था।

गुलदार सम्पूर्ण भारत उप-महाद्वीप में सर्वत्र पर्याप्त संख्या में पाया जाता है। इस तथ्य से कि श्रीलंका में न तो सिंह मिलते हैं और न शेर ही, यह ज्ञात होता है कि वे भारत में गुलदार के बाद ही आये, और गुलदार उसी समय वहाँ जा पहुँचा था जब वह द्वीप भारत की मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ था।

शेर पूर्वी, दक्षिणी और मध्य एशिया के जंगल वाले इलाकों में पर्याप्त संख्या में पाये जाते हैं, तथा सिंह अफ्रीका के खुले घास के मैदानों में और कुछ गिनी-चुनी संख्या में पश्चिमी भारत (गिर वन, गुजरात) में भी मिल जाते हैं—लेकिन गुलदार तो सारे संसार में काफ़ी बड़ी संख्या में मिलता है। संसार भर में इसके फैले होने से यह संकेत निकलता है कि यह शेर, चीता आदि बड़ी बिल्लियों के विकास-क्रम में अपेक्षाकृत पहले प्रकट हुआ था। भूविज्ञानियों का कहना है कि गुलदार का प्रादुर्भाव 'माइओसीन' युग में, लगभग एक करोड़ से ढाई करोड़ वर्ष पहले हुआ था।

यहाँ संक्षेप में हम यह भी जान लें कि अब साइबेरिया में, जो कि गुलदार का मूल निवास-स्थान माना जाता है, एक भी गुलदार बाकी नहीं बचा है। गुलदार पूरे दक्षिण-पूर्वी एशिया में कागिन द्वीप समूह तक और बाली द्वीप के उत्तर-पूर्व तक मिलता है, लेकिन बाली द्वीप में नहीं मिलता। यह तिब्बत में लगभग गायब हो चुका है और सहारा में भी नहीं पाया जाता। आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, जापान, मडागास्कर, अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूहों में भी गुलदार नहीं पाया जाता।

आमतौर से यह माना जाता है कि शेर की तरह गुलदार भी साइबेरिया में तब विकसित हुआ जब कि वह इतना ठंडा प्रदेश नहीं था जितना कि आज है। विभिन्न जंगली जीवों के इसी भण्डार से गुलदार एशिया, यूरोप और अफ्रीका में फैला। ऐसा माना जाता है कि यह उत्तरी अमरीका में उस पूर्वकालिक भूमिसंधि के जरिये पहुँचा, जिसके सांकेतिक अवशेष कमचट्का प्रायद्वीप के परे अल्यूशियन द्वीपसमूह और सँकरी बेरिंग जलसन्धि के रूप में आज भी मौजूद हैं। एक से ढाई करोड़ वर्ष पूर्व प्रकट होने वाली प्रजाति के लिए यह एक कपोल-कल्पना मात्र नहीं तो कुछ-कुछ अतिरंजित अनुमान तो माना ही जायगा। और, कोई यह भी पूछ सकता है कि अमरीका में अपने आव्रजन के दौरान गुलदार ने फूल की आकृति के अपने धब्बों के बीच काले दागों का विकास कैसे कर लिया

और किस प्रकार वैसा ज़्यादा मज़बूत शरीर पा लिया जो इस समय जैगुआर में देखने को मिलता है।

आव्रजन के इस सिद्धान्त के समर्थकों का कहना है कि गुलदार ने भारत में उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित असम प्रदेश के ज़रिये प्रवेश किया। इस अनुमान के पीछे केवल यही एक सबूत है कि गुलदार की भारत में मिलने वाली किस्मों तथा समीप के बर्मी इलाक़ों और दक्षिणी चीन में मिलने वाली किस्मों में पर्याप्त समानता है। उत्तर-पश्चिम सीमा से इसके भारत में प्रवेश करने की बात सम्भव प्रतीत नहीं होती, क्योंकि अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में मिलने वाली इसकी किस्में भारतीय किस्मों से कुछ भिन्न हैं।

इस सारे अनुमान में, जो मुख्य रूप से गुलदार की खाल के रंग और उसके रोओं की गहराई में पाये जाने वाले अन्तर पर ही आधारित है, एक बात का अभाव है और वह यह है कि विभिन्न प्रजातियों के रक्षात्मक रंग के विकास में पर्यावरण के प्रभाव का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मलाबार (दक्षिण-पश्चिम भारत) का गुलदार कर्नाटक के सूखे प्रदेश में मिलने वाले अपने अत्यन्त निकट के पडोसी की अपेक्षा १,५०० मील दूर असम में पाये जाते अपने भाइयों से अधिक मिलता-जुलता है। यह तथ्य इस बात का एक प्रमाण है कि मौसम संबंधी समस्त परिस्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला समान प्राकृतिक पर्यावरण एक समान आकार-प्रकार को विकसित करता है। मलाबार और असम दोनों ही जगह १०० इंच से अधिक वर्षा होती है; इसके फलस्वरूप इन दोनों प्रदेशों के जीव-जन्तु और पेड़-पौधों में भी बहुत अधिक समानता पायी जाती है। इसी प्रकार लगभग समान जलवायु के कारण ईरानी गुलदार का प्रतिरूप आबू पर्वत के आसपास देखने को मिल सकता है।

किसी निश्चित क्षेत्र में गुलदार का विकास होने और वहाँ से सुदूर स्थित भूभागों में इसके प्रवास से संबंधित परिकल्पना की पुष्टि का प्रयास कठिन है। यह मान लेना कि गुलदार साइबेरिया से यात्रा करके दक्षिणी अफ्रीका पहुँचा होगा, अपनी कल्पना को आवश्यकता से अधिक खींचने-तानने के अलावा और कुछ नहीं है। भला यह क्यों नहीं माना जा सकता कि गुलदार का संसार के विभिन्न भागों में बिलकुल स्वतन्त्र और पृथक् रूप से विकास हुआ होगा। आखिर, मनुष्य के साथ भी तो विकास की आरम्भिक स्थितियों में यही कुछ हुआ है।

सिंह लम्बे-चौड़े घास के मैदानों को पसन्द करता है और शेर घने जंगली

इलाकों में ही पाया जाता है, लेकिन गुलदार इन दोनों स्थितियों से किसी के प्रति भी विशेष आग्रह नहीं रखता। अपने हल्के-फुल्के और चुस्त शरीर के कारण घने बरसाती जंगलों और छोटी झाड़ियों वाले इलाकों, रेगिस्तानी प्रदेशों और दलदली भूभागों, पहाड़ी इलाकों तथा सूखी घाटियों और खाई-खन्दकों—सभी जगह समान रूप से पाया जाता है।

हिमालय क्षेत्र में गुलदार ६,००० फुट की ऊँचाई तक मिलता है और कभी-कभी ८,००० फुट पर भी देखने में आ जाता है। मध्य भारत के पठारों, राजस्थान और दक्षिण प्रायद्वीप में सर्वत्र ही गुलदार चटियल पहाड़ों की ऊँची गुफाओं में पाया जाता है। सूडान में यह देश की पूरी पूर्वी सीमा पर तथा दक्षिण में भी आम तौर पर मिलता है। पूर्वी अफ्रीका में गुलदार प्रसिद्ध रिफ्ट घाटी (टाँगान्यीका) में स्थित मन्यारा झील के खारी किनारों के जंगली क्षेत्रों में काफ़ी बड़ी संख्या में मिलता है। यह ज़ाम्बेज़ी नदी (उत्तरी रोडेशिया) के किनारे पर भी पाया जाता है। दक्षिणी अफ्रीका में, जहाँ शिकार के जानवरों की लगातार कमी होती जा रही है, गुलदार पहाड़ी इलाकों में रहता है और पालतू जानवरों को खाकर ही किसी तरह जीवन-रक्षा कर पा रहा है। गुलदार अफ्रीका में विषुवत् रेखा के आसपास के उन प्रदेशों में बड़ी तादाद में मिलता है जहाँ की जलवायु काफ़ी नम है। यह उत्तरी काँगो के उन बरसाती जंगलों में भी मिलता है, जहाँ सिंह नहीं पाया जाता।

चाहे जिस किस्म का क्षेत्र हो, गुलदार वहाँ के सबसे ऊँचे स्थान पर ही अपना कब्ज़ा जमाता है— टेकरी, पहाड़ी या कुछ नहीं तो चट्टान के सबसे ऊँचे सिरे को ही यह अपना अड्डा बनाना पसन्द करता है। यह ऐसे स्थान पर ही डेरा डालता है जहाँ से आसपास का सारा इलाका दिखायी दे सके।

इस विवरण में इतना और जोड़ लेना ठीक होगा कि जंगली इलाकों को क्रमशः कृषि योग्य बनाये जाने के कारण शिकार पर निर्भर करने वाले जानवर भोजन और आश्रय के अभाव में धीरे-धीरे खत्म होते जाते हैं। लेकिन गुलदार इस स्थिति में भी काफ़ी लम्बे समय तक जीवन-निर्वाह कर सकता है, क्योंकि यह अपनी खूराक के लिए जंगली जानवरों के अभाव में पालतू जानवरों से बड़े मज़े में काम चला लेता है।

२. गुलदार या तेंदुआ

गुलदार हर परिस्थिति में अपनी रक्षा कर सकता है, लेकिन यह अपने एक नकली प्रतिद्वंद्वी तेंदुए से अपने नाम की हिफ़ाजत करने में सर्वथा असमर्थ है।

पश्चिमी देशों में प्राचीन काल में लोग सिंह को 'लियो' और गुलदार को 'पार्ड' कहा करते थे। उनका यह भी विश्वास था कि इन दोनों के संयोग से उत्पन्न एक प्रजाति और है, जिसे उन्होंने 'लियो-पार्ड' का नाम दे रखा था। ऐसा लगता है कि मूल रूप में 'लियोपार्ड' या 'लेपर्ड' (तेंदुआ) नाम उस प्रजाति को दिया गया जो बाद में 'हंटिंग-लेपर्ड' या चीता के नाम से भी जानी जाने लगी, लेकिन केवल शरीर पर के धब्बों को छोड़ कर गुलदार (पैंथर) से उसकी अन्य कोई समानता नहीं है।[1] बाद में चीते या 'हंटिंग-लेपर्ड' ('एकिनोनिक्स जुबाटस', ब्रूक्स, १८२८) को एक पृथक् प्रजाति के रूप में मान लेने के कारण 'लेपर्ड' या तेंदुआ नाम केवल कल्पना और अनुमान के लिए ही बचा रह गया।

उन्नीसवीं सदी के भारत के प्रकृति-विज्ञानियों (साइक्स, इलियट, होर्सफील्ड, हॉजसन और स्टर्नडेल) ने गुलदार और तेंदुए को दो भिन्न प्रजातियों के रूप में माना। वे विशेष रूप से इनके आकार, खोपड़ी की बनावट, रंग, रोओं की सघनता तथा धब्बों के फैलाव की स्थिति आदि में पाये जाने वाले अन्तर के आधार पर ही इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे। लेकिन वास्तविकता यह है कि गुलदार की आयु और लिंग के कारण ही इसकी विभिन्न किस्मों में कई प्रकार के अन्तर उत्पन्न हो जाते हैं। मार्जार परिवार (फ़ेलिस) सम्बन्धी अपने प्रबन्ध में टेमिंक ने तेंदुए को दोनों प्रजातियों में अपेक्षाकृत कुछ बड़ा बताया है। दूसरी ओर इलियट ने गुलदार को बड़ा माना है। गुलदार जैसी व्यापक रूप से फैली हुई प्रजाति के विकास पर क्षेत्रीय तत्वों का जो प्रभाव पड़ सकता है उसके प्रति बिलकुल बेखबर रहते हुए तत्कालीन प्रकृति-विज्ञानियों ने तेंदुए और गुलदार में बड़ी बारीकी से अन्तर स्थापित करने का प्रयास किया है—लेकिन कोई उल्लेखनीय विभिनन्ता नहीं पायी जाती।

लाइनियस ने गुलदार को 'फ़ेलिस पार्डस' कहा है। शायद उसके अध्ययन का

---

१. चीते या 'हंटिंग-लेपर्ड' की खाल के धब्बे ठोस होते हैं, जबकि गुलदार के धब्बे छल्ले या गुलाब की पंखुड़ियों की आकृति के होते हैं और उनके केन्द्र खोखले होते हैं।

आधार वे नमूने रहे होंगे जो उस समय काहिरा और सिकदरिया में पकड़ कर रखे गये थे। उसके बाद से गुलदार के अनेक लातिनी नाम गढ़े जा चुके हैं। इसी प्रकार फ्रेंच प्रकृति-विज्ञानी वालेन्सीएंस ने गुलदार की दो प्रजातियाँ मानी हैं—'फ़ेलिस लाँगीकोडाटा' (मलाबार तट और श्रीलंका) तथा 'फ़ेलिस तुलियाना' (ईरान)। रूसी प्रकृति-विज्ञानी पलास ने गुलदार की काकेशियाई किस्म को 'फ़ेलिस पैंथरा' नाम दिया है। मंचूरियाई गुलदार अपने घने लम्बे रोओं के कारण 'फ़ेलिस पार्डस विल्लोसा' कहलाता है। भारतीय गुलदार का सबसे पुराना उल्लेख डे ला मेथेरी (१) द्वारा किया गया मिलता है। आश्चर्य है कि यह उल्लेख सम्भवतः बंगाल के काले गुलदार को लेकर ही था, जिसका १७८८ में लन्दन टॉवर में प्रदर्शन किया गया था। मेयेर ने इस प्रजाति को 'फ़ेलिस फ़ुस्का' कहा है। बाद में टेमिंक ने गुलदार को 'फ़ेलिस पार्डस' और तेंदुए को 'फ़ेलिस लियोपार्डस' नाम दिया—यही नाम अरग्ज़लीवेन ने इसकी अफ्रीकी प्रजातियों के लिए प्रयुक्त किया। काली किस्म के गुलदार को, यह मानकर कि यह एक भिन्न प्रजाति है, 'फ़ेलिस मेलास' का विशेष नाम प्रदान किया गया।

१९३० में पोकॉक ने सामान्य भारतीय गुलदार को, जो अब आमतौर से तेंदुए का समानार्थी माना जाता है, 'पैंथेरा पार्डस फ़ुस्का' (२) नाम दिया। केवल कुछ खालों के साक्ष्य के आधार पर बहुत-सी किस्मों को मान्यता प्रदान की जा चुकी है। इस प्रकार मैंने सावलदेह (रामनगर, उत्तर प्रदेश) में जिस गुलदार को गोली मारी थी वह मिलार्ड के कश्मीरी तेंदुए (पैंथेरा पार्डस मिलार्डी) का सही प्रतिरूप था। औसत शिकारी 'पैंथेरा पार्डस' के नाम पर ही संतोष कर लेगा और प्रकृति-विज्ञानियों द्वारा प्रस्तुत भेद-प्रभेद की स्थापना के सिलसिले में बाल की खाल निकालने की कोशिश से अपने आपको अलग रखना चाहेगा। स्मरण रखना चाहिये कि तेंदुए और गुलदार में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। ये समान प्रजाति के लिए प्रयुक्त होने वाले केवल दो भिन्न नाममात्र हैं। ब्लाइथ और ब्लानफर्ड द्वारा प्रस्तुत आलोचनात्मक प्रबन्धों में इस मत की पुष्टि की गयी है तथा इसे स्तनपायी जीवों के आधुनिक विशेषज्ञों का समर्थन भी प्राप्त है (३,४)।

गुलदार का आकार-प्रकार घरेलू बिल्ली जैसा होता है। यह बहुत हल्के-फुल्के, छरहरे और लचकीले शरीर का होता है। गुलदार अपने चौकन्नेपन, फुर्ती तथा अनिश्चित स्वभाव के लिए प्रसिद्ध है। पूर्ण विकसित होने पर यह छोटे शेर के आकार का हो जाता है। नाक की नोक से लेकर पूंछ के सिरे तक सीधी रेखा में इसकी लम्बाई—अर्थात् खूंटी-नाप—आठ फुट से अधिक शायद ही कभी हो पाती

है। इसमें इसकी पूंछ की लम्बाई, जो ढाई से तीन फुट तक होती है, सम्मिलित है। मैंने अब तक जो सबसे लम्बा गुलदार मारा है उसकी लम्बाई ७ फुट और १० इंच थी (पीलीभीत)। मादा लगभग एक फुट छोटी होती है। तौल में नर गुलदार १२५ से १७५ पौंड तथा मादा ६० से ९० पौंड तक की होती है। खड़े होने पर गुलदार की ऊँचाई कंधों पर लगभग दो से ढाई फुट तक होती है। जंगली इलाकों में मिलने वाले गुलदार बस्ती के आसपास मिलने वाले और पालतू जानवरों का भक्षण करने वाले गुलदारों से प्रायः अधिक बड़े होते हैं।

गुलदार की खाल चिकनी और मुलायम होती है। खाल पर रोओं की लम्बाई और सघनता शरीर की स्थिति, आयु, मौसम और क्षेत्र की स्थिति पर निर्भर करती है। इसके सिर और पीठ की अपेक्षा निचले हिस्सों पर बाल अधिक लम्बे होते हैं। जवान गुलदार के बाल लम्बे और ज़्यादा घने होते हैं। गर्मी की अपेक्षा जाड़े में इसकी खाल ज़्यादा चमकीली और घनी होती है। गर्म जलवायु वाले प्रदेशों की अपेक्षा आमतौर से ठण्डे जलवायु वाले क्षेत्रों में इसकी खाल के बाल ज़्यादा लम्बे, घने और कुछ खुदरे होते हैं। गुलदार के अयाल नहीं होते।

गुलदार की खाल का रंग हल्के पीले से लेकर चमकीला सुनहरा तक और इनके बीच के सभी वर्णों का होता है, जैसे भूरा पीला, गहरा पीला, ललछौंहा, बादामी, धुंधला पीला, मटमैला और भूरा आदि। यह रंग पीठ से दोनों ओर नीचे की तरफ जाते हुए हल्का होता जाता है। एकदम नीचे पेट पर का रंग प्रायः सफेद-सा होता है। गुलदार की खाल पर के काले धब्बे, जो प्रायः फूल की आकृति के होते हैं, शरीर पर अपनी स्थिति के अनुसार छोटे-बड़े होते हैं इसके सिर, गरदन के पिछले हिस्से, हाथ-पैर के बाहरी हिस्से और पैर पर गहरे और स्पष्ट काले धब्बे होते हैं। ये धब्बे रीढ़ की हड्डी पर आमतौर से लम्बूतरे-से होते हैं। अन्यत्र ये धब्बे २ से ४ वृत्तों के गोल छल्ले या गुलाब के फूल जैसे होते हैं। इन खोखले छल्लों के केन्द्र का रंग पृष्ठभूमि के शेष रंग की अपेक्षा अधिक गहरा होता है। एक किस्म के गुलदार पर मैंने इन छल्लों के केन्द्र में काले धब्बे-से देखे, जो जैगुआर की रंग-योजना की याद दिलाते थे। गुलदार की पूंछ पर भी धब्बे होते हैं, जो सिरे की ओर पहुँचते-पहुँचते अधिक बड़े और संख्या में कम होते जाते हैं। इसकी आँखों के एक-एक कोने पर हल्की धारियाँ होती हैं जो नाक के दोनों ओर से मुँह के कोने तक आती हैं। चीते के चेहरे पर ये दोनों धारियाँ अधिक स्पष्ट होती हैं।

चूंकि गुलदार के शरीर पर के धब्बे चीनियों के छः कोनों वाले सिक्कों से

मिलते-जुलते थे, इसलिए उन्होंने इसका नाम 'सोन-सिक्का तेंदुआ' रखा था। गुलदार के शरीर पर इन धब्बों को स्थिति और इनका आकार तथा शेष पृष्ठभूमि का रंग आयु के अनुसार बदलता रहता है तथा उस पर क्षेत्र विशेष की बदलती हुई हालतों का भी स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार जवान गुलदार में ये छल्ले लगभग काले धब्बों जैसे नज़र आते हैं। इनके बीच के खोखले केन्द्र बाद के वर्षों में विकसित होते हैं। असम और मलाबार में जहाँ वर्ष में १०० से २०० इंच तक वर्षा होती है और गर्मी भी बहुत तेज़ होती है, गुलदार का रंग अधिक गहरा और स्पष्ट होता है। लेकिन मध्य भारत के सूखे और वार्षिक पतझड़ वाले जंगलों में जहाँ लगभग ३० इंच ही वर्षा होती, गुलदार का रंग कम गहरा और धुंधला-सा होता है।

इसी प्रकार विषुवत् रेखीय अफ्रीका के अधिक नमी वाले पश्चिमी इलाकों में सूखे पूर्वी इलाकों की अपेक्षा अधिक गहरे और चमकदार रंग के गुलदार मिलते हैं। पूर्वी अफ्रीका के गुलदार का केवल रंग ही हल्का नहीं होता बल्कि उसके कंधों से नीचे की ओर के धब्बे भी अपेक्षाकृत कम छोटे होते हैं। गुलदार की भारतीय किस्मों में यह पैटर्न भी लीडेकर तथा अन्य प्रकृति-विज्ञानियों की मान्यता के विपरीत बहुतायत से देखने को मिलता है। ईरानी गुलदार का रंग तो और भी हल्का होता है और उसके रोंएँ भी घने होते हैं। वह देखने में हिमालय पर्वत पर मिलने वाले हिम-तेंदुए जैसा होता है।

दूसरी ओर गहरे रंग के गुलदारों में रंग की गहराई बढ़ती हुई अपनी चरमता पर पहुँच जाती है और कालिमा तक पहुँच जाती है। काला गुलदार— किपलिंग द्वारा वर्णित बघेरा—आमतौर से मलाबार, सिक्किम और असम में मिलता है तथा विशेष रूप से मलय प्रायद्वीप में पाया जाता है। ये सभी क्षेत्र भारी वर्षा, उष्ण-कटिबन्धीय गर्मी तथा अपने सदाबहार घने जंगलों के लिए विख्यात हैं। नीली आँखों वाला काला गुलदार अपनी सामान्य प्रजाति का ही एक सदस्य है, हालांकि इसकी खाल बिलकुल काली होती है, लेकिन अपने धब्बे यह तब भी नहीं छोड़ता। ये धब्बे बहुत अस्पष्ट, लगभग अदृश्य से होते हैं, लेकिन खूब उजाले में इन्हें पहचाना जा सकता है। शरीर के हल्के रंग के निचले हिस्सों में ये अधिक स्पष्ट होते हैं। यह एक तथ्य है कि एक ही मादा की संतान में कोई बच्चा काला और कोई सामान्य रंग का हो सकता है। इस प्रकार इस सम्भावना के लिए कोई जगह नहीं रहती कि काले गुलदार की कोई पृथक् जाति या प्रजाति हो सकती है। सफेद या वर्णहीन गुलदार बहुत कम पाये जाते हैं। कहा जाता है इस तरह का

एक नमूना हजारीवाग से प्राप्त करके ब्रिटिश म्यूज़ियम में रखा गया है, लेकिन वह भी वर्णहीनता का वहुत क्षीण संकेत ही देता है। अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि इस प्रकार के अतिवादी उदाहरण बहुत कम नज़र आते हैं और ये किसी प्रकार के उत्परिवर्ती न होकर सामान्य रूपभेद ही हैं।

गुलदार ने युगों से अपने लिए जिस रंग-योजना का विकास किया है वह निरुद्देश्य नहीं है। इसकी चमकीली पीली खाल पर जो धब्बे होते हैं उनके कारण यह जंगल की पृष्ठभूमि में कभी तो वहुत आसानी से अपने आपको छिपा सकता है, और कभी आसानी से नज़र भी आ जाता है। जंगल में घने पेड़ों के नीचे पत्तों से छनकर आते हुए प्रकाश और छाया के धब्बों के वीच गुलदार आसानी से आँख से ओझल हो सकता है, लेकिन घास के वीच अपने इन्हीं धब्बों के कारण यह न केवल जंगली जानवरों को वल्कि मनुष्य को भी आसानी से नज़र आ जाता है और तब इसके लिए अपने को छिपाना मुश्किल हो जाता है। लगता है कि जंगल में धूप और पेड़ों की छाया से बनने वाले धब्बों के कारण ही गुलदार के धब्बों का विकास हुआ है। अन्य जानवरों की रंग-योजना में भी धब्बों का विकास पहले हुआ होगा। सिंह के बच्चों पर भी आरम्भ में कुछ धब्बे देखे जा सकते हैं, और शेर की धारियाँ तो स्पष्ट ही धब्बों के फैल कर लम्बा रूप ग्रहण कर लेने का उदाहरण हैं।

अपनी इस रंग-योजना के कारण गुलदार शिकारियों की आँखों से ओझल हो जाता हो या उन्हें आसानी से अज़र आ जाता हो, ऐसी वात नहीं है। लेकिन इतना ज़रूर है कि अपनी रंग-योजना के कारण यह शिकारियों को अक्सर धोखा दे जाता है। एक वार मैंने पीलीभीत के साल के जंगलों में खुली धूप में एक गुलदार देखा था, जिसके बारे में वहाँ का हर आदमी यह माने बैठा था कि वह तो जंगली सुअर है। एक वार मैंने शाम को अपने हाथी पर से एक शेर को गोली मारी, लेकिन सुवह देखने पर पता चला कि वह तो गुलदार था। ऐसे ही बरही के रेस्ट-हाउस में एक रात मुझे कम्पाउण्ड में एक प्रेत छाया-सी ओझल होती दिखायी दी थी। सवेरे जब पता चला कि मेरा कुत्ता गायव है, तो समझ में आया कि रात में वह कोई गुलदार ही आया था। अब इस विषय में मुझे इससे अधिक कुछ नहीं कहना है कि एक वार मैं एक गुलदार को निशाना साधकर गोली मारने को तैयार हो गया था जबकि वास्तव में वहाँ साल की सुखी भूरी पत्तियों के बीच कुछ टहनियाँ भर पड़ी थीं!

इससे इनकार करना कठिन है कि बिल्ली-प्रजाति के वड़े जानवरों में गुलदार

सबसे सुन्दर होता है। इसका चेहरा कुछ मासूम-सा होता है, कम से कम इसकी शक्ल में भयानक-जैसा कुछ नहीं होता। इसे देखकर प्यार करने और सिर पर हाथ फेरने की इच्छा होती है। मैंने देखा था कि मद्रास के चिड़ियाघर में एक गुलदार अपने पिंजरे में दूसरे जानवरों को आने देता था और लोगों को अपने सिर पर हाथ भी फेरने देता था।

गुलदार का छरहरा और बेहद लचकीला शरीर एकदम से आक्रमण करने में इसका बड़ा सहायक होता है। इसकी खोपड़ी की ऊपरी मेहराबदार सतह शेर की खोपड़ी से मिलती-जुलती होती है और निचला जबड़ा सिंह के जबड़े की तरह ही उभरा हुआ होता है।

गुलदार के जबड़े भोजन को चबाकर या पीस कर खाने के लिए नहीं बल्कि उसे कसकर पकड़ने के लिए बने हैं। इसके लिए चबाकर खाना ज़रूरी नहीं, क्योंकि इसकी पाचन-शक्ति इतनी अच्छी होती है कि यह किसी भी चीज़ को निगल कर उसे आसानी से पचा सकता है। इसका निचला जबड़ा ऊपर-नीचे ही हिल सकता है, दायें-बायें नहीं। इसीलिए शिकार पर इसकी पकड़ संड़सी की तरह बिलकुल पक्की होती है।

इसके दाँतों की व्यवस्था इस प्रजाति के अन्य जानवरों के समान ही होती है। ऊपर और नीचे के दाँतों की संख्या इस प्रकार होती है: ३/३, १/१, २-३/२, १/१=२८ या ३० दाँत। सामने के काटने वाले दाँत छोटे-छोटे और पतले होते हैं, तथा बीच से दोनों ओर को छोटे होते जाते हैं। सूआ-दाँत खूब लम्बे तथा कुछ मुड़े हुए होते हैं, और उनके सिरे बेहद नोकीले होते हैं, ताकि यह शिकार को कसकर पकड़ सके। दाढ़ें भी बड़ी-बड़ी और खूब विकसित होती हैं। ये माँस को चबाने के नहीं बल्कि काटने और टुकड़े करने के काम आती हैं।

गुलदार की जीभ की बनावट भी विशेष प्रकार की होती है—एक तरफ से बिलकुल मुलायम और चिकनी तथा दूसरी तरफ़ से बहुत खुरदुरी और उस्तरे की तरह तेज़। पूरी जीभ कड़े और शंकु के आकार के दानों से भरी होती है। जीभ की सहायता से गुलदार अपने शिकार के माँस के ऊपर से खाल और बाल छील कर अलग करता है।

गुलदार के पंजे भी जैसे साँचे में ढले होते हैं। उनके नीचे मोटी गद्दियाँ लगी होती हैं, ताकि जंगल में यह चुपचाप अपने शिकार का पीछा कर सके और दबे-पाँव उसके एकदम पास पहुँच सके। इसकी टाँगों पर नीचे पैर तक खूब बाल होते हैं, जिससे आवाज़ को कम करने में और भी मदद मिलती है। इसके अगले

पैरों में पाँच और पिछले पैरों में चार 'उँगलियाँ' होती हैं। अगले पैरों की पांचवी उँगली वास्तव में अँगूठे की तरह होती है, लेकिन प्रयोग में न आने के कारण बहुत पतली रह गयी है। इसके बड़े-बड़े नोकीले और मुड़े हुए नाखून इतने मज़बूत होते हैं कि शिकार को धर-दबोचते हैं और उसे फाड़कर चिथड़े-चिथड़े कर डालते हैं। ईश्वर ही उस आदमी की रक्षा कर सकता है जो दुर्भाग्य से किसी गुलदार के इन भयानक पंजों की गिरफ्त में फँस जाता है और जिसे अपने आप खुल पड़ने वाली छुरियों जैसे इन अठारह नाखूनों का सामना करना पड़ता है। जब नाखून काम में नहीं आते तो सावधानी के साथ गद्देदार पंजों में सिकोड़ कर रखे जाते हैं। इस प्रकार ऊबड़-खाबड़ या पथरीली जगहों में घूमने पर भी इसके नाखूनों की धार और नोक मुथरी नहीं हो पाती। कभी-कभी गुलदार किसी खास पेड़ को चुन लेता है और उसकी छाल पर अपने नाखून ऊपर-नीचे रगड़ कर तेज़ करता रहता है। अपने नाखूनों पर सान चढ़ाने के लिए गुलदार अक्सर उसी पेड़ के पास आता है। इसके अलावा यह जिस जगह मलत्याग करता है, वहाँ की ज़मीन को भी नाखून रगड़ कर कुरेदता है।

गुलदार बहुत पाँव दबाकर चलता है। जब यह अपनी मामूली रफ़्तार से चलता हुआ इधर-उधर घूमता है तो आमतौर से अपने अगले पैरों के चिन्हों पर ही पिछले पैर जमाकर आगे बढ़ता है। इसके पैर इतनी सफ़ाई से एक दूसरे पर बैठते हैं कि यह अपने पिछले पैरों के निशान की केवल एक कतार ही अपने पीछे छोड़ता है। लेकिन जब गुलदार सामान्य की अपेक्षा कुछ तेज़ रफ़्तार से चलता है तो इसके पिछले पैर ज़मीन पर अगले पैरों से भी कुछ आगे पड़ते है, और इस तरह चार पैरों के चिन्ह पीछे छूटते चलते हैं। अगले और पिछले पैरों के चिन्हों के बीच की दूरी को देखकर यह जाना जा सकता है कि गुलदार कितनी तेज़ रफ़्तार से दौड़ रहा था।

इस प्रकार मामूली रफ़्तार से चलते समय गुलदार के पैरों के सिर्फ दो चिन्ह ही ज़मीन पर उभरते हैं, और उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे यह चार पैरों वाला नहीं बल्कि दो पैरों वाला जानवर हो। इसीलिए हिमालय के हिममंडित क्षेत्रों में जिस रहस्यमय हिममानव के रहने की बात कही जाती है, हो सकता है वह बर्फ पर रहने वाला कोई ऐसा भालू हो जो गुलदार की तरह केवल अपने दो पैरों के निशान छोड़ता हो। और, सचाई तो यह है कि बर्फ पर रहने वाला भूरा भालू वास्तव में मनुष्य की तरह केवल अपने दो पैरों के ऐसे निशान ही छोड़ता है, जिनमें एड़ी का चिन्ह ग़ायब रहता है।

गुलदार की आँख की पुतली बिलकुल गोल होती है। इस तरह इसकी आँखें बिल्ली की आँखों से कुछ भिन्न होती हैं। गुलदार तेज़ रोशनी से बचने की कोशिश करता है। कार की हेडलाइट की तेज रोशनी में आँखें चौंधिया जाती हैं। टार्च की रोशनी में इसकी आँखों की चमक में एक प्रकार की लाली-सी नज़र आती है, जबकि हिरन या बारहसिंगे की आँखों में एक नीली चमक दिखायी देती है। इससे अँधेरे में गुलदार को पहचाना जा सकता है।

इतना होने पर भी गुलदार रोशनी को शेर की अपेक्षा अधिक सहन कर सकता है। शेर आमतौर से सूरज के बिलकुल छिप जाने के बाद ही बाहर निकलता है, लेकिन गुलदार इसके बहुत पहले ही शिकार की खोज में निकल पड़ता है। जब इतना अँधेरा हो जाय कि आप अपने हाथ की रेखायें साफ़-साफ़ न देख सकें, तो समझ लीजिये कि अब शेर के अपनी माँद से बाहर आने का समय हुआ है। लेकिन गुलदार के साथ इस तरह का कोई नियम लागू नहीं है। मैंने कई बार गुलदारों को दिन-दहाड़े घूमते देखा है, लेकिन शेरों को दिन में शायद ही कभी देखा हो।

३. गुलदार की ज्ञानेन्द्रियाँ

जंगल के निवासियों में एक कहावत मशहूर है कि अगर गुलदार की नाक भी उतनी ही तेज़ होती जितने तेज़ उसके कान होते हैं तो आज जंगल में सिर्फ गुल-दार ही नज़र आते।

जंगल की भाषा में इसका अर्थ है कि गुलदार की श्रवण-शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है और उसकी घ्राणशक्ति अत्यन्त क्षीण होती है। उसकी दृष्टि इन दोनों के बीच के स्तर की होती है। इसका यह मतलब नहीं कि गुलदार में सूंघने की शक्ति नहीं होती। वह अपने शिकार को घनी झाड़ियों में छिपा देने के बाद उसे खोजता हुआ फिर वहाँ पहुँच जाता है, और ऐसा वह अपनी घ्राणशक्ति के बल पर ही कर पाता है। जो शिकारी धूम्रपान की अपनी आदत पर काबू नहीं पा सकते वे मचान पर गुलदार का इन्तज़ार करते समय सिगरेट-बीड़ी वगैरह पीने के कारण इसे अक्सर अपनी उपस्थिति का दूर से ही पता दे देते हैं। मैंने अक्सर देखा है कि गुलदार शेर द्वारा मार कर छिपाये गये जानवरों के माँस की गंध बहुत दूर से ही सूंघकर वहाँ तक पहुँच जाते हैं।

गुलदार की नाक कुछ चिपटी होती है और शायद प्रकृति ने उसे उस काम के लिए बनाया भी नहीं है, जो काम कुत्ता, भेड़िया या सियार अपनी नाक से लेता है। ये सभी जानवर मुख्य रूप से सूंघकर ही अपने शिकार की खोज करते हैं। प्रकृति किसी जीव के जीवन में उसकी नाक को क्या महत्व देना चाहती है यह नाक की बनावट और चेहरे पर उसकी स्थिति से ही स्पष्ट हो जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि गुलदार की सभी ज्ञानेन्द्रियों में उसकी श्रवणेन्द्रिय सबसे ज़्यादा तेज़ होती है।

एक बार मुझे धोलखण्ड में एक बहुत ही दुष्ट गुलदार से निपटने का मौका मिला। उसने कुछ दिन पहले एक गाय का बछड़ा उठा लिया था और बाद में उस गाय को भी मार डाला था। गाय के शव को देखने पर दाँत के गहरे निशान साफ़ नज़र आते थे तथा उसके पिछले पैरों पर भी चोट के निशान थे। स्पष्ट था कि ये किसी एक नहीं दो गुलदारों का काम था। जब मैं गाय के शव को देख रहा था तो कुछ देर बाद मुझे पास ही घनी घास के एक टुकड़े में दो गुलदारों के गुर्रा-

गुर्राकर लड़ने की आवाज़ सुनायी दी। उनमें किस बात पर झगड़ा हो रहा था, इसका पता लगाना कठिन था।

थोड़ी ही देर बाद मुझे ऊँची घासों के बीच कुछ काले धब्बे-से सरकते दिखायी दिये। देखते-देखते एक गुलदार मेरी दाहिनी ओर घास के बाहर निकल आया। वह अब भी मुझ से काफ़ी दूर था। जब मैंने अपनी बन्दूक की नली उस गुलदार की ओर घुमाई तो उन टहनियों में से एक टहनी कुछ खरखरा उठी जिससे मेरा मचान छिपाया गया था। आप विश्वास करें या न करें लेकिन यह सच है कि सिर्फ़ इतनी-सी आवाज ने गुलदार को चौकन्ना कर दिया और वह वहीं ठहर गया। उसने नजर उठाकर ऊपर देखा, बहुत गहरे संदेह में एक-दो बार अपनी पूंछ हिलायी और फिर एकटक मुझे घूरने लगा। मैं पत्थर की तरह शांत खड़ा रहा, लेकिन मेरा यह प्रयास व्यर्थ था। मेरी बन्दूक पर उस छोटी-सी टहनी की खर-खराहट लगभग २५ गज़ दूर खड़े उस गुलदार के लिए जैसे नगाड़े की आवाज़ सिद्ध हुई थी। यह गुलदार की असाधारण श्रवण-शक्ति का एक प्रमाण है। इतना तय था कि उसने तब तक मुझे देखा नहीं था। लगा जैसे उसे अपनी आँखों से अधिक अपने कानों का भरोसा था। वह चुपचाप वहाँ से चलता बना। वह लौटकर अपने साथी के पास गया, जिसके साथ वह अभी कुछ देर पहले गरमागरम बहस में उलझा था। हलांकि मुझे ज़रा भी आशा न थी, फिर भी मैं प्रतीक्षा में मचान पर कुछ देर तक बैठा रहा। लेकिन इससे कोई लाभ नहीं हुआ। उन दोनों में से कोई भी लौटकर अपने शिकार के पास नहीं आया।

मुझे एक अवसर का स्मरण है, जब एक शेर लगातार दो रात तक अपने शिकार के पास लौटकर आने से कतराता रहा। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि जो शिकारी उस शिकार के पास मचान पर बैठकर शेर का इंतजार करता था वह खाली समय में एक पत्रिका पढ़ता रहा था, और शेर ने दूर से ही उसके पन्ने उलटने की आवाज़ सुन ली थी। तीसरी रात को जब मचान पर कोई भी नहीं बैठा था तब शेर अपने शिकार की लाश के पास लौटा और उसे खा गया। यह बात अलग है कि तब तक उस लाश में कीड़े पड़ गये थे और उसमें से बुरी तरह से बदबू फैल रही थी।

गुलदार की श्रवण-शक्ति शेर की तुलना में कई गुना अधिक होती है। एक बार की बात है, एक गुलदार ने लगभग २० गज दूर से मेरे कैमरे के खटके की आवाज़ सुन ली थी। वह वहीं रुक गया और मेरी ओर नाक सिकोड़कर छींकने के बाद चुपचाप वहाँ से चलता बना।

गुलदार की नीली-हरी आँखें जैसे टेलीफ़ोटो लेंसों से लैस होती हैं और किसी निश्चित वस्तु को दूर से ही साफ़-साफ़ देखने में समर्थ होती हैं। शाकाहारी जानवरों की दृष्टि-परिधि अधिक व्यापक होती है जिसके कारण वे आस-पास के दृश्य को भी अच्छी तरह से देख सकते हैं।

मुझे अपने सेवाकाल के आरंभ में ही गुलदार की दूर-दृष्टि का एक प्रमाण मिल गया था। जंगल में चल रहे एक काम के मुआइने पर जाते समय एक दिन सवेरे मुझे किसी गुलदार के मारे हुए शिकार को देखने का मौका मिला। शाम को मैं वहीं मचान बाँध कर बैठ गया। मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी और थोड़ी देर बाद ही एक गुलदार वहाँ आ पहुँचा। कुछ देर तक वह इधर-उधर देखता रहा और अपनी पूँछ हिलाता रहा। मैं इस उम्मीद में दम साधे बैठा रहा कि थोड़ी देर में वह पास आ जायगा। लेकिन अचानक जैसे नफ़रत में भरकर उसने ज़ोर से मेरी ओर छींका और फिर वहाँ से गायब हो गया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरा मचान उस सावधानी से नहीं छिपाया गया था जितना कि छिपाया जाना चाहिए था, लेकिन गुलदार ने मुझे लगभग सौ गज़ दूर से ही देख लिया, यह अपने आप में मामूली बात नहीं थी।

अगर अंक देना हो तो गुलदार की ज्ञानेन्द्रियों के सम्बन्ध में मेरा निर्णय कुछ इस प्रकार होगा—

श्रवण-शक्ति	—	५
दृष्टि	—	३
घ्राण-शक्ति	—	२

गुलदार की 'छींक' से मुझे उसके द्वारा उत्पन्न हो जाने वाली कुछ अन्य भिन्न-भिन्न प्रकार की ध्वनियों का स्मरण हो जाता है। उन्हें पहचानना कठिन नहीं होता है। लेकिन इनका वर्णन करना कठिन है।

गुलदार की सीमित शब्द-संख्या में सबसे अधिक जानी-पहचानी और अर्थपूर्ण वह हुंकार है जिसे 'आरा ध्वनि' के नाम से पहचाना जाता है। यह लकड़ी के किसी लट्ठे पर आरे के ऊपर-नीचे चलने की आवाज़ के समान ही एक गहरी और लययुक्त खाँसी जैसी होती है। गुलदार क्यों ऐसी आवाज़ करता है इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। हमले की तैयारी के समय वह जितनी सावधानी से अपने आपको छिपाने की कोशिश करता है उसे देखते हुए ऐसा सम्भव नहीं प्रतीत होता कि वह यह आवाज शिकार को अपनी स्थिति का आभास कराने के लिए करता है। असल में गुलदार की यह आवाज़ इतनी तेज़ होती है कि रात में

जंगल के सन्नाटे में मीलों दूर तक सुनायी देती है, और यह उसके लिए संभवतः अपने अन्य साथियों से सम्पर्क स्थापित करने का एक साधन है। मेरा ख़्याल है कि ऐसी आवाज़ आमतौर से मादा गुलदार द्वारा अपने साथी को बुलाने के लिए की जाती है। यह आमतौर से गर्मी के शुरू में और फिर शरद ऋतु में सुनायी देती है। शेष महीनों में यह शायद ही कभी सुनने में आती है।

मैं स्वीकार करता हूँ कि जब पहली बार मैंने गुलदार की यह विचित्र हुंकार सुनी तो मुझे यह उतनी डरावनी भले ही न लगी हो, लेकिन इसको सुनकर मैं थोड़ी देर के लिए सुन्न ज़रूर रह गया था। वास्तव में, इस हुँकार का प्रभाव मनुष्यों के स्नायुओं पर पड़ता है और उसे कुछ समय के लिए स्तब्ध कर देता है।

एक शाम को मैं लार्ड बेल्पार के साथ टहलता हुआ वापस बेरीबाड़ा के अपने कैम्प में लौट रहा था। मेरा हाथी पीछे-पीछे आ रहा था। जैसे ही कुछ अंधेरा-सा होने लगा कि एक गुलदार ने पास ही कहीं से इसी प्रकार की विचित्र आवाज़ में हुंकार भरना शुरू किया।

"यह क्या बला है?" लार्ड ने विस्मय और भय से काँपते हुए पूछा। और जब मैंने उनसे कहा कि यह कुछ नहीं किसी गुलदार की आवाज़ है तो उन्होंने आवेश में कहा, "वाह! खूब! मैं तो यहाँ जंगल में अँधेरे में बिना किसी बन्दूक के पैदल चल रहा हूँ और तुम कहते हो कि यह कुछ नहीं सिर्फ एक गुलदार की आवाज़ है!" मैंने किसी तरह समझा-बुझा कर उनका भय दूर किया और फिर हम लोग हाथी पर सवार हो गये। इस प्रकार गुलदार की पहुँच से दूर आराम से हाथी पर बैठे हुए हम सुरक्षित अपने कैम्प में लौट आये।

इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार हुंकारता हुआ गुलदार किसी मनुष्य पर ध्यान देने की मनःस्थिति में शायद ही कभी होता है। वास्तव में, वह उस समय अपने किसी साथी की तलाश में होता है।

जंगल के सन्नाटे में सुनायी देने वाली डरावनी आवाज़ों के उल्लेख से एक अन्य घटना याद आती है। मेरे एक पुराने मित्र रेजिनल्ड रेनोल्ड्स[1] लंदन से आये थे और मेरे साथ डुडवा में मेरे कैम्प में ठहरे हुए थे। वे तत्कालीन भारतीय स्थिति का स्वयं अध्ययन करने आये थे। उन दिनों भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध गाँधीजी का आन्दोलन अपनी पूरी तेज़ी पर था। मैंने रेजिनल्ड से अनुरोध किया

---

१. रेजिनल्ड रेनोल्ड्स बाद में भारत के वाइसराय के नाम गाँधीजी का अल्टीमेटम लेकर गये थे।

था कि वे बड़े नगरों की भीड़-भाड़ से छुट्टी लेकर कुछ दिनों के लिए मेरे साथ जंगल में ठहरें।

अपने आगमन की पहली ही शाम को जब रेजिनल्ड स्नान कर रहे थे तो उन्हें पास ही शेर की दहाड़ सुनायी दी। मैं उस समय अपनी मेज़ पर बैठा कुछ ज़रूरी कागज़ निपटा रहा था। वे जंगल की इस डरावनी आवाज़ से इतने अधिक भयभीत हुए कि नहाना छोड़कर एक हाथ में साबुन और दूसरे हाथ में स्पंज लिये हुए सीधे मेरे आफिस में आ खड़े हुए। दरवाज़े की चौखट पर लगभग नंगे बदन खड़े उस अंग्रेज़ ने काँपते हुए मुझसे पूछा, "खुदा रहम करे! भला यह कैसी आवाज़ है?" जब मैंने कहा कि कुछ नहीं, यह कोई शेर दहाड़ रहा है, तो वे भयभीत होकर कुछ क्षणों तक मेरा मुँह देखते रह गये। अन्त में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जब तक वे स्नान करें तब तक आसपास गारद का पहरा बैठा दिया जाय। मैंने तुरन्त इसका इन्तज़ाम कर दिया। ज़ाहिर है जो आदमी सीधा लंदन से यहाँ जंगल में आ गया हो उसके लिए ऐसी परिस्थिति में कम से कम इतनी माँग करना तो स्वाभाविक ही था।

गुलदार की 'छींक' असल में एक ऐसी आवाज़ है जो वह अपना एकान्त भंग करने वाले किसी अनजान व्यक्ति या जीव के दुस्साहस पर अपनी घृणा प्रकट करने के लिए पैदा करता है। यह इस बात का निश्चित संकेत होता है कि गुलदार खिन्न होकर वहाँ से लौट जायगा।

मैंने नर और मादा गुलदारों को कभी दबी और कभी तेज़ आवाज़ में बोलते सुना है। हम स्त्री-पुरुषों की तरह ही उनका यह गरमागरम विवाद अंतहीन होता है लेकिन यह वैसा निरर्थक और बेतुका शायद नहीं होता।

गुलदार एक दूसरी तरह की आवाज़ और करता है जो कुछ-कुछ खखारने या फुफकारने के समान होती है। यह आवाज़ आमतौर से माता उस समय करती है जब वह बच्चों को कुछ सिखाना चाहती है। वह धीमी और भारी आवाज़ में गुर्राकर अपने बच्चों को दौड़कर वापस अपने पीछे आने के लिए कहना चाहती है। इसमें शरारती बच्चों को डाँटने और धमकाने के उद्देश्य से क्रोध और खीज का स्वर मिला होता है।

लेकिन शेर और सिंह की तरह गुलदार गले में घुरघुराहट की आवाज़ नहीं करता, बल्कि यह कहना ठीक होगा कि इस प्रकार की आवाज़ पैदा ही नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि इसकी कंटिका की अस्थियों का ढाँचा एक लचकीले बंधन से बँधा होता है, जिसकी वजह से यह पूरे गले के ज़ोर से केवल हुँकार

ही कर सकता है। बिल्ली इस प्रकार की घुरघुराने की आवाज़ कर सकती है क्योंकि उसके गले में इस प्रकार का बंधन नहीं होता है। गुलदार दहाड़ने में पूरी ताकत से सक्षम होते हुए भी आज तक कभी भी दहाड़ता हुआ नहीं सुना गया।

कुल मिलाकर गुलदार शेर आदि की अपेक्षा कम बोलता है और अनावश्यक ध्वनियाँ करके अपनी उपस्थिति का पता तो शायद ही कभी देता है। शेर आम-तौर से शाम को घूमने निकलने के पहिले एक ज़ोरदार दहाड़ ज़रूर मारता है। लेकिन गुलदार ऐसा कभी नहीं करता। मैंने अक्सर घायल शेरों को करुण स्वर में कराहते हुए सुना है, लेकिन गुलदार चुप रह कर ही दुःख भोगने का आदी होता है। इसके अलावा, घायल गुलदार छिपने की जगह में अपनी उपस्थिति का संकेत तब तक कभी भी नहीं देता है जब तक उसे किसी पर बिजली की तेज़ी से अचानक झपट कर हमला करने की जरूरत महसूस नहीं होती।

४. सामान्य व्यवहार

गुलदार अपनी असाधारण चालाकी और धूर्तता के लिए, चुपचाप दबे पाँव शिकार के पास पहुँचने और फिर अचानक उस पर हमला कर देने के लिए तथा घायल होने पर बहुत क्रूरता से बदला लेने के अपने स्वभाव के लिए बदनाम है। लेकिन फिर भी मेरा विचार है कि सज्जनता में यह अपने बड़े भाई-बन्धुओं से किसी भी प्रकार कम नहीं है। यह सही है कि जब गुलदार घायल हो जाता है तो यह सिंह की तरह अंधी वीरता का प्रदर्शन नहीं करता और न शेर की तरह उलट-कर उसी वक्त जवाब देने की कोशिश करता है। लेकिन सिंह और शेर की अपेक्षा कुछ कमजोर होने के कारण यह अपनी इस कमी को असाधारण चालाकी और अमंगलकारी चुप्पी से संतुलित करने का प्रयास करता है।

ऐसे इलाकों में जहाँ गुलदार बहुतायत से मिलते हैं लगभग तीस साल के अपने सेवाकाल में मुझे एक भी उदाहरण ऐसा नहीं मिला जब किसी गुलदार ने बिना स्पष्ट उत्तेजना के किसी पर हमला किया हो। घायल हो जाने पर भी बदला लेने की बजाय गुलदार आमतौर से घने जंगलों में कहीं एकान्त में बैठकर अपने घाव चाटना ज़्यादा पसंद करता है। यह तभी हमला करता है जब या तो इसका पीछा किया जाय या इसके आराम में खलल डाला जाय। गुलदार आक्रमण का अवसर अपनी सुविधा से चुनता है, लेकिन यह तथ्य इसके छल का प्रमाण न होकर इसकी सतर्कता और रणनीति का ही प्रमाण माना जा सकता है। चारों ओर से घिरे जाने पर अपना रास्ता निकालने के लिए भी गुलदार हमला करता है। मादा गुलदार अपने बच्चों की हिफ़ाज़त के लिए बिना उत्तेजना के भी हमला कर बैठती है। लेकिन इसके पीछे भी कोई न कोई कारण तो होता ही है।

मनुष्य अपने तीर-धनुष, जाल-फंदे, बंदूक-रायफ़ल, चमकती हुई तेज़ बत्तियों और छिपे हुए मचानों से लैस होकर गुलदार जैसे उस जीव की अच्छाई-बुराई का निर्णय करने का अधिकारी नहीं है, जिसे जीवित रहने के लिए हत्या करनी पड़ती है, न कि जो हत्या करने के लिए जीवित रहता है। गुलदार अकेला ही घूमता फिरता है। वह अपने आप में मस्त रहता है और मनुष्य से आमतौर से एक सम्मानपूर्ण दूरी बनाये रखता है क्योंकि उसे दो पैरों पर चलने वाला यह जीव कुछ विचित्र-सा नज़र आता है।

34464
28-4-20

गुलदार के आवास-क्षेत्र भिन्न हो सकते हैं लेकिन इसकी आदतें इसके बच्चों की तरह ही निश्चित और स्थाई होती हैं। फुर्ती और अप्रत्याशितता की दृष्टि से यह अपने दूसरे बड़े भाई-बन्धुओं से मीलों आगे है। यह पेड़ों और मकान की छतों पर बिल्ली की तरह आसानी के चढ़ सकता है, तथा बहुत थोड़ी-सी जगह में भी सिकुड़कर इस तरह से छिप सकता है कि आखिर तक इस पर किसी की नज़र न पड़े। इसके अलावा, भूख से पीड़ित होकर यह दिन के उजाले में भी शिकार कर सकता है। मौके पर बिलकुल चुप और निःशब्द बने रहने में यह अपना सानी नहीं रखता। वर्षों के लगातार अभ्यास से इसने इस अद्वितीय विशेषता में सिद्धि प्राप्त कर ली है।

जिस प्रकार शेर अपने एक निश्चित मार्ग पर ही घूमता है, उस तरह गुलदार का कोई निश्चित मार्ग नहीं होता। इसी प्रकार किसी खास तरह के इलाके के प्रति भी इसका कोई आग्रह नहीं होता। यह काफ़ी बड़े इलाके में घूमना पसंद करता है और बहुत घने जंगलों से लेकर घास के खुले मैदानों तक में—मलाया के जंगलों और दलदल के लेकर अफ्रीका के खुले मैदानों में—यह सब कहीं बड़े आराम से घूमता है। शेर और सिंह मनुष्यों की बस्ती में आना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं, लेकिन गुलदार इस तरह का कोई बंधन नहीं मानता। और इस प्रकार की अतिरिक्त गतिविधियों में अपनी कोई हेठी नहीं समझता। यह गाँव के कुत्तों, बकरियों, लंगूरों और बन्दरों में विशेष रुचि लेता है। यह काफ़ी लम्बे-चौड़े इलाकों में निर्द्वन्द्व विचरता है और सिंह, शेर या दूसरे गुलदारों की उपस्थिति से भी इसे कोई खास परेशानी नहीं होती।

गुलदार आमतौर से अकेले ही शिकार करता है। मिलन-ऋतु की बहुत छोटी अवधि को छोड़कर यह जोड़े में शायद ही कभी मिलता है। कभी-कभी किसी मादा गुलदार के साथ उसका बड़ा बच्चा नज़र आ जाता है। गुलदार बहुत स्वतंत्र प्रकृति का होता है और शंकालु भी बहुत अधिक होता है। ज़रा-सा संदेह हो जाने पर यह अपने मारे हुए शिकार को छोड़कर अलग हो जाता और कई दिनों तक भूखा रह जाता है।

ऐसा लगता है कि गुलदार को किसी दुर्घटना या दंड आदि की स्मृति बहुत कम रह पाती है। एक बार ग़लती से मेरा पैर अपने पालतू गुलदार पर पड़ गया था। उसने गुर्राकर मुझे नोंच लिया लेकिन फिर जल्दी ही इस घटना को भूल गया। वह न तो उदास ही रहा और न उसने इसके लिए मेरे प्रति कोई वैरभाव दिखाया। शेर और सिंह को जब सधाया जाता है तो उन्हें दंड

और पुरस्कार से काबू में करने की कोशिश की जाती है लेकिन गुलदार पर यह तरीका लागू नहीं होता। वह पुरस्कार को तो कुछ हद तक याद रखता है लेकिन दंड को बिलकुल भूल जाता है। यही कारण है कि गुलदार शायद ही कभी सरकस में खेल दिखाते नज़र आते हैं।

गुलदार विरोधाभासों का एक आश्चर्यजनक पुलिंदा होता है। अप्रत्याशित कार्य करने की इसमें जैसे एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह ऐसे समय पर और ऐसी जगहों पर प्रकट हो जाता है जब और जहाँ इसके प्रकट होने की आशा ही नहीं की जाती। पिछले आम चुनावों में (फरवरी १९६७) एक गुलदार त्रिवेंद्रम से १३ मील पर स्थित वेम्बयम के मतदान केन्द्र में अचानक जैसे वोट डालने के लिए पहुँच गया था। जो जानवर छोटी-से-छोटी बात के लिए इतना सावधान रहता हो, अपने रहन-सहन और आदतों में इतना एकान्तप्रिय हो और जो हमेशा छिप कर चलने का आदी हो वह अचानक कभी चौराहे पर बैठा दिखायी दे जाय तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। कभी-कभी यह स्वयं ही अपने नियम भंग करता है और अपने जीवन को खतरे में डालकर अजीब तरह की हरकतें कर बैठता है। एक ओर तो अगर कभी इसे जंगल में कोई अकेली बकरी मिमियाती हुई मिल जाती है तो यह ऐसा सोचकर कि इसमें जरूर कोई धोखा है, उससे दूर ही रहने की कोशिश करता है। दूसरी ओर कभी अचानक आपके खेमे में घुसकर आपके पालतू कुत्ते को उठाकर ले जाने का दुस्साहस कर बैठता है। यह आमतौर से रात के अंधेरे में ही शिकार पर निकलता है। लेकिन कभी-कभी दिन के भरपूर उजाले में भी बाहर निकल जाने में इसे जरा भी संकोच नहीं होता।

गुलदार की जिज्ञासा की सीमा नहीं होती। एक बार मैं एक जंगली सड़क पर अपनी कार में जा रहा था। अचानक सामने से आते हुए एक गुलदार की नज़र मेरी कार पर पड़ी और वह रास्ते से अलग हट गया। जब मैं उस जगह पर पहुँचा जहाँ से गुलदार ने सड़क छोड़ी थी तो मैंने अपनी कार रोक ली और इँजिन को चालू रहने दिया। थोड़ी देर में गुलदार वहाँ वापस लौट आया और गौर से तब तक मेरी कार को देखता रहा जब तक मैं आगे नहीं बढ़ गया।

खुली जगहों में निकलने से गुलदार आमतौर पर घबराता है। सड़क पर भी आम तौर से किनारे के पेड़ों की छाया में छिपकर चलता है। आप इसे कभी भी सड़क के बीच से चलते हुए नहीं पायेंगे। यह आमतौर से जँगल के किनारे से ही गुज़रता है जहाँ से यह दूसरों को न दिखायी दे और खुद औरों को आसानी से देख सके।

एक बार नागला में मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक घायल गुलदार भागते समय उस खुले हुए इलाके में निकलने की बजाय जहाँ एक बन्दूक उसका इन्तज़ार कर रही थी, धधकती हुई आग में से छलाँग लगाकर भाग निकला। किसी को इसकी उम्मीद नहीं थी कि वह आग में से निकल जायेगा और ऐसे रास्ते को चुन लेगा जहाँ उसके कष्ट का हमेशा के लिए अन्त करने के लिए कोई बन्दूकधारी न बैठा हो।

गुलदार का एक गुण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, हालांकि वह थोड़ी-बहुत मात्रा में इस परिवार के सभी जीवों में पाया जाता है। समस्त पशु-जगत् में शायद ही कोई ऐसा जीव होगा जो साफ-सुथरेपन पर इतना ज़्यादा ज़ोर देता हो जितना गुलदार देता है। जब यह शाम को बाहर निकलता है तो इतना साफ-सुथरा होता है कि ऐसा लगता है जैसे कोई भद्रजन नहा-धोकर और साफ-सुथरे कपड़े पहनकर किसी पार्टी में जाने के लिए निकला हो।

भोजन के बाद गुलदार घंटों अपने को चाट-पोंछकर साफ़ करता रहता है और झूठन का एक रेशा भी अपने शरीर पर रहने नहीं देता। शायद इसी के फलस्वरूप इसके शरीर से किसी प्रकार की गंध नहीं आती। यह किसी प्रकार की शारीरिक गंध का होना गवारा भी नहीं कर सकता, क्योंकि गंध से जानवरों को इसकी उपस्थिति का पता चल सकता है। इस प्रकार इसका साफ-सुथरापन शिकार में भी सहायक होता है और यह अचानक जानवरों के सामने जा खड़ा होता है। गुलदार के इतना साफ-सुथरा रहने के कारण ही इसके द्वारा की गयी चोट का घाव बहुत कम सड़ता है।

अपने खासे बड़े आकार के बावजूद गुलदार अपने छरहरे और चमकीले शरीर को मोड़-तोड़कर बहुत छोटी-सी जगह में सिकुड़कर बैठ सकता है। एक शाम को मैं बेरीबाड़ा रेस्ट-हाउस के सामने अपनी पत्नी के साथ खड़ा था। हम लोग अपने हाथी का इन्तज़ार कर रहे थे ताकि जंगल का एक चक्कर लगा आयें। जैसे ही हाथी आया हम यह देखकर भौंचक्के रह गये कि एक गुलदार उछलकर घास में से बाहर आया और जंगल में भाग गया। घास बहुत कम ऊँची थी और उसमें इतने बड़े जानवर का इस तरह छिपकर बैठे रहना कोई आसान बात नहीं थी।

एक दूसरे मौके पर मैं हाथी पर जंगल के कुछ इलाकों का मुआइना करने जा रहा था। मेरे हाथी को देखकर एक गुलदार उछलकर घास के एक छोटे से टुकड़े में जा छिपा जिसका आकार मुश्किल से एक टेनिस कोर्ट का आधा ही होगा।

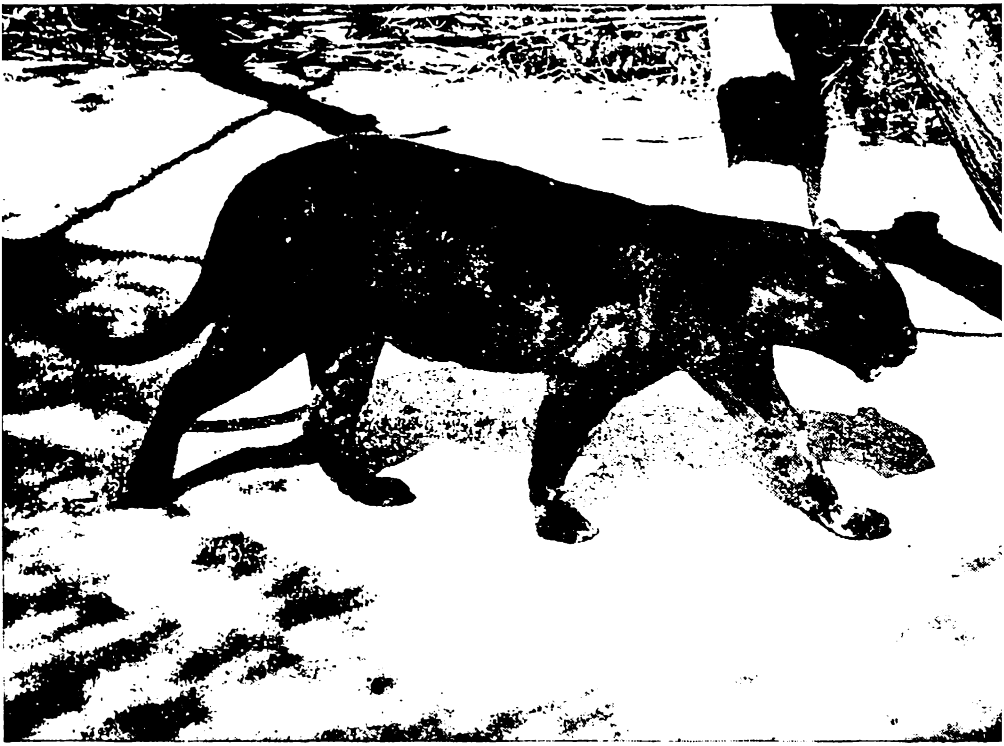

चित्र १. ध्यान से देखने पर काले गुलदार के शरीर पर धब्बे (बूटे) स्पष्ट दिखायी देते हैं।

चित्र २. कुलू घाटी के हिममंडित पर्वत-शिखर—हिम तेंदुए का निवासस्थान।

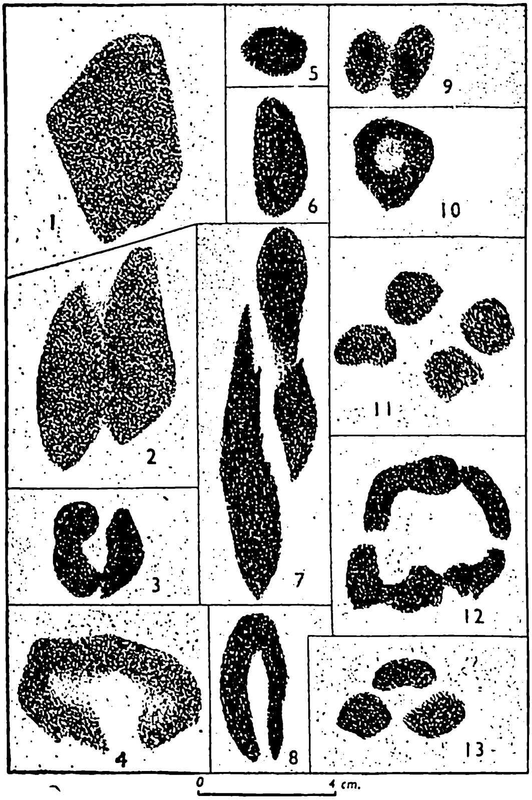

चित्र ३. गुलदार के धब्बे (बूटे)

१ और २, पेट पर ; ३, पीठ पर ; ४, गर्दन के पहलू में ; ५, सिर के ऊपर ; ६, गर्दन के पिछले हिस्से पर ; ७, पीठ पर की ठीक बीच की रेखा पर ; ८, पूंछ की जड़ पर ; ९ और १०, कंधों के पास रीढ़ की हड्डी से ठीक नीचे की ओर ; ११, पसलियों पर ; १२, पेट के पहलू पर ; १३, कंधे पर।

चित्र ४. गुलदार हमेशा साफ-सुथरा और राजसी शान से रहता है

हमने गुलदार को वहाँ खूब खोजा लेकिन वह हाथ नहीं आया । एक जगह मेरे हाथी का पैर घास में ही छिपे किसी छोटे गड्ढे में जा गिरा । हाथी कुछ लड़खड़ाया और अचानक गुलदार उछलकर घास के बाहर आ गया और बिजली की तेज़ी से वहाँ से भाग निकला ।

लेकिन गुलदार थोड़ी-सी जगह में अपने आपको कितना सिकोड़ सकता है, इसका एक बढ़िया उदाहरण मुझे बैरठ के जंगलों (जयपुर) में देखने को मिला । मैं वहाँ कुछ गुलदार पकड़ने के उद्देश्य से गया था । इन गुलदारों को अण्डमान द्वीपसमूह में भेजा जाना था, जहाँ मुख्य भूमि से भेजे गये चीतलों ने असाधारण रूप से अपनी संख्या में वृद्धि कर ली थी ।

गुलदार को पकड़ने का जाल आमतौर से छोटे झाड़-झँखाड़ वाले जंगल में चट्टानों के बीच बनाय जाता है । यह दो पृथक कोठरियों के रूप में होता है, जिनके बीच एक मजबूत दीवार में एक खिड़की बनायी जाती है । बीच में निकली हुई चट्टानों का लाभ उठाकर और भी दीवारें बना दी जाती हैं । इस प्रकार यह एक छप्परदार झोंपड़ी की शक्ल ले लेता है । पीछे वाली कोठरी में एक बकरी बाँध दी जाती है । बकरी का मिमियाना सुनकर गुलदार आगे वाली कोठरी में चला जाता है । उसके प्रवेश करते ही दरवाजा खटके से अपने आप बन्द हो जाता है । अब गुलदार चूहेदानी में फँसे चूहे की तरह छटपटाने लगता है । बकरी में उसकी कोई रुचि नहीं रह जाती और उधर बकरी भी मारे डर के मिमियाना बन्द कर देती है ।

एक दिन सवेरे जब मेरे मेजबान और राजस्थान के वन विभाग के चीफ़ कंज़रवेटर श्री सी० एम० चौधरी को पता चला कि एक गुलदार फँसा है तो वे मुझे साथ ले आये । गुलदार जाल से निकलने के लिए बराबर छटपटा रहा था । अपनी स्वतन्त्रता के छिन जाने से वह बहुत बेचैन था और कोठरी में बराबर चक्कर लगा रहा था । जब हम लोगों ने झाँककर अंदर देखा तो वह गुस्से से दाँत निकालकर हमारी ओर गुर्राने लगा ।

फारेस्टर ने, जिसने यह जाल तैयार किया था, हमें चेतावनी दी कि अगर इसे तुरन्त यहाँ से नहीं हटा लिया गया तो इसके भाग निकलने की संभावना है । हम जल्दी से रेस्ट-हाउस की ओर भागे ताकि गुलदार को वहाँ से हटाने के लिए पिंजरे का इंतजाम किया जा सके । लेकिन जब तक हम वापस लौटकर आयें, काफी देर हो चुकी थी । इसी बीच गुलदार ने शायद काफी सोच-विचार किया था और फिर कोई चाल सोचकर अपने आपको आज़ाद करा लिया था ।

हमारे लिए अब अपनी असफलता के कारणों पर विचार करने के अलावा और कुछ शेष नहीं रह गया था। जाँच-पड़ताल के बाद पता चला कि जो दरवाज़ा खटके से बंद हुआ था उसका लकड़ी का एक डंडा गुलदार ने चबा डाला था और इस तरह जो छेद बना उसमें से अपने को सिकोड़ कर वह बाहर निकल गया था। इस छेद की चौड़ाई मुश्किल से आठ इंच रही होगी।

इससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक सफाई हाल में ही भोला नाम के एक काले गुलदार ने दिल्ली के चिड़ियाघर में दिखायी थी। २३ जुलाई, १९६६ की रात को भोला अस्पताल के अपने पिंजरे से निकल भागा। उसने पिंजरे की एक लोहे की छड़ को निकाल लिया था और दूसरी को कुछ टेढ़ा कर लिया था। इस प्रकार उसने अपने लिए जो रास्ता बनाया वह मुश्किल से एक फाउन्टेनपेन की लम्बाई के बराबर (लगभग ६ इंच) चौड़ा था। इतने सँकरे रास्ते में भरे-पूरे शरीर वाला वह गुलदार किस तरह निकल सका, यह एक बड़े आश्चर्य की बात थी। भोला की खोपड़ी की चौड़ाई ६ इंच तथा कंधों की चौड़ाई १२ इंच थी। यह इस बात का एक सबूत है कि गुलदार ज़रूरत पड़ने पर अपने आपको कितना सिकोड़ सकता है।

कहा जाता है कि ऐसे किसी भी छेद में से गुलदार आसानी से निकल सकता है जिसमें से उसकी मूँछें पार हो जाएँ। गुलदार की मूँछें आदमी की तरह उमेठने के लिए नहीं होतीं। वे असल में उसके लिए स्पर्श के ऐसे तंतु हैं, जिनकी सहायता से वह किसी सकरी जगह में फँसने पर अपने लिए रास्ता खोजता है।

बिल्ली की ही तरह गुलदार भी पानी से बहुत घबराता है। हिमालय की तराई में शिवालिक के जंगलों में गर्मी के दिनों में शेर आमतौर से पोखरों में नहाते हुए दिखायी दे जाते हैं। लेकिन गुलदार कभी भी पानी में नहीं दिखायी देता। गुलदार ज़रा-सी बूँदा-बाँदी से ही घबरा जाता है और प्रायः अपने मारे शिकार के पास वापस लौटकर नहीं आता। ऐसी हालत में नये शिकार की खोज में निकलने की तो उससे आशा ही नहीं की जा सकती।

एक बार सहारनपुर के पास जंगलों में मैंने एक गुलदार को एक छोटे से पोखर की बगल से बच कर निकलते हुए देखा था। उस समय जंगल में आग लगी हुई थी। उसने जंगल की आग की तेज़ गर्मी की परवाह नहीं की और पानी में कूदकर पार होने की कोशिश करने की बजाय टेढ़े रास्ते से घूम कर जाना पसन्द किया। एक दूसरे मौके पर मैंने गुलदार को हल्की बारिश से भीगी हुई ज़मीन को पार करने की बजाय एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर छलाँग लगाकर भागते हुए देखा था।

अगर संयोग से कभी कोई गुलदार भीग जाता है तो उसे वह जैसे कोई बड़ा संकट समझता है। वह तुरन्त सब काम छोड़कर अपने शरीर को चाटकर सुखाने में लग जाता है।

ऐसा लगता है कि गुलदार को शेर की तुलना में बहुत कम पानी की ज़रूरत होती है। शेर तो पेटभर भोजन मिलने के बाद तुरन्त प्यास बुझाने के लिए सबसे पास के किसी जलाशय की ओर भागता है। लेकिन गुलदार को ऐसी कोई ज़रूरत महसूस नहीं होती। इसी प्रकार घायल होने पर शेर जल्दी से जल्दी किसी जलाशय के पास पहुँच जाना चाहता है और उसके आस-पास ही बना रहता है। मैंने घायल शेरों की तलाश के काम में उनकी इस प्रवृत्ति को सबसे अधिक सहायक पाया है। लेकिन गुलदार में इस तरह की कोई प्रवृत्ति नहीं होती और चोट लगने पर शरीर से काफ़ी खून निकल जाने के बाद भी उसे बहुत कम प्यास लगती है।

उष्ण-कटिबंध के क्षेत्रों में गर्मी की तेज़ धूप के कारण पहाड़ी नदी-नाले एक-एक करके बहुत जल्दी सूख जाते हैं और पानी छोटे-छोटे छप्पड़ों और पोखरों में ही मिल पाता है। उन आधे सूखे जलाशयों के पास सुबह-शाम बहुत से जंगली जानवर जमा होते हैं। भीड़-भाड़ से बचने के लिए सभी जानवर वहाँ पहुँचने का अपना समय निश्चित कर लेते हैं। इस प्रकार शिवालिक के जंगलों में ऐसी जगहों पर सबसे पहले प्यासे काकड़ पहुँचते हैं। उनके बाद मोर और जंगली मुर्गी आदि की बारी आती है। सूअर इसके बाद जमा होते हैं। शाम को झुटपुटा आरम्भ होने के समय चीतल अपने दलबल के साथ वहाँ पहुँचते हैं। साँभर उनके लगभग दो घंटे बाद वहाँ पहुँचते हैं।

कोई भी प्रतिष्ठित शिकारी ऐसे जानवर पर गोली नहीं चलाता जो पानी पी रहा हो या नमक की चट्टानों पर नमक चाट रहा हो। यह शिकारियों के शिष्टा-चार के खिलाफ़ है। बात कुछ विचित्र-सी मालूम होती है लेकिन यह सही है कि गुलदार भी आमतौर से इन्हीं नियमों का पालन करता है। इन जगहों पर आसानी से शिकार मिल सकता है लेकिन गुलदार शिकार के लिए ऐसी जगहों पर नहीं जाता। मुझे इन जलाशयों के पास गुलदार के पैरों के निशान कभी भी नहीं मिले। हो सकता है कि यह रात में देर से वहाँ अपनी प्यास बुझाने पहुँचता हो और इसके पैरों के निशान तड़के सवेरे वहाँ पहुँचने वाले दूसरे जानवरों के पैरों से मिट जाते हों।

कैप्टन ज़रफ़अली ने एक बार सहारनपुर के जंगल में एक पोखर के पास तड़के सवेरे ही एक गुलदार का शिकार किया था। इसी प्रकार कर्नल स्टीवेंसन-हैमिल्टन

ने दक्षिणी सूडान में (५) एक पोखर के पास एक गुलदार को घायल किया था।

स्टीवेंसन-हैमिल्टन (६) ने दक्षिणी अफ्रीका में गुलदारों को सावी नदी को तैरकर पार करते देखा या। उस समय ये इम्पाला नाम के जानवरों को गर्दन से उठाकर नदी के वीच में स्थित छोटे-छोटे द्वीपों की ओर ले जा रहे थे। जाड़े के महीनों में वीच धारा में स्थित द्वीप गुलदारों को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं। खासतौर से मादा गुलदार को यहाँ अपने वच्चों को पालने के लिए आवश्यक एकान्त उपलब्ध होता है। सावी नदी में इन गुलदारों को देखकर यह पता चलता है कि आवश्यक होने पर ये अपने आसपास के पर्यावरण के साथ तालमेल वैठा सकते हैं।

शेर की तरह गुलदार भी सफेद रंग से वहुत घवराता है। जंगल की हरियाली के वीच विल्कुल सफेद रंग की कोई चीज मनुष्य की आँखों की तरह पशुओं की आँखों को भी दुखदायी लगती है। नेपाल में जहाँ शेर को अनेक हाथियों से चारों ओर से घेरकर फिर उसका शिकार किया जाता है, वहाँ यह कहावत मशहूर है कि शेर का रास्ता रोकने के लिए कोई एक सफेद चादर पाँच हाथियों के वरावर होती है।

मैंने भी शेर को घेरने के लिए हाथियों के अभाव में रंग की चीज़ों का प्रयोग किया है और काफ़ी सफलता प्राप्त की है। किसी झाड़ी पर सफेद कागज लटका दिया जाय तो वह शेर को उधर से भागने से रोकने के लिए 'रास्ता वंद है' के मार्ग-चिह्न का काम देता है।

लेकिन गुलदार को घेर कर निशाने की ओर खदेड़ना वहुत कठिन होता है। शेर तो घिर जाने पर इधर-उधर भागता है लेकिन गुलदार छिपने की जगह में दुवककर वैठा रहता है और वाहर निकलता ही नहीं।

घायल शेरों और गुलदारों का पीछा करते समय सफेद टोप और एकदम उजले सफेद कपड़े शिकारियों के लिए रक्षा-कवच का काम करते हैं। सफेद रंग को देखते ही ये घायल जानवर भौंचक्के रह जाते हैं और इनकी वुद्धि काम नहीं करती। घायल गुलदारों का पीछा करते समय खाकी रंग की पोशाक नहीं पहननी चाहिए।

यह एक खासी दिलचस्प वात है कि जव चीतल, साँभर और काकड़ किसी गुलदार या शेर को देखते हैं तो अपने दूसरे साथियों को खतरे की सूचना देने के लिए न सिर्फ चिल्लाने लगते हैं वल्कि खतरे की झंडी के रूप में अपनी पूँछ उठा-

कर उसका सफ़ेद हिस्सा दिखाने लगते हैं। अफ्रीका के वाटरवक हिरनों के पिछले हिस्से में तो काफी बड़ा सफेद दाग होता है जो शिकारी-जानवरों को खतरे की बत्ती की तरह वहाँ से दूर ही रहने का संकेत देता है।

शेर की अपेक्षा गुलदार को अधिक आसानी से पाला जा सकता है। इस दृष्टि से पिंजरे में बंद गुलदार के व्यवहार का अध्ययन बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। इससे पता लगाया जा सकता है कि वह किन चीज़ों से भड़कता है और किसी व्यवहार की उस पर क्या प्रतिक्रिया होती है।

जब मैं ऑक्सफोर्ड से लौटकर आया और गोरखपुर के जंगलों में मेरी पहली नियुक्ति हुई तो मुझे गुलदार के बच्चे के एक जोड़े को पालने का मौका मिला। ये बच्चे स्थानीय चरवाहों ने मुझे भेंट में दिये थे। एक बार जब वे लोग जंगल में पशुओं को चरा रहे थे तो अचानक उन्हें एक गूलर के कोटर में ये सुन्दर बच्चे पड़े हुए मिल गये।

गुलदार के ये बच्चे एक-दो सप्ताह से ज़्यादा के नहीं थे। उन्हें दूध पिलाना और पालना अपने-आपमें एक खासा सिरदर्द था। बोतल से दूध पिलाते समय हर बार जब दूध खत्म हो जाता था तो वे गुर्राने लगते थे और निपल को छोड़ते ही नहीं थे। इनमें जो नर बच्चा था वह तो बहुत ज़बर्दस्त विरोध प्रकट करता था। वे अपने नन्हें-नन्हें दाँतों से रोज़ इतने निपल चबा डालते थे कि निपलों का खर्च उनके दूध के खर्च से ज़्यादा बैठने लगा। बड़ी मुश्किल से उनकी बोतल छुड़वायी गयी और धीरे-धीरे उन्होंने बिल्ली की तरह तश्तरी से चाट कर दूध पीना सीखा।

थोड़े दिनों बाद मादा बच्चे को बहुत तेज़ जुकाम हो गया। उसे दूध में एस्पिरीन मिलाकर देने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नहीं था। कुछ दिन की बीमारी के बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

लेकिन नर बच्चा, जिसका नाम मैंने शंकर रखा था, धीरे-धीरे बड़ा और ताकतवर होता गया। कुछ ही दिनों में वह आकार में एक बिल्ले से भी बड़ा हो गया। अपने साथी की मृत्यु के बाद शंकर अकेला पड़ गया था। इसलिए अब उसने हम लोगों और अपने आस-पास की अन्य चीजों की ओर विशेष ध्यान देना शुरू किया। वह चलने-फिरने वाली किसी भी चीज के पीछे दौड़ने लगता था। वह मुझे और मेरे अर्दली को, जो उसका खाना लाता था, पहचानता था और खाने के समय का भी उसे पता रहता था। वह खाना खिलाते समय हमारे हाथ तो नहीं काटता था लेकिन अधीरता में नोंच-खसोट ज़रूर करता था। वह हमेशा एकांत और अंधेरे कोने ही पसन्द करता था। और अक्सर मेरी मेज़ के नीचे रद्दी

की टोकरी पर चढ़कर बैठा रहता था। जब मैं बाहर जाता था तो शंकर मेरे साथ चलने के लिए कोई ज़िद नहीं करता था। लेकिन जब मैं घर लौटता था तो वह उछल-उछलकर मुझ पर चढ़ने की कोशिश करता था और कसकर मेरी पतलून पकड़ लेता था। मेरे पैरों पर उसकी खरोंच के निशान तो आसानी से ठीक हो जाते थे लेकिन पतलून की मरम्मत उतनी आसानी से नहीं हो पाती थी। शंकर को मेरे बिस्तर में घुसना बहुत पसन्द था। बड़ी मुश्किल से वह वहाँ से उतरता था। उसे अपने कान के पीछे सहलाना भी बहुत पसन्द था, लेकिन वह कभी भी घुरघुराता नहीं था।

मेरे कर्मचारियों द्वारा जमा किये गये घरेलू और रसोई के सामान में शंकर को कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन बहुत डाँट-फटकार के बावजूद मुर्गियों में उसकी रुचि बराबर बढ़ती जा रही थी। एक बार उसने एक चूजे को दबोच लिया। इससे भी अधिक आपत्तिजनक यह बात थी कि अब उसने अक्सर रात में घर से बाहर रहना शुरू कर दिया था, और अपनी इन हरकतों पर उसे कोई पछतावा भी नहीं होता था। अब वह छोटे कुत्तों, बंदरों और गिलहरियों को भी खदेड़ने लगा था।

अब शंकर चिंताजनक तेज़ी से बड़ा होता जा रहा था। लेकिन तभी अचानक वह बीमार पड़ गया और एक कुशल पशु-चिकित्सक के इलाज के बावजूद चल बसा। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि शंकर की मृत्यु एक माने में मेरे लिए सौभाग्य ही सिद्ध हुई, क्योंकि अब वह दिनों-दिन मेरे लिए मुसीबत का कारण बनता जा रहा था।

भारतीय सेना (मेडिकल कोर) के कर्नल किशन कपूर को भी एक गुलदार के बच्चे को पालने का ऐसा ही अनुभव हुआ था। उन्होंने उसका नाम राजा रखा था। यह बच्चा उन्हें बिन्नीगुड़ी (उत्तरी बंगाल) के एक चाय-बागान मालिक की पत्नी ने उपहार में दिया था। जब राजा अपने नये अभिभावक के पास आया था तो आँख भी मुश्किल से खोल पाता था। लेकिन कुछ ही दिनों में बड़ा होकर वह बेहद शरारती हो गया। दूध की बजाय जब उसे खाने के लिए माँस मिलने लगा तो उसने इसे खूब पसन्द किया। लेकिन माँस के साथ रोटी का मेल उसे जरा भी पसन्द नहीं था और रोटी देने पर वह गुर्राकर अलग हट जाता था। खाने के समय वह किसी की दखलंदाजी पसन्द नहीं करता था। वास्तव में, अपनी स्वतन्त्रता में उसे किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप सहन नहीं होता था। उसे हमेशा एकान्त की तलाश रहती थी और वह चाहता था कि कोई भी उसके पास न

आये। राजा जैसे हर व्यक्ति से नफ़रत करता था। यहाँ तक कि भरपेट खाना मिलने पर ही वह कभी-कभी कर्नल साहब को अपने को कुछ थपथपाने की इजाजत देता था। लेकिन उस समय भी वह बिल्ली की तरह संतोष से घुरघुराता नहीं था। वह जैसे-जैसे बड़ा होता जाता था इतना बेकाबू होता जाता था कि उसे बाँधकर रखना पड़ता था। हर तरह की रोकथाम के बावजूद एक दिन उसने एक बकरी का गला दबोच लिया। असल में वह उसके गले में ही लटक गया। बकरी कहीं से घूमती-घामती कर्नल साहब के खेमे में आ पहुँची थी। जब कर्नल साहब का तबादला बिन्नीगुड़ी से हुआ तो उन्होंने राजा को एक दूसरे मालिक के सुपुर्द कर दिया और इस तरह उससे छुट्टी पाकर राहत की साँस ली।

ऐसे ही एक गुलदार की कहानी मुझे अपने पुराने साथी हकीमुद्दीन से मालूम हुई। इस गुलदार ने एक तरह से तालबेहाट के थाने पर, जो झाँसी से २७ मील दक्षिण में पड़ता है, कब्जा कर रखा था। एक दिन सुबह हकीमुद्दीन ने जंगल की ओर जाते समय थाने के सामने अपनी कार रोकी और हार्न बजाकर अपने आगमन की सूचना दी। बजाय इसके कि थाने में से कोई पुलिस अधिकारी उनके स्वागत के लिए बाहर निकलता, एक गुलदार अचानक बाहर आकर उनकी कार में चढ़ गया। कार में घुसकर उसने इधर-उधर संदेह की नज़रों से कुछ ढूंढ़ना शुरू किया, जैसे वह तलाशी लेना चाहता हो कि कार में कोई गैर-कानूनी माल तो नहीं है!

थाने में से घबराया हुआ एक पुलिस अधिकारी गुलदार को डाँटता हुआ बाहर भागा कि इतने में झाँसी से आनेवाली ११ बजे की बस उधर आ निकली और उसने भी अपना हार्न बजाना शुरू किया। गुलदार तुरन्त हकीमुद्दीन की कार में से नीचे कूद गया और दौड़कर बस में जा बैठा। बस के ड्राइवर ने गुलदार को उसके दैनिक राशन के रूप में कुछ गोश्त खाने के लिए दिया, जिसे वह रोज़ सवेरे झाँसी से उसके लिए लाया करता था। गोश्त का पैकेट मजबूती से अपने मुँह में दबाकर गुलदार बस के नीचे उतर आया और चुपचाप टहलता हुआ थाने में लौट गया। जाते समय उसने हकीमुद्दीन से इसके लिए माफी माँगना भी जरूरी नहीं समझा कि उसने उनको कार के मालिक की जगह बस का ड्राइवर मान लिया था!

बाद में उस पुलिस अधिकारी ने मुझे पूरा किस्सा बताया कि किस तरह उसे यह गुलदार प्राप्त हुआ था।

जैसा कि आमतौर से होता है, कुछ चरवाहों को पास के एक जंगल में गुल-

दार के दो बच्चे चट्टानों के बीच दुबके पड़े मिले थे। वे उन्हें थाने में ले आये। इनमें से एक उसी रात को वहाँ से भाग निकला और अपनी माँ के पास पहुँच गया। दूसरा, जो मादा बच्चा था, अपने इस नये घर में ही टिका रहा। थाने में सभी लोग उसे खिलाते और पालते रहे। उसके साथी के रूप में एक कुत्ते का पिल्ला भी पाला गया जो हमेशा उसके साथ खेलता रहता था। गुलदार और कुत्ते की इस अनोखी जोड़ी को लोग बहुत प्यार करते थे। थाने का हर आदमी उनकी देख-भाल करता था। दोनों के आकार में इतना अधिक अंतर था कि जब वे साथ-साथ उछल-कूद करते थे तो ऐसा लगता था कि जैसे कोई बिल्ली चूहे के साथ खेल रही हो।

पुलिस अधिकारी इस जोड़े को अच्छी तरह से खिलाने-पिलाने का हर संभव प्रयास करता था, लेकिन फिर भी वे दोनों पास के जंगल में निकल भागते थे। दोनों साथ-साथ घूमते रहते थे और शाम को अक्सर बंदरों का पीछा करते थे। कुत्ता बंदरों को खदेड़कर किसी पेड़ पर चढ़ने के लिए मजबूर कर देता था और फिर मादा गुलदार पेड़ पर चढ़कर उनका पीछा करती थी और मौका पाकर किसी को धर दबोचती थी। इस तरह बंदर का शिकार करके दोनों छककर दावत उड़ाते थे और फिर चुपचाप बहुत सीधे और मासूम बनकर थाने में लौट आते थे।

यही नहीं, कभी-कभी मादा गुलदार रात को अकेली वहाँ से गायब हो जाती थी। जंगल का आकर्षण उसके लिए अब बढ़ता जा रहा था। वह अपने को रोक नहीं पाती थी। एक दिन सुबह जब वह थाने में वापस लौटी तो उसके 'बॉय फ्रेंड' के रूप में एक नर गुलदार भी उसके साथ था। थाने के लोगों ने जब नये गुलदार को देखा तो उनके होश उड़ गये। उन्होंने इस स्थिति की कभी कल्पना नहीं की थी। उनकी घबराहट का अंदाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है। वे सब भाग कर अपने-अपने कमरों में जा छिपे और तब तक बाहर नहीं निकले जब तक वह नया गुलदार वहाँ से चला नहीं गया।

मादा गुलदार और कुत्ते की यह विचित्र जोड़ी आसपास के इलाके में दूर तक मशहूर हो गयी थी। सब लोग उनकी तारीफ़ करते थे और उनसे प्यार करते थे। लेकिन यह स्थिति अधिक दिनों तक जारी न रह सकी। इन दोनों ने बड़े होकर जब बंदरों की बजाय आसपास के पालतू जानवरों पर हाथ साफ़ करना शुरू किया तो लोगों में एक तहलका मच गया। कभी ये किसी की बकरी उठा लाते थे तो कभी मवेशियों के झुंड से पिछड़ जाने वाले बछड़े पर हमला कर देते थे।

जिस जोड़ी को गाँव वाले कभी बड़े स्नेह से याद किया करते थे, अब वह उनके लिए नित नयी मुसीबत का कारण बनती जा रही थी। हर तरफ से उनके खिलाफ़ आवाज़ उठने लगी।

धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ती गयी। इन दोनों की शरारतों के कारण उस पुलिस अधिकारी को आये दिन नयी मुसीबत का सामना करना पड़ता था। उसने अपनी एक चिट्ठी में मुझे लिखा, "अंत में मुझे हुक्म मिला है कि मैं इस प्यारी जोड़ी को नष्ट कर दूं।" आखिरकार बहुत भारी मन से उसे इस हुक्म की तामील करनी पड़ी।

प्रसिद्ध शिकारी जॉन बर्गर (७) को, जिन्होंने अफ्रीका में ४० साल का समय बिताया था, यह यश प्राप्त है कि उन्होंने पाँच गुलदारों को पाल-पोसकर बड़ा किया था। उनमें से एक तो सात साल तक दिन-रात के साथी की तरह उनके पास रहा। उसका साथ तभी छूटा जब एक बार गलती से किसी शिकारी ने उसे गोली मार दी। जॉन बर्गर को गुलदारों को पालने का लगभग बीस साल का अनुभव था। उनके इस अनुभव से गुलदार के तौर-तरीके, स्वभाव और आदतों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिली है। उन्हें गुलदार पालने का इतना अभ्यास हो गया था कि इस काम में उन्हें कोई खास परेशानी नहीं होती थी। उन सबको वे अपने हाथ से खाना खिलाते थे। ये जानवर भी उनका बड़ा खयाल रखते थे, उनकी आज्ञा का पालन करते थे और स्वामी-भक्त कुत्तों की तरह उनकी पहरेदारी करते थे। उनमें से 'स्पॉट्स' नाम के एक गुलदार ने एक बार गुस्से में आकर अपने दो साल के साथी बबून को मार डाला था। एक बार इसी स्पॉट्स ने एक ऐसे अपराधी को पकड़वाने में मदद दी थी, जो महीनों से पुलिस को चकमा दे रहा था। एक दिन सुबह स्पॉट्स अपने मालिक के साथ जा रहा था। रास्ते में अचानक वह एक ऐसे गुलदार से भिड़ गया जिसे उसके मालिक के एक मित्र ने घायल कर दिया था। अंत में उसने घायल गुलदार को मार डाला और इस तरह अपने मालिक की जान बचायी।

५. प्राकृतिक संतुलन में गुलदार की भूमिका

भारत के वन-विभाग के इंस्पेक्टर जनरल और तीसरे दशक के प्रारंभिक वर्षों में मेरे पूर्वाधिकारी सर पीटर क्लटरबक ने जब अंडमान द्वीपसमूह के कुछ द्वीपों में पहली बार चीतल का प्रवेश कराया तो उन्होंने यह नहीं सोचा था कि वे इस के लिए जीव-जगत में व्याप्त प्राकृतिक स्वनियंत्रण की कोई व्यवस्था किए बिना एक विदेशी प्रजाति को वहाँ बसाकर प्रकृति के नियम का उल्लंघन कर रहे हैं। परिणाम वही हुआ जिसकी आशंका थी— देखते-देखते वहाँ चीतल की संख्या उसी तरह कई गुना बढ़ चली जिस तरह आस्ट्रेलिया में खरगोश की संख्या बढ़ी थी। चीतल के बड़े-बड़े झुंड तैयार हो गये और उन्होंने वहाँ की वनस्पति का विध्वंस शुरू कर दिया। यह स्थिति वास्तव में बड़ी चिंताजनक थी।

जब १९५० में मैं इन द्वीपों के दौरे पर पहुँचा तो मैंने देखा कि चीतल ने अपने इस नये निवास-स्थान में पिछली लगभग एक चौथाई सदी के दौरान खूब प्रगति की थी। ये जानवर एक तरह से इन द्वीपों पर छा गये थे। स्थिति इस हद तक बेकाबू हो चुकी थी कि चाहे कितनी भी बड़ी संख्या में चीतलों को मारा जाता फिर भी इस समस्या का कोई प्रभावकारी इलाज संभव नहीं था। अंत में मजबूर होकर मैंने इनमें से एक द्वीप में दो गुलदार छुड़वा दिये, जिन्हें जहाज से वहाँ तक पहुँचाया गया था। ये गुलदार चीतलों की बढ़ती हुई जनसंख्या को नियंत्रित करने में सहायक सिद्ध हुए।

गुलदार तथा अन्य मांसाहारी जीव जंगल की जनसंख्या के प्राकृतिक संतुलन में जो भूमिका अदा करते हैं, उसका बहुत बड़ा महत्व है। ये हिंस्र-जीव अपनी तथा उन जीवों की जनसंख्या के बीच, जिनका यह शिकार करते हैं, एक प्रकार का प्राकृतिक संतुलन बनाये रखते हैं। जीवन-रक्षा के क्रूर संघर्ष में इन शिकारी जानवरों और इनके द्वारा शिकार किये जाने वाले जीवों ने युगों से आक्रमण और आत्मरक्षा के अपने-अपने साधनों को इतना अधिक विकसित कर लिया है कि दोनों एक दूसरे को समान स्तर पर मात दे सकते हैं। इस प्रकार प्रकृति ने गुलदार को बिना आवाज़ किये चलने और चोरी से कहीं भी जा पहुँचने की जो असाधारण क्षमता प्रदान की है, वह केवल इसीलिए कि यह अपने विरोधी जीवों को उनके चौकन्नेपन और उनकी तेज़ रफ़्तार के बावजूद मात दे सके। जिसे शिकारी

लोग अपनी बन्दूक की गोली से भी बड़ी मुश्किल से मार पाते हैं, उसे गुलदार बड़ी आसानी से सिर्फ़ अपने हाथों से पकड़ सकता है।

जीव-जगत में शिकारी और शिकार के बीच लगातार चलने वाले संघर्ष में जो कमज़ोर पड़ता है, उसका खात्मा होता चलता है। जो सबसे अधिक सक्षम है केवल वही विजयी होता है और जीवित रहता है तथा अपनी संतति को बढ़ा सकता है। यदि हिरन और बारहसिंगे, सूअर और साही, खरगोश और कुतरने वाले जीव अपने परंपरागत शत्रुओं से अपनी रक्षा के लिए प्रेरित न हों और आत्मरक्षा के लिए प्रयास न करें तो कुछ दिनों बाद यों ही उनकी अवनति हो जायगी और वह नष्ट हो जायेंगे। ठीक उसी तरह अगर शिकारी जीवों को हमेशा चुस्त, चालाक और चौकन्ना बने रहने की प्रेरणा न मिले तो वे धीरे-धीरे कम-ज़ोर होकर नष्ट हो जायेंगे।

अगर मारीशस और न्यूज़ीलैंड में बिल्ली प्रजाति के जीव होते तो मारीशस में डोडा पक्षी का इस प्रकार समूल नाश न हुआ होता और न्यूज़ीलैंड में कीवी पक्षी उड़ना सीख लेता।

गुलदार पर्यावरण के साथ अपना तालमेल बैठाने का पूरा प्रयास करता है और इसीलिए इस बात की विशेष चिन्ता नहीं करता कि उसे खाने के लिए क्या मिलता है और क्या नहीं। भोजन के बारे में इस प्रकार का आग्रह उसके लिए संभव नहीं है। यह नहीं भूलना चाहिए कि जंगल में माँस बहुत कम उपलब्ध होता है। इसलिए प्रकृति माँस की बर्बादी बर्दाश्त नहीं कर सकती। यही कारण है कि गुलदार को ताज़ा या बासी किसी भी प्रकार का मांस स्वीकार करना पड़ता है। मैंने गुलदारों को (और शेरों को भी) सड़े हुए और कीड़े पड़े हुए माँस को चाट-कर साफ करते देखा है। मृत पशुओं के मांस से भी इन्हें कोई परहेज़ नहीं होता। यही नहीं, ये अपने भाई-बन्धुओं का मांस भी खा लेते हैं। मैंने अपने मारे हुए शेरों के माँस का चारा डालकर दूसरे शेरों को फँसाने में कई बार सफलता प्राप्त की है।

गुलदार खाने के लिए लगभग सभी प्रकार के जानवरों को मार सकता है। असल में कोई भी चलती-फिरती चीज़ हो—गदहा या बंदर, सूअर या साही, बैल या लोमड़ी किसी को भी यह मार सकता है। और जब गुलदार जोड़े में शिकार के लिए निकलते हैं (ईश्वर की कृपा से ऐसा बहुत कम होता है) तो यह किसी भी जानवर से भिड़ सकते हैं। कोई भी इनके मुकाबले में ठहर नहीं सकता। अकेला होने पर गुलदार अपने से बड़े जानवरों से आमतौर से बचने की कोशिश

करता हैं और कभी भी उनका सामना नहीं करता। असल में, शिकार के समय गुलदार इसकी चिंता नहीं करता कि उसे किस जानवर से लड़ना है, लेकिन यह इतना जरूर देख लेता है कि आकार की दृष्टि से वह जानवर इसकी जोड़ का है या नहीं। इस प्रकार जहाँ तक होता है यह चीतल, काकड़ आदि विभिन्न जातियों के हिरनों और इम्पाला आदि जानवरों तथा उन सभी जानवरों के बच्चों को जो आकार-प्रकार में इसके सामान होते हैं, अपना लक्ष्य बनाता है। लोगोगोटे के सेंडरसन ने एक बार एक गुलदार को जिराफ़ के एक बच्चे को बारह फुट ऊँचे पेड़ की डालियों पर खींचते हुए देखा था। गाय, भैंस, ऊँट तथा अन्य सभी प्रकार के खुरवाले जानवरों के बच्चों को गुलदार शिकार के योग्य मानता है।

भूख से परेशान होकर गुलदार किसी भी जानवर पर हमला कर सकता है। चकराता के आसपास गुलदार माल ढोने वाले खच्चरों पर हमला कर देते हैं, मध्यभारत में नीलगाय इनके हमले का शिकार बनती हैं तथा अफ्रीका में कुडू, ज़ेब्रा और बड़े-बड़े हिरन तक को यह आसानी से मार डालता है।

गुलदार को कुत्ते खासतौर से पसंद हैं। जंगलात विभाग के बहुत से अधिकारियों को गुलदार के कारण अपने कुत्तों से हाथ धोना पड़ता है। कुत्तों को तो गुलदार मालिकों के बिस्तर के नीचे से इस तरह उठाकर ले जाता है कि ज़रा-सा खटका भी नहीं होता। ऐसा लगता है, जैसे शिकार चुप रहकर इस षड्यंत्र में शिकारी का साथ देता है। गुलदार के शिकार में छोटे-मोटे जानवर, बबून और दूसरे हर तरह के बंदर तथा तीतर आदि भी सम्मिलित हैं। मैंने गुलदारों को मेढक, कौआ, गिलहरी और नेवले तक का पीछा करते और उन्हें मारकर खाते हुए देखा है। गुलदार असावधानी में साही पर हमला कर देता है और कभी-कभी उसके काँटों से बुरी तरह घायल हो जाता है।

गुलदार शेर या ऐसे ही किसी बड़े जीव द्वारा मारे गये जानवरों को भी बिना किसी संकोच के चुरा लाता है। दूसरी ओर ज़रा-सा संदेह होते ही यह अपने शिकार को छोड़कर अलग हट जाता है और फिर कभी उसकी ओर रुख नहीं करता।

फिर भी यह अपनी असाधारण चालाकी और चौकन्नेपन के बावजूद महीने में तीन या चार बार से अधिक बड़ा शिकार नहीं कर पाता है। एक बार में किसी जानवर को पूरा खा लेना तो संभव नहीं है, इसलिए यह उसके शरीर के बाकी बचे हुए अंश को बड़ी सावधानी से इस तरह छिपाकर रखता है कि सियार, लकड़बग्घे, गिद्ध तथा जंगल के अन्य जीवों की नज़र उस पर न पड़ सके। अगर इस काम के लिए आसपास कोई अच्छी घनी झाड़ी न मिले तो यह अपने शिकार

को पेड़ों पर काफ़ी ऊँचाई तक खींच ले जाता है, हालांकि इस तरह के काम में बहुत ज़्यादा ताकत की ज़रूरत होती है। एक बार मैंने देखा था कि आंशिक रूप से खाये गये एक चीतल की लाश कोई गुलदार ज़मीन से लगभग पन्द्रह फुट ऊँचे झिंगन के पेड़ पर खींच ले गया था। अफ्रीका के खुले मैदानों में, जहाँ छिपाने की किसी अच्छी जगह का मिलना कठिन होता है, वृक्षों पर गुलदार द्वारा अपने शिकार को छिपाने के उदाहरण भारत के जंगलों की अपेक्षा अधिक मिलते हैं।

जब कोई गुलदार अपने मारे हुए जानवर को वसीट कर किसी सुरक्षित स्थान पर छिपाने की कोशिश नहीं करता है तो यह इस बात का निश्चित संकेत होता है कि शिकार के समय किसी ने उसे छेड़ने की कोशिश की थी। इस प्रकार के शिकार को वह आमतौर से छोड़ देता है, और फिर शायद ही कभी लौटकर उसके पास जाता है।

आमतौर से लोग ऐसा सोचते हैं कि गुलदार को देखते ही हिरन, बारहसिंगे तथा ऐसे ही दूसरे जानवर जान बचाने के लिए वहाँ से भाग खड़े होते होंगे। लेकिन ऐसी बात नहीं है। वे सब अपनी जगह पर ठहर जाते हैं और खूब ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगते हैं—और तब गुलदार के लिए ऐसे मौके पर चुपचाप वहाँ से खिसक जाने के अलावा और कोई चारा नहीं रह जाता है। मैंने चीतल के एक छोटे से बच्चे को जंगल में एक खुली जगह पर खड़े होकर लगातार अपने पैर पटककर और चिल्लाकर शेर को दूर भगाने की कोशिश करते देखा है। वह अपनी छोटी-सी पूँछ के सफेद हिस्से को दिखाते हुए तब तक बराबर चिल्लाता ही रहा जब तक कि शेर वहाँ से चला नहीं गया। कोई शेर जिसमें थोड़ी-सी भी समझ बाकी होगी, कभी भी इस तरह शोर मचाने वाले किसी मृगशावक को पकड़ने की कोशिश नहीं करेगा, ठीक उसी तरह जिस तरह कि आप भी अपने बरामदे में शोर मचाने वाले किसी कौए को पकड़ने की कभी कोशिश नहीं करेंगे।

गुलदार आमतौर से छिपकर चलता है और हमेशा जंगल के घने किनारे से सटकर ही रहता है, लेकिन वे जानवर जिनका यह शिकार करता है ठीक इसका उल्टा व्यवहार करते हैं। वे हमेशा चरने के लिए लम्बे-चौड़े और खुले मैदानों में ही इकट्ठे होते हैं। गुलदार खुली जगह से हमेशा दूर रहने की कोशिश करता है, लेकिन उसके शिकार के जानवर जानबूझ कर हमेशा खुली जगहों में ही बने रहने की कोशिश करते हैं।

जब शिकार के विभिन्न प्रकार के जानवरों को गुलदार के आसपास ही कहीं

छिपे होने का सन्देह हो जाता है या जब वह उसकी नज़र में आ जाता है तो वे ऐसी चीख-पुकार मचाते हैं कि उसका वर्णन करना कठिन है। चीतल पतली आवाज़ में चीखने लगता है, काकड़ जोर-जोर से भौंकने जैसी आवाज़ करने लगता है और साँभर हल्ला मचाकर आसमान सिर पर उठा लेता है। पेड़ पर बैठा मोर, ज़मीन पर दाना चुगने वाली जंगली मुर्गी और शाखाओं पर छलाँग लगाने वाला वन्दर—सब मिलकर इस शोर-शराबे को ऐसा भीषण रूप दे देते हैं कि गुलदार देखता ही रह जाता है। ये सब अपनी-अपनी बोली में जैसे गुलदार की भर्त्सना करने लगते हैं। देखते-देखते शोर इतना तेज़ हो जाता है कि गुलदार के कान फटने लगते हैं, और अन्त में उसे मन मार कर वहाँ से चला जाना पड़ता है।

इस प्रकार गुलदार का पाला ऐसे जानवरों से पड़ता है जो आत्मरक्षा के लिए सदा सजग और चौकन्ने रहते हैं, और जो न स्वयं किसी प्रकार की रियायत करते हैं और न इससे किसी रियायत की उम्मीद रखते हैं। असल में यह धूर्तता और चौकन्नेपन की, सुनियोजित आक्रमण और कुशल आत्मरक्षा की लड़ाई है।

आम लोगों की धारणा के विपरीत गुलदार किसी भी अपने शिकार पर छलाँग लगाकर हमला नहीं करता। वह पहले तो अपने शिकार के अधिक से अधिक पास पहुँचने की कोशिश करता है, और फिर एकदम बिजली की तेज़ी के साथ आगे बढ़ कर उस पर चढ़ बैठता है।

पूरनपुर में एक दिन शाम को मेरे शिकारी ने एक गुलदार को पकड़ने के लिए, जिसके वहीं गाँव के पास ही कहीं छिपे होने का अन्देशा था, एक छोटा-सा कुत्ता सड़क के किनारे के एक पेड़ से बाँध दिया। मैं उसके सामने की ओर एक घनी झाड़ी में अपनी गाड़ी को अच्छी तरह छिपाकर उसी में बैठा इन्तज़ार करने लगा। जैसे ही शिकारी वहाँ से हटा, कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। शायद उसे इस प्रकार जंगल में अकेले छोड़े जाने पर आपत्ति थी। कुछ मिनट बाद ही मैंने एक गुलदार को पास के ही एक खुले हुए हिस्से में से बिजली की तरह कुत्ते की ओर झपटते देखा। उसने इतना कम मौका दिया था कि मेरे लिए दौड़ते हुए जानवर पर ही गोली दागने के सिवा और कोई चारा नहीं रह गया। गुलदार को मेरी गोली नहीं लगी, लेकिन वह भाग खड़ा हुआ और इस तरह कुत्ता बच गया। गुलदार इस खुले इलाके में तेज़ी से दौड़ता हुआ ही आया था। आक्रमण के पूरे दौर में न तो वह कूदा और न उसने छलाँग ही लगायी।

अफ्रीका में आमतौर से कहा जाता है कि गुलदार बिना कुछ सोचे-विचारे ही

हत्या करता है, अर्थात् केवल हत्या के आनन्द के लिए हत्या करता है। लेकिन यह बात सही नहीं है। गुलदार को इस अपयश से मुक्ति मिलनी चाहिए। इसकी यह बदनामी इसलिए फैली है कि यह अफ्रीका के 'क्राल' (गाँवों) में भेड़, बकरी, मुर्गी और मवेशियों आदि को बहुत अधिक हानि पहुँचाता है। गाँव में इसे शिकार के लिए बहुत कम जगह मिलती है। इसलिए न चाहते हुए भी यह आक्रमण के समय की भगदड़ में जो भी सामने पड़ता है उसे मार देता है या घायल कर देता है। लेकिन जंगल में कभी किसी गुलदार ने अपने भोजन की आवश्यकता से अधिक हिंसा की हो, इसका उदाहरण शायद ही कभी मिलेगा। आज तक ऐसा नहीं सुना गया कि गुलदार ने एक बार में कभी एक से अधिक जानवरों को मारा हो। और, यह भी वह केवल भूखा होने पर ही करता है। कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि किसी गुलदार से मुकाबले के दौरान संयोगवश एक से अधिक इम्पाला या छोटे हिरन अपनी जान से हाथ धो बैठते हों, लेकिन आमतौर से ऐसा तभी होता है जब कोई बच्चा गलती से बीच में पड़ जाता है। इस स्थिति में भी गुलदार सिर्फ़ एक ही जानवर को अपने खाने के लिए उठाता है।

इस प्रकार अफ्रीका के कुछ हिस्सों में फैली यह बदनामी निराधार है कि गुलदार सिर्फ़ आनन्द के लिए जानवरों को मारता है। मेरी जानकारी में सिर्फ़ एक ही उदाहरण ऐसा है जब गुलदार से मुठभेड़ के दौरान एक साथ दो चीतल मर गये थे। गुलदार उनमें से सिर्फ़ एक को ही खींच कर छिपाने की जगह ले गया। उसे शायद पता भी नहीं था कि इस मुठभेड़ में कोई दूसरा चीतल भी मारा गया था।

गुलदार को किसी जानवर के पास पहुँचकर उसका रास्ता रोकने और उसका हमला रोकने में काफ़ी मेहनत पड़ती है। रात का अंधेरा भी इसके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं होता है। जंगल के खुले स्थानों में जैसे ही जानवरों की नज़र इस पर पड़ती है कि वे ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगते हैं। विचित्र प्रकार की आवाज़ों का ऐसा कोहराम-सा मचता है कि गुलदार को वहाँ से भागते ही बनता है।

इसीलिए गुलदार कभी-कभी शिकार का उल्टा तरीका भी अपनाता है अर्थात् यह शिकार के जानवरों के पास पहुँचने ही बजाय उनको अपने पास आने देता है और फिर अचानक हमला कर देता है। ऐसे मौकों पर यह जंगल के बीच किसी लम्बे-चौड़े और खुले मैदान में शाम के झुटपुटे का लाभ उठा कर चुपचाप घुस

जाता है और वहाँ ठीक बीचोंबीच कहीं छिपकर बैठ जाता है। इस मैदान में जानवर इकट्ठे होते हैं और सारी रात वहीं चरते रहते हैं। गुलदार चुपचाप छिपा बैठा इसका मौका देखता रहता है कि कोई जानवर भटककर इसके इतना पास आ जाए कि यह लपक कर आसानी से उसे मार सके। कभी-कभी तकदीर इसका साथ देती है और इस तरह यह किसी जानवर को मार लेता है। लेकिन ऐसा मौका रोज़-रोज़ नहीं आता और इसे कई रातें इसी तरह पहरा देते गुज़ार देनी पड़ती हैं। शिकार के इतने सारे जानवरों को अपने इतने नज़दीक चरते हुए और फिर भी अपनी मार से इतनी दूर देखते रहना इसके धैर्य की एक बड़ी कठिन परीक्षा सिद्ध होता है।

गुलदार शिकार का एक और तरीका अपनाता है। कभी-कभी यह घनी शाखाओं वाले पेड़ों पर छिप जाता है और वहीं से अपने शिकार पर ताक लगाता है। भारत के जंगलों में तो पेड़ों पर छिपे गुलदार बहुत कम देखने में आते हैं, लेकिन अफ्रीका के मैदानों में यह दृश्य अक्सर देखने को मिलता है, क्योंकि वहाँ गुलदार को ज़मीन पर छिप कर बैठने की जगह बहुत कम मिलती है। पेड़ की शाखाओं में छिपकर गुलदार अंत तक शिकार की आँख से ओझल बना रहता है, क्योंकि दूसरे जानवर खतरे को अपने आस-पास ही देखने के आदी होते हैं और शायद ही कभी इसके लिए पेड़ की शाखाओं की ओर देखते हैं। गुलदार ऊपर चुपचाप बैठा रहता है और जैसे ही कोई जानवर पेड़ के नीचे से गुजरता है, वह उस पर कूदकर चढ़ बैठता है। पेड़ पर छिपा बैठा गुलदार आसपास से गुजरने वाले लोगों पर कोई खास ध्यान नहीं देता क्योंकि उसे मालूम रहता है कि उस पर किसी की भी नजर नहीं पड़ेगी और वह पूर्ण सुरक्षित है। गुलदार छिपने के लिए आमतौर से कोई फलदार वृक्ष चुनता है ताकि फलों के लालच में शिकार के जानवर वहाँ इकट्ठे हो सकें।

एक शाम को मैं मिसेज़ स्मिथीज़ के साथ अपनी कार में मोहन्द से धोलखण्ड जा रहा था। मोहन्द राऊ (नदी) पार करने पर मुझे सामने की ओर से आते हुए कुछ गूजर मिले। उन्होंने मुझे रोककर बताया कि उन्होंने अपने रास्ते में कुछ दूर एक पेड़ के टूटे हुए तने पर एक गुलदार को बैठा देखा है। वह वहीं पास में चरने वाले चीतलों पर अपनी नज़र गड़ाये बैठा है। मैंने उनकी बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया क्योंकि एक तो जो जगह वे बता रहे थे वह वहाँ से तीन मील दूर थी और उन लोगों को मेरे पास आने में एक घंटे से अधिक ही समय लगा था। गुलदार के लिए अपना विचार बदल देने और योजना को त्याग देने के लिए इतना

समय काफी होता है। इसके अलावा उन्होंने गुलदार को देखकर कम से कम इतना शोर तो मचाया ही होगा कि अब तक गुलदार अपनी जगह छोड़कर वहाँ से हट गया होगा।

फिर भी मैंने उनकी बतायी हुई जगह पर पहुँच कर अपनी कार रोक ली क्योंकि यह जगह धोलखंड के रास्ते में ही थी। मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि गुलदार अब भी वहीं अपनी जगह पर बैठा था। उसने एक पेड़ की आँधी से टूटी हुई डाल पर आसन जमा रखा था। वह अपने शिकार को देखने में इतना तन्मय हो गया था कि राहगीरों पर बिल्कुल नज़र नहीं डाल रहा था। यहाँ तक कि उसने मेरी कार की आवाज़ भी नहीं सुनी जो चुपचाप सरकती हुई उसके बिल्कुल पास पहुँच कर रुकी थी। मैं मिसेज़ स्मिथीज़ के साथ चुपचाप कार से बाहर आ गया और फिर थोड़ी देर तक हम लोग गुलदार को देखते रहे। वह उस असुविधापूर्ण जगह पर भी मूर्त्ति की तरह जमा बैठा रहा। नीचे लटकती हुई पूंछ को छोड़कर, जो धीरे-धीरे हिल रही थी, उसके किसी अंग में कोई हरकत नहीं हो रही थी। बिल्ली प्रजाति के सभी जीव जब किसी वस्तु पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं तो उनकी पूंछ इसी तरह धीरे-धीरे हिलती रहती है। सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि पास ही चरते हुए चीतल में से किसी की नज़र अभी तक गुलदार पर नहीं पड़ी थी हालांकि उसने अपने आपको छिपाने की कोशिश नहीं की थी। दिन के उजाले में और बिल्कुल खुले में सब की आँखों के सामने बैठे होने के बावजूद उसने अपने को एक खास तरीके से अन्य जानवरों के लिए अदृश्य बना लिया था, और वह तरीका था—जरा भी हिले-डुले बिना बिल्कुल पत्थर की तरह जमकर बैठना। वैसे, जंगल की बहुरंगी पृष्ठभूमि सभी तरह के जानवरों को, चाहे उनका कोई भी रंग क्यों न हो बड़े मजे में छिपा लेती है, बशर्ते कि जरा भी हिलें-डुलें नहीं और खामोश होकर बैठे रहें। हिलने-डुलने के कारण ही वे आँख की पकड़ में आ जाते हैं।

एक असाधारण घटना के कारण मिसेज स्मिथीज़ का नाम भारत में शेर के शिकार के इतिहास में बड़ा प्रसिद्ध हो गया है। संक्षेप में वह घटना कुछ इस प्रकार थी—सन् १९२५ के क्रिसमस के समय आयोजित एक शिकार में जौला-साल में शेरों के लिए प्रसिद्ध शिकारगाह में एक जगह दो मचान बाँधे गये। पहले मचान पर मिस्टर स्मिथीज़ बैठे थे और उनके पीछे ५० गज़ की दूरी पर दूसरे मचान पर उनकी पत्नी बैठी थीं ताकि वहाँ से शेर के लौटकर भागने के रास्ते पर नज़र रक्खी जा सके। जब हाँका शुरू हुआ और थोड़ी देर में शेर बाहर आया

तो मिस्टर स्मिथीज़ ने गोली दागी। उन्होंने तीन बार गोली चलायी लेकिन पता नहीं क्यों शेर को एक भी गोली नहीं लगी। जब शेर लपक कर मिसज़ स्मिथीज़ के मचान के पास से भागा तो उन्होंने भी गोली चला दी लेकिन ठीक जगह पर न बैठ कर शेर की रीढ़ के पास कहीं जा लगी। शेर ने वहाँ से भाग निकलने की बजाय मिसेज़ स्मिथीज़ से ही निपटने का निश्चय किया और वह पलक मारते ही उछल कर उनके मचान पर जा पहुँचा। मचान एक पेड़ पर ज़मीन से लगभग १४ फुट पर बाँधा गया था। एक क्षण के लिए तो मिसेज़ स्मिथीज़ चकित रह गयीं। लेकिन फिर तुरन्त ही उन्होंने मचान में खड़ी होकर दहाड़ते हुए शेर के खुले मुँह में अपनी बन्दूक घुसेड़ दी और घोड़ा दबा दिया लेकिन कारतूस ठीक से नहीं छूट सका। आत्मरक्षा के एकमात्र हथियार को शेर के मुँह में फँसा देख-कर वे घबरा गयीं और मचान के पीछे की ओर जा गिरीं। उधर सौभाग्य से उनके पति ने गोली चलायी जो सीधी आकर शेर के दिल में जा लगी। इस तरह दोनों साथ-साथ पेड़ से नीचे गिरे और काफी देर तक एक-दूसरे के पास ही पड़े रहे।

मिसेज़ स्मिथीज़ को हालाँकि कोई चोट नहीं आयी थी और वे बाल-बाल बच गयी थीं, फिर भी इस घटना से वे इतनी विचलित हुईं कि फिर आठ साल तक उन्होंने उस बन्दूक को हाथ नहीं लगाया जिस पर शेर के दाँतों के निशान पड़ गये थे। बड़ी मुश्किल से पहली बार मैंने उन्हें हिम्मत बँधायी और उसी बन्दूक से पेड़ पर बैठे हुए उस गुलदार पर गोली चलाने के लिए कहा, जो अब तक हमें देख चुका था और हमारे अप्रत्याशित आगमन पर अप्रसन्न हो रहा था।

गुलदार कई बार जायका बदलने के लिए पालतू जानवरों पर हमला करता है। जब शाम के समय पशु चरागाह से वापस गाँव की ओर लौटते हैं तो गुल-दार कहीं छिप कर बैठ जाता है और रेवड़ के पिछड़े हुए किसी बछड़े को अपना शिकार बनाता है। इसी प्रकार भेड़, बकरी, कुत्ते तथा बड़े जानवरों के बछड़े भी आसानी से गुलदार की चपेट में आ जाते हैं।

धौलखण्ड में एक गुलदार एक झोंपड़ी की घासफूस की दीवार तोड़कर अंदर घुस गया और वहाँ से घोड़े के एक महीने भर के बच्चे को उठा कर रफूचक्कर हो गया। घोड़ी झोंपड़ी के बाहर ही बँधी थी। उसने जोरों से हिनहिना कर पूरे कैम्प के अधिकारियों को जगा लिया। आधी रात के समय उसकी दर्द भरी आवाज़ चारों ओर गूँज रही थी लेकिन अब किया क्या जा सकता था। काफ़ी देर हो चुकी थी।

इस प्रकार जंगल के आसपास के गाँवों को गुलदार की इन हिंसक गतिविधियों

को वर्दाश्त करना पड़ता है। और, जब एक बार किसी गुलदार को पालतू जानवरों को मारने की लत लग जाती है तो फिर वह शायद ही कभी जंगली जानवरों के शिकार का झंझट पालना पसन्द करता है।

हालांकि गुलदार गाँव के निहत्ये निवासियों से नफ़रत करता है, लेकिन वह आमतौर से उनसे दूर ही रहता है। दो पैरों पर सीधा तनकर चलने वाला मनुष्य सभी जानवरों को, जिनमें गुलदार भी सम्मिलित है, प्रभावित करता है और उन्हें अपना सम्मान करने के लिए विवश कर देता है।

गुलदार आमतौर से अकेले ही घूमता फिरता है। और झुण्ड बाँध-बाँध कर चलने वाले जानवरों से अलग ही रहता है। इसीलिए गाय-भैंस के झुण्ड से भी यह दूर ही रहता है लेकिन अगर कोई पिछड़ा हुआ बछेड़ा मिल जाता है तो फिर यह उसे नहीं छोड़ता है। इसी तरह जंगली कुत्तों के झुण्ड से भी यह दूर ही रहता है। लेकिन कोई अकेला कुत्ता मिल जाय तो फिर उसे मारने से बाज नहीं आता। बन्दरों के झुण्ड ऊँचे पेड़ों पर बैठे रहते हैं और वहाँ से आसानी से गुलदार को देख लेते हैं, और फिर सब मिलकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगते हैं, अगर गिद्धों को कभी जंगल में किसी गुलदार का मारा हुआ जानवर दिखायी दे जाता है तो वे इतनी बड़ी संख्या में उस पर टूट पड़ते हैं कि गुलदार दूर खड़ा होकर तमाशा देखने के अलावा कुछ नहीं कर सकता। थोड़ी ही देर में वहाँ असंख्य पंखों की फड़फड़ाहट और भूखी चोंचों की खटखटाहट इतनी बढ़ जाती है कि गुलदार को वहाँ से खिसक जाना पड़ता है।

अगर शिकार किये गये किसी जानवर को रातभर के लिए जंगल में पड़ा रहने दिया जाय तो इसकी कोई उम्मीद नहीं कि वह दूसरे दिन किसी को मिल सके। पीलीभीत के प्रसिद्ध शिकारी हरिश्चन्द्र को अपने मारे हुए भालू से रात भर में ही हाथ धोना पड़ा था, क्योंकि उसे एक गुलदार चट कर गया था।

जंगलों में स्थित 'रेस्ट-हाउसों' के आसपास रहने वाले गुलदार उस समय एक चक्कर ज़रूर लगा लेते हैं—जब कोई फ़ॉरेस्ट ऑफीसर वहाँ रहने के लिए पहुँचता है। उन्हें मालूम रहता है कि ऐसे मौकों पर अक्सर कुछ न कुछ हाथ लग जाता है।

मेरे अपने काफिले में उस समय कैम्प का सामान ढोने के लिए दस ऊँट, एक टट्टू, एक-दो कुत्ते, बकरियाँ और गुलदार या शेर के चारे के लिए भैंस के दो-चार बछड़े और साथ ही एक-दो हाथी भी होते थे। उन दिनों फ़ॉरेस्ट ऑफीसर को बरसात के चार महीनों को छोड़ कर, जबकि जंगल का सारा काम ठप्प हो जाता

है, वर्ष के शेष आठों महीने जंगल में ही विताने पड़ते थे। फ़ॉरेस्ट ऑफीसर एक रेस्ट-हाउस से दूसरे रेस्ट-हाउस में डेरा डालता रहता था। ये रेस्ट-हाउस एक दूसरे से लगभग ६ मील की दूरी पर बने होते थे और रास्ते की यात्रा में लगभग एक पूरा दिन लग जाता था। जब मेरा कैम्प एक जगह से दूसरी जगह जाता था तो ऐसा लगता था जैसे कोई सरकस पार्टी जा रही हो।

सबसे निकट के रेलवे स्टेशन से मीलों दूर रहने के कारण बाहर की दुनिया से हमारा सम्बन्ध सिर्फ डाक के जरिये ही हो पाता था। जंगल के इलाके में डाक लाना और ले जाना भी हमारा ही काम होता था। अखबार कई दिन के पुराने होकर हम तक पहुँच पाते थे। हमारी दैनिक आवश्यकता की सभी चीजें केन्द्रीय दफ़्तर से ही आती थीं। अगर किसी चीज़ की कमी पड़ जाती थी तो हमें उसके बिना ही काम चलाना पड़ता था। जंगल में जलाने की लकड़ी, और अगर गूजर आस-पास होते थे तो दूध के अलावा और कुछ भी हमें स्थानीय रूप में प्राप्त नहीं हो सकता था।

आधुनिक सुख-सुविधा के अभाव के बावजूद यह एक खासा शानदार जीवन था। जंगली जानवर ही हमारे लिए मनोरंजन का सामान जुटाते थे। एक बार रानीपुर में मैंने एक गुलदार मारा जिसने मेरे काफ़िले के ऊँटों के बच्चों को खाने का शौक पैदा कर लिया था। एक दूसरे मौके पर कुछ साँभरों ने रात में हमारे रसोईघर पर हमला कर दिया और वे अन्य चीज़ों के साथ हमारे पास जितना नमक था उस सबको चाट गये। हमारा एक हाथी इतना बददिमाग था कि वह हर सफेद चीज़ को तोड़ डालता था—दरवाज़े, साइनबोर्ड, फाटक, कुछ भी उसे सफेद रंग में पसन्द नहीं था। जंगली मुर्गियाँ अक्सर कूड़े के ढेर में अपने लिए चारा टटोलती रहती थीं। मोहन्द में एक बार मैं रात को जून की गर्मी से परेशान होकर खुले में सो रहा था तो एक शेर मेरे बिस्तर के पास से निकल गया।

इन सबके अलावा हमारे जंगल के साथी निवासियों में कभी-कभी उन लोगों की भी गिनती हो जाती थी जो कानून के लम्बे हाथों से बचने के लिए जंगल की शरण ले लेते थे। एक-दो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के अलावा इन दुस्साहसी भगोड़ों ने हम लोगों को कभी भी तंग नहीं किया। हम भी उनके बारे में मौन ही रहते थे और कभी कोई सूचना प्रकट नहीं करते थे, क्योंकि उन लोगों के खिलाफ कुछ करना हमारे लिए दुखदायी सिद्ध हो सकता था।

हम बाहर की दुनिया के प्रति बेखबर होकर मस्ती से अपना जीवन बिताते थे। जंगल के निवासी अपने बहुत नज़दीक के पास-पड़ोस को छोड़कर न तो इसके

वारे में कुछ जानते ही हैं और न कोई रुचि ही लेते हैं कि वाकी दुनिया में क्या हो हो रहा है।

एक बार की वात है, मैं जंगल में स्थित एक गाँव भगवतपुर का दौरा ठीक उस दिन नहीं कर सका जिसका मैं बहुत दिन पहले से वादा कर चुका था। दूसरे दिन जव मैं वहाँ पहुँचा तो वहाँ के गाँव वाले इस वात से अप्रसन्न थे कि मैंने उन्हें निराश किया था।

"आप कल कहाँ थे?" गाँव के मुखिया ने मुझ से अदब के साथ पूछा और आगे कहा, "कल दिन भर आपने बड़ा इन्तज़ार करवाया।"

"मुझे अफ़सोस है कि कोशिश करके भी आ न सका", मैं खेद प्रकट करते हुए बोला। और फिर कारण वताते हुए मैंने कहा, "मुझे कल वड़े दफ़्तर में ही रुक जाना पड़ा क्योंकि हमारे वादशाह जार्ज पंचम के देहान्त का समाचार आ गया था।"

"क्या!" गाँव के वड़ों ने एक साथ कहा और फिर उत्सुकता से पूछा, "और हमारी मल्का कुतौरिया का क्या हुआ?"

ज़ाहिर था कि आज तक किसी ने उन्हें यह नहीं वताया था कि मल्का विक्टोरिया, जिसे वे कुतौरिया कहते थे, की मृत्यु हो चुकी है।

शेर के हमला करने के ढँग के वारे में काफी विवाद है, लेकिन सौभाग्य से गुलदार के बारे में ऐसा कोई विवाद नहीं है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, गुलदार अचानक अपने शिकार पर झपटता है और सीधा गला ही दबोच लेता है। देखते-देखते वह गले की नस काट देता है। यही कारण है कि पहाड़ी इलाकों के भेड़ पालने वाले अपने कुत्तों के गले में चौड़े पट्टे पहनाए रहते हैं, जिसमें काँटे और कीलें जड़ी होती हैं।

गुलदार शायद ही कभी पीछे से अपने शिकार पर हमला करता है। हाँ, जब यह जोड़े में हमला करता है तब कभी-कभी ऐसा कर बैठता है। लेकिन ऐसा मौका बहुत कम आता है। जब कभी किसी से इसकी लड़ाई होती है तो इसके भयानक पंजों के निशान शिकार के शरीर पर प्रायः देखने को मिल जाते हैं। आक्रमण करते समय यह अपने अगले पंजों के साथ ही पिछले पंजों का भी प्रयोग करता है और देखते-देखते अपने शत्रु की बोटी-बोटी नोंच डालता है।

सिंह और शेर तो बड़े सलीके से खाना खाते हैं, लेकिन गुलदार इस दृष्टि से बड़ा फूहड़ होता है। शेर किसी जानवर को मारने के बाद उसकी मलयुक्त आँतों को बड़ी सफ़ाई से बाहर निकालता है और अपने पंजों से कुछ मिट्टी खोदकर आँतों

को ढँक देता है। इसके बाद वह लाश को वहाँ से कुछ दूर खींच ले जाता है। शेर आमतौर से जानवर को कूल्हों की ओर से खाना शुरू करता है तथा उसके बाल, खाल, चर्वी, माँस, हड्डी सब कुछ एक-एक करके खा जाता है, बाकी कुछ नहीं छोड़ता।

दूसरी ओर गुलदार सबसे पहले अपने शिकार का पेट फाड़ता है और आँतों को अलग करने की भी ज़रूरत नहीं समझता। यह आमतौर से माँस पर आँत की गन्दगी फैल जाने देता है। मरे हुए जानवर को खाने के ढँग से ही यह स्पष्ट जाना जा सकता है कि यह शिकार गुलदार का था या शेर का।

स्टीवेंसन-हैमिल्टन (६) ने अफ्रीकी गुलदार के बारे में बताया है कि यह सिंह की तरह ही पहले अपने शिकार की अंतड़ियाँ अलग करता और उन्हें मिट्टी से ढँक कर परे हटा देता है। लेकिन भारतीय गुलदार का व्यवहार बिल्कुल भिन्न प्रकार का होता है।

अगर गुलदार को बीच में न छेड़ा जाय तो यह अपने एक ही शिकार को दो-तीन दिन तक खाता रहता है। लेकिन उसे कभी भी एक ही जगह पर नहीं रहने देता। हर बार जब यह अपने शिकार के पास पहुँचता है तो उसे घसीट कर किसी दूसरे सुरक्षित स्थान पर ले जाता है।

गुलदार के खाये हुए शिकार के बचे-खुचे अंश में शेर के खाये हुए शिकार की अपेक्षा हड्डियाँ ज़्यादा होती हैं। मैंने शेर को अक्सर लगातार हड्डियाँ चिचोड़ते सुना है, लेकिन गुलदार कभी ऐसा नहीं करता।

शेर लालची की तरह खूब ठूँस-ठूँस कर खाता है और कई बार तो एक बैठक में ही ५० पौंड या इससे भी अधिक मांस खा जाता है। दौली में मैंने एक बार एक शेर को भैंस के ६ महीने के बछड़े को खाते देखा था। मांस बिल्कुल सड़ गया था और पूरा कीड़ों से भर गया था तथा मीलों दूर तक बदबू फैल रही थी। गुलदार अपेक्षाकृत कम खाता है, लेकिन बार-बार खाता है। गुलदार को शेर की अपेक्षा कम प्यास लगती है और वह उसकी तरह खाना खाने के तुरन्त बाद पानी की ओर नहीं दौड़ता।

गुलदारों के साथ हुई अब तक मेरी मुठभेड़ों में एक सबसे विचित्र है। वह सुखरौ (पहाड़ी नदी) के पास घटित हुई थी। एक शाम को जब मैं जंगल का कुछ काम देख कर वापस मोहन्द स्थित अपने कैम्प को लौट रहा था तो मैंने देखा कि सुखरौ के दूसरे किनारे पर चट्टानों पर एक गुलदार आराम से लेटा हुआ है। शिवालिक की इन पहाड़ी नदियों में बड़ी-बड़ी चट्टानें पड़ी होती हैं जो बरसात

के दिनों में पहाड़ी से लुढ़क कर आ जाती हैं। बरसात के दिनों को छोड़कर ये नदियाँ आमतौर से सूखी पड़ी रहती हैं।

मैं इस गुलदार की विचित्र स्थिति को देखकर कुछ आश्चर्य में पड़ गया। मैंने अपने अर्दली से राइफल देने को कहा। राइफल लेकर मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ते हुए गुलदार से लगभग १०० गज़ के फ़ासले पर पहुँच गया और एक छोटी-सी झाड़ी के पीछे छिपकर बैठ गया जहाँ से वह साफ नज़र आता था। राइफल को संभाल कर मैंने निशाना साधा और फिर सांस रोककर घोड़ा दबा दिया।

"निशाना चूक गया," मेरे अर्दली ने कहा। उसने उस चट्टान से पत्थर के चप्पड़ों को उड़ते हुए साफ-साफ देखा था, जिस पर गुलदार सिर रखकर बैठा था। लेकिन हम दोनों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि गुलदार बिना हिले-डुले अब भी वहीं चुपचाप बैठा था। काफ़ी देर तक इंतज़ार करने और उत्सुकता से आगे बढ़ने के बाद हमें पता चला कि उस गुलदार को कोई यह बताना भूल गया था कि वह मर चुका है! उसकी मृत्यु से मेरी गोली का कोई संबंध नहीं था। वह पहले से ही मरा हुआ था। जंगल में अपने तीस साल के सेवाकाल में मैंने यह पहला मरा हुआ गुलदार देखा था। वह हल्के गुलाबी रंग का एक पूर्ण विकसित गुलदार था। शायद उसने किसी ऐसे जानवर की लाश खा ली थी, जिसे उन दिनों जगल में फैले हुए किसी विशेष रोग की छूत लग गयी थी।

६. गुलदार के शत्रु

जंगल में गुलदार का कोई भी प्राकृतिक शत्रु नहीं होता। यह बात अलग है कि किसी सिंह या शेर के मारे हुए शिकार को चुराते हुए यह पकड़ा जाय और उनके हाथों इसकी कुछ मरम्मत हो जाए, या किसी ज़्यादती के कारण कोई भालू इसे बुरी तरह नोंच डाले। लेकिन आमतौर से गुलदार जंगल के बड़े शक्तिशाली निवासियों के साथ कभी भी ताकत आजमाने की कोशिश नहीं करता। इस प्रकार प्रकृति-जगत् में गुलदार का कोई भी वास्तविक शत्रु नहीं होता।

शत्रु के अभाव में गुलदार की जनसंख्या को नियन्त्रित करने का काम प्रकृति ने किसी जानवर को नहीं सौंपा है। बल्कि जंगल में खाद्य-सामग्री के अभाव से ही यह काम अपने आप हो जाता है। गुलदार के औसत दो साल में चार बच्चे होते हैं। इनमें से केवल एक ही जीवित बचकर वयस्कता प्राप्त कर पाता है। अगर भोजन का अभाव एक प्रभावकारी नियंत्रण का काम न करे तो इतनी निम्न जीवनाशा के होते हुए भी गुलदार की जनसंख्या बहुत बढ़ सकती है।

प्रकृति ने तो गुलदार का कोई जातीय शत्रु पैदा नहीं किया लेकिन गुलदारने स्वयं अपना एक शत्रु बना रखा है और वह है स्वयं इसकी अपनी सुंदर खाल। इसकी खाल को यूरोप और अमरीका की महिलाएँ बहुत पसंद करती हैं, अफ्रीका के आदिवासी नेता अपने पद के प्रतीक के रूप में इसे धारण करते हैं और संसार भर में शिकारी इसे अपने विजय-चिह्न और सफलता के प्रतीक के रूप में अपने पास रखना चाहते हैं। इस प्रकार इसकी खाल ही अब तक इसकी अकाल मृत्यु का मुख्य कारण बन रही है। दूसरे अर्थों में मनुष्य ही अब तक गुलदार का एक मात्र महत्वपूर्ण शत्रु सिद्ध हुआ है।

गुलदार को फँसाने के लिए शिकारी तरह-तरह के चारे का प्रयोग करते हैं। भारत और सूडान में जीवित कुत्ते और बकरी को चारे के रूप में बाँध दिया जाता है। अफ्रीका में छोटे सूअर, हिरन, इम्पाला और अन्य छोटे स्तनपायी जीवों के शव इस काम के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं। जीवित कुत्ते या बकरी को चारे के रूप में इस्तेमाल करने का लाभ यह होता है कि वे जंगल में अकेले बाँध दिये जाने पर चिल्ला-चिल्लाकर गुलदार और अन्य शिकारी जानवरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं, लेकिन मचान पर बैठा हुआ शिकारी दिखाई

दे जाये तो वकरी मिमियाना वंद कर देती है और कुत्ता भी भूंकने की आवश्यकता नहीं समझता। इसलिये यह ज़रूरी होता है कि जब शिकारी आकर मचान में अच्छी तरह से छिपकर वैठ जाये उसके वाद ही इन जानवरों को लाकर किसी पेड़ से वाँधा जाये। जब इन्हें यह महसूस होता है कि जंगल में इनको अपने भाग्य के भरोसे अकेला छोड़ दिया गया है तो ये चिल्ला-चिल्लाकर आसमान सिर पर उठा लेते हैं और गुलदार को मीलों दूर से अपने पास वुला लेते हैं। कुछ जगहों पर तो चारे के लिए वकरी की आँखें वाँधकर लाने का रिवाज है ताकि वह न तो मचान पर वैठे हुए शिकारी को देख सके और न पास आते हुए गुलदार को ही।

लेकिन यह इतना आसान काम नहीं है जितना कि प्रतीत होता है। गुलदार वहुत जल्दी ही यह सीख लेता है कि किसी एकान्त स्थान पर अकेली वँधी हुई और वरावर चिल्लाती हुई वकरी के मौजूद होने का क्या मतलव है। कसूमरी में मुझे एक ऐसे गुलदार से पाला पड़ा था, जो अन्य सभी जगहों पर जाता था लेकिन जहाँ वकरी वँधी होती थी वहाँ कभी नहीं जाता था। कई साल तक शिकारी लोग तरह-तरह से उसे फँसाने की कोशिश करते रहे लेकिन किसी को सफलता नहीं मिली। हर तरह के जाल से सफलतापूर्वक वचने की उसकी वुद्धि और क्षमता के लिए हमने उसे 'पी-एच० डी०' या डॉक्टर की उपाधि दे रखी थी।

दौली में मैंने एक वार विल्कुल दूसरा तरीका इस्तेमाल किया। मैं एक मिमियाती हुई वकरी पर पहरा देने वैठ गया ताकि कहीं कोई मूर्ख गुलदार सीधे उस पर हमला न कर वैठे और दूसरी ओर मैंने अपने सहायक सकलानी को उस रास्ते पर वँधे मचान पर वैठाया जिधर से गुलदार के आने की आशा थी। गुलदार अपने छिपने की जगह से निकल कर प्रायः उसी रास्ते से जाया करता था। वकरी ने मिमियाना शुरू किया, उसके कुछ ही देर वाद गुलदार अपने छिपने की जगह से वाहर निकला और वकरी से काफी दूर आकर रुक गया। फिर सावधानी से इधर-उधर देखने और कुछ सुनने के वाद धीरे-धीरे वकरी की ओर वढ़ने लगा। लेकिन सकलानी यह देखकर चकित रह गया कि गुलदार ने अचानक उसे देख लिया और पलक झपकते ही वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

अगर कभी गुलदार किसी जीवित 'चारे' पर हमला करता है तो वह इतनी तेज़ी से सारा काम कर लेता है कि शिकारी को कुछ पता भी नहीं चलता और

चारा गुलदार के साथ गायब हो जाता है। गुलदार मौका पड़ने पर इतनी फुर्ती दिखा सकता है कि उसका कोई जवाब नहीं। एक बार हकीमुद्दीन जैसे निशानेबाज़ शिकारी ने एक गुलदार पर गोली चलायी तो गुलदार तो साफ बच निकला और गोली बकरी को जा लगी। बेरीबाड़ा के पास एक बार लार्ड बेल्पार इस आशंका से सारी रात मचान पर ही बने रहे कि उनकी गोली से वह गुलदार घायल हो गया है जो अपने शिकार को खाने के लिए पहुंचा था। लेकिन दूसरे दिन सवेरे जब मैं लार्ड साहब को वापस लेने के लिए पहुँचा तो पता चला कि उनकी गोली गुलदार को लगने की बजाय चारे के लिये बँधे जानवर को लगी थी।

कई बार ऐसा होता है कि शेर के लिए बाँधे गये बछड़े को गुलदार आकर मार देता है। गुलदार जब जंगल में जानवरों का शिकार करता है तो उन्हें मार कर घनी झाड़ियों में इस तरह सावधानी से छिपा देता है कि वे शायद ही कभी किसी की नज़र में आते हैं। गुलदार के द्वारा मारे गये पालतू जानवरों की लाशें जंगली गाँवों और मवेशी केन्द्रों के आसपास कभी-कभी दिखायी दे जाती हैं।

गलदार के मारे हुए जानवर के पास ही यदि मचान बनाना हो तो अत्यधिक सावधानी बरतनी पड़ती है, क्योंकि उस समय गुलदार आस-पास ही कहीं छिपा होता है और ध्यान से सुनता रहता है कि उसके जानवर के पास क्या हो रहा है। जैसे ही एक बार उसे संदेह हो जाता है तो या तो यह उस जानवर की लाश उठा कर वहाँ से भाग जाता है या फिर हमेशा के लिए उसकी ओर से मुँह मोड़ लेता है।

गुलदार के लिए मचान किसी अच्छे पेड़ के उस स्थान पर बाँधना चाहिए जहाँ से पहली बड़ी शाखाएँ फूटती हों। लेकिन यह स्थान ज़मीन से लगभग १५ फुट से कम नहीं होना चाहिये। ऊँचा मचान होने से एक लाभ तो यह होता है कि गुलदार उसे आसानी से देख नहीं पाता और दूसरे सुरक्षा भी काफ़ी रहती है, क्योंकि गुलदार बड़ी आसानी से पेड़ पर चढ़ जाता है। इसके अलावा, मचान को चारे या शिकार से कुछ दूर बाँधना चाहिये। गुलदार बेहद चौकन्ना जानवर होता है इसलिए मचान और ऊँचाई के कारण शिकारी की सुरक्षा की कुछ गारंटी हो जाती है।

वैसे, मचान पर बैठा हुआ शिकारी गुलदार का शिकार करते समय उतना सुरक्षित नहीं रह सकता जितना कि शेर के शिकार के समय रहता है। ऐसे

उदाहरणों की कमी नहीं है जब घायल गुलदार ने भागने की बजाय मचान पर बैठे हुए शिकारी पर हमला कर दिया।

यह याद रखना चाहिये कि गुलदार मृत या जीवित चारे और आस-पास की स्थिति से दूर से ही एक प्रकार का टेली-संचार संपर्क स्थापित कर लेता है। शिकारी अगर हिलने-डुलने में ज़रा सी भी आवाज़ करता है तो वह तुरन्त गुलदार तक पहुँच जाती है। इसके अलावा गुलदार कभी भी जल्दबाज़ी नहीं करता। वक्त की पाबंदी से इसका कोई संबंध नहीं होता—न इसे कहीं पर ठीक समय पर पहुँचना होता है और न इसके खाने-पीने का कोई समय ही निश्चित होता है। शाम को भी इसे कोई जल्दी नहीं होती, क्योंकि पूरी रात का समय इसका अपना होता है। शिकार के पास पहुँचते-पहुँचते इसकी चाल काफ़ी धीमी हो जाती है। यह पास ही कहीं झाड़ी में चुपचाप छिपकर घंटों इन्तजार करता रहता है, आस-पास की स्थिति देखता रहता है और कान लगाकर सुनता रहता है। अंत में जब इसके मन में तय हो जाता है कि कोई खतरा नहीं है तब यह शिकार के पास जाता है। धैर्य और सावधानी की इस परीक्षा में अंततोगत्वा गुलदार की ही विजय होती है।

कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है कि कोई दुस्साहसी गुलदार उत्सुकतावश सीधा किसी मिमियाती हुई बकरी के पास जा पहुँचता है। एक बार की बात है मैंने शारदा नहर के किनारे लोहिया हेड के पास कैम्प लगा रखा था। अचानक नहर के दूसरे किनारे पर चीतल, काकड़ और बंदरों ने ज़ोरों से शोर मचाना शुरू किया। मेरी छह साल की बच्ची शीला का ध्यान उधर गया और तुरन्त वह यह बताने के लिए दौड़ती हुई मेरे खेमे में आ पहुँची कि पास ही एक गुलदार आया हुआ है। मैं अपनी राइफल और एक बकरी को लेकर शीला के साथ उस जगह के लिए रवाना हुआ। वहाँ पहुँच कर मैंने शीला को एक घने पेड़ की ऊँची डाल पर बिठा दिया। मैंने उसे समझाया कि वह चुपचाप बैठी रहे और चाहे जो भी हो जाये एक शब्द भी न बोले। बकरी को नहर से मिलने वाले एक छोटे नाले के पास बाँध कर मैं धीरे से खिसक आया और घनी झाड़ियों में छिपता हुआ उस पेड़ के पास लौट आया जहाँ शीला बैठी थी। बंदूक हाथ में लेकर मैं पेड़ के पीछे खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा। बकरी ने मुझे वापस लौटते नहीं देखा था इसलिए उसने मिमियाना जारी रखा।

थोड़ी देर में मैंने गुलदार को धीरे-धीरे नाले के किनारे-किनारे बकरी की ओर बढ़ते देखा। वह बहुत सधे हुए कदमों से आगे बढ़ता गया और फिर बकरी

पर झपटने के पहले रुक कर अपनी पूँछ हिलाने लगा। अभी वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि यहीं से बकरी पर आक्रमण करे या कुछ और आगे बढ़ जाय। मैंने मौके से लाभ उठाते हुए निशाना साधकर गोली चला दी। गोली सीधी उसके कंधे के पीछे लगी और वह वहीं ढेर हो गया।

मैं गुलदार को अपने कंधों पर उठाकर एक हाथ में राइफल और दूसरे में बकरी की रस्सी थामे शीला के साथ वापस कैम्प में लौट आया। शीला अब तक बराबर चुप रही थी। अंत में कैम्प के पास पहुँचने पर वह अपने को रोक नहीं सकी और बोली, "डैडी, अब तो मैं बोल सकती हूँ ना ?"

हाथी को देखकर गुलदार इतना भयभीत हो जाता है कि वहाँ से भाग निकलने की बजाय तुरन्त छिपने की जगह ढूँढ़ने लगता है और कहीं न कहीं दुबक जाता है। जंगल में चलने वाले कामों का मुआइना करने के लिए जब भी कभी मैं हाथी पर सवार होकर गया हूँ तो रास्ते में ऐसी-ऐसी जगह मुझे गुलदार दिखायी दिये हैं जहाँ उनकी उपस्थिति की कोई उम्मीद नहीं थी।

साबलदेह में मैंने अपने हाथी की पीठ पर से ही एक गुलदार को गोली मारी थी। वह जिस जाति का था, उसे प्रकृति-विज्ञानियों की भाषा में कश्मीरी गुलदार कहा जाता है। पवलगढ़ में मैंने एक गुलदार को झाड़ी में छिपा बैठा देखा था। वह बड़ी व्यग्रता से मेरे हाथी के वहाँ से गुज़र जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। एक शाम शेलजाम रेस्ट-हाउस को लौटते समय मैंने एक गुलदार को सड़क पर ठीक चौराहे पर बैठा देखा था। वह दूर से मेरे हाथी को बड़ी नफ़रत से देख रहा था।

इसी तरह एक बार अपने हाथी पर पाडरी खत्ता से गुज़रते समय हमने बन्दरों की चीख-चिल्लाहट सुनी। हम लोग एक नाले की घनी झाड़ियों के पास जा पहुँचे। मेरा शिकारी, महावत और मैं हम तीनों इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगे। हमने लगभग हर झाड़ी में गुलदार की खोज की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। हम लोगों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि बन्दर बराबर गुलदार को देखे जा रहे थे, लेकिन हम तीनों में से कोई भी उसे नहीं देख पा रहा था। हम अपनी कोशिश छोड़ कर आगे बढ़ने ही वाले थे कि अचानक मेरी नज़र एक पेड़ पर चुपचाप बैठे हुए गुलदार पर पड़ी। वह असल में बन्दरों को घूरने में इतना व्यस्त था कि उसने अब तक न तो हमारे हाथी को देखा था और न हमें।

मैं इन घटनाओं का उल्लेख केवल यही प्रकट करने के उद्देश्य से कर रहा हूँ

कि यह मालूम हो सके कि गुलदार के शिकार में हाथी एक चलते-फिरते मचान का काम दे सकता है, और गुलदार का पीछा करने की दृष्टि से भी बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके अलावा हाथी गुलदार के शिकार के लिए मचान बाँधते समय एक अच्छी आड़ का काम भी देता है। हाथी गुलदार का ध्यान अपनी ओर इतना आकर्षित कर लेता है कि उसके ऊपर बैठे हुए शिकारी की ओर गुलदार का ध्यान ही नहीं जा पाता।

राजस्थान में गुलदार के शिकार का एक तरीका इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें शिकारी को गुलदार और उसके चारे के रूप में बँधी बकरी का पूरा दृश्य दिखायी दे सकता है। इसके अलावा शिकार पर गुलदार के झपटने की सम्भावना भी सबसे कम रह जाती है। उसमें दस फुट लम्बे चार बाँस जमीन में गाड़े जाते हैं और उनके ऊपर चारपाई बाँध दी जाती है। फिर एक बकरी के पैर इस चार-पाई की बुनावट में ठूँस कर नीचे से बाँध दिये जाते हैं। बकरी ऊँचाई पर इस प्रकार बैठने की आदी नहीं होती। इसलिए इस असुविधापूर्ण आसन पर बैटकर वह लगातार मिमियाती रहती है। गुलदार इस स्थिति में बकरी को उठा नहीं सकता। गुलदार के लिए भी ज़्यादा चालाकी दिखाना सम्भव नहीं रह जाता है और वह सामने बैठे हुए शिकारी का आसानी से निशाना बन सकता है।

अफ्रीका में शिकार की दृष्टि से सिंह, हाथी और दरियाई घोड़े को प्रमुखता प्राप्त है तथा गुलदार का नम्बर इनके बाद आता है। अफ्रीका में गुलदार के शिकार के लिए जो ढँग अपनाया जाता है वह भारतीय ढँग का बिल्कुल उल्टा होता है। भारत में चारे के रूप में किसी जीवित पशु को ज़मीन पर बाँध दिया जाता है और शिकारी ऊँचे पेड़ पर बाँधे गये मचान पर बैठता है। अफ्रीका में मरा हुआ जानवर चारे के रूप में किसी पेड़ के ऊपर बाँध दिया जाता है और शिकारी नीचे जमीन पर कहीं ओट में छिपकर बैठ जाता है। मध्य और पूर्वी अफ्रीका में गैज़ल, हिरन, ज़ेब्रा, इम्पाला और छोटे सूअरों का प्रयोग चारे के रूप में किया जाता है। पूर्वी सूडान में भारत की तरह ही जीवित बकरी को चारे के रूप में बाँधा जाता है।

कोरिया और मंचूरिया में प्रसिद्ध रूसी शिकारी जॉर्ज यांकोव्स्की घोड़े पर सवार होकर गुलदारों का पीछा किया करता था।

राजस्थान में गुलदारों को पकड़ने के लिए जिस शिकंजे का उपयोग किया जाता है, उसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। चूहेदानी जैसे ये शिकंजे बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। मैंने इसी तरह दो गुलदारों को पकड़ा था और उनको

अण्डमान द्वीप समूह में चीतल की जनसंख्या कम करने के उद्देश्य से भिजवाया था।

गुलदार को किसी गड्ढे में धोखे से फँसाना बड़ा मुश्किल होता है। गड्ढे को पत्तियों से छिपाकर गुलदार को इस तरह से हकालना कि वह गड्ढे में जा गिरे, लगभग असम्भव काम है और अगर कभी संयोग से वह फँस भी जाता है तो अपनी असाधारण चालाकी के बल पर वहाँ से आसानी से निकल भागता है। इसीलिए गुलदारों को पकड़ने के गड्ढे ऊपर से सँकरे और नीचे से चौड़े बनाये जाते हैं।

इसी प्रकार खटके वाले शिकंजे और फन्दे भी चाहे वे कितने ही मजबूत क्यों न हों, गुलदार को फँसाने की दृष्टि से शायद ही कभी उपयोगी सिद्ध होते हों। उत्तरी टाँगानिका की प्रसिद्ध रिफ्ट घाटी में स्थित मन्यारा राष्ट्रीय पार्क के वार्डन मैक्स मॉर्गन डैविस ने बताया है कि किसी गुलदार को जाल में फँसाना कितना कठिन काम है।

उन्होंने जूलियट हक्सले (६) को किस्सा बताते हुए कहा, "दो रात पहले मुझे एक बड़ा विचित्र अनुभव हुआ। मैं अपने सेवक लड़के को, जब वह रात के लिए मेरा कमरा ठीक कर चुका तो कुछ जल्दी छुट्टी दे दी थी। लेकिन जब मैं सोने गया तो मैंने कमरे को बुरी तरह से अस्त-व्यस्त पाया। किसी ने पलंगपोश खींच लिया था और दूसरी चादरें इधर-उधर फेंक दी थीं। कम्बल और तकिये न मालूम कहाँ चले गये थे। मेरे कपड़े चारों तरफ़ फैले हुए थे। मैंने लड़के को वापस बुलाया। उसने कसम खाकर बताया कि जब वह वहाँ से गया था तो सब चीज़ें अपनी जगह पर ठीक हालत में थीं। इसलिए मैंने तय किया कि ज़रा पता लगाया जाय कि मेरे कमरे में कौन आया था। मैंने खुली खिड़की में तीन घण्टियाँ बाँध दीं और फिर एक हाथ में टार्च और दूसरे में पिस्तौल लेकर लेट गया। थोड़ी ही देर में 'वह' आया। घण्टियाँ टनटना उठीं और मैंने टार्च की रोशनी उसकी ओर फेंकी। मैंने देखा कि खुली हुई खिड़की में एक भरा-पूरा तेंदुआ खड़ा मेरी ओर घूर रहा था। वह गुर्राया और वहाँ से चला गया। मैंने अपने मन में सोचा—नहीं, इसे मारना इतना आसान नहीं है। मैंने उठकर बरामदे में एक शिकंजा लगाया और फिर आकर सो गया। थोड़ी ही देर बाद वह फिर से आया—पता नहीं क्यों वह मेरे कमरे में आना चाहता था—और इस प्रकार शिकंजे में फँस गया। मैंने सोचा चलो, ठीक हुआ, कल मैं उसको यहाँ से उठवा कर राष्ट्रीय पार्क में छुड़वा दूंगा। लेकिन मैंने उस तेंदुए की साथिन के बारे में नहीं सोचा

था। कुछ देर बाद मैंने देखा कि वह भी आ पहुँची थी। वह शिकंजे के आसपास घूम रही थी और बीच में रुक-रुक कर शिकंजे में फँसे तेंदुए से कुछ कहने की कोशिश कर रही थी। आप विश्वास करें या न करें लेकिन यह सच है कि जब मैं तेंदुए को ले जाने के लिए गाड़ी का इन्तज़ाम करने गया तो इस बीच किसी तरह से उसने शिकंजे के इस्पात के तारों को दाँतों से मोड़ डाला और एक संकरा-सा रास्ता बना कर न मालूम कैसे अपने को सिकोड़ कर बाहर निकल गया। दोनों वहाँ से गायब हो चुके थे। मेरे नौकरों ने आसपास की झाड़ियों में उनकी खोज की। उन्हें वहाँ कोई तेंदुआ तो हाथ नहीं लगा, लेकिन मेरे दो कम्बल, एक चादर और उनके साथ ही मेरा पायजामा और जर्सी झाड़ियों में से प्राप्त हुई। ये चीज़ें जंगल में इधर-उधर फैली पड़ी थीं।"

जब कोई गुलदार शिकंजे में फँस जाता है तो वह गुलामी की ज़िन्दगी बिताने की बजाय अपने एक-दो अँगूठे तुड़वाकर वहाँ से भाग निकलना ज़्यादा अच्छा समझता है। जिम कार्बेट ने रुद्रप्रयाग के एक मानवभक्षी के बारे में लिखा है जो अपने बालों का गुच्छा और पैर की खाल का एक छोटा-सा टुकड़ा शिकंजे में ही फँसा छोड़ कर वहाँ से भाग निकला था।

इससे मुझे नैनीताल में जिम कार्बेट द्वारा प्रस्तुत एक प्रदर्शन का स्मरण हो आता है। उन्होंने एक ऐसी युक्ति तैयार की थी जिसकी सहायता से एक दुनाली बन्दूक उस समय अपने आप छूट पड़ती थी, जब कोई उसके नीचे से गुज़रने की कोशिश करता था। अगर उसे किसी गुलदार के चारे के पास सम्भाल कर लगा दिया जाता तो गुलदार शिकार को खाने का प्रयास करते समय अपने हाथ से अपने आप को गोली मार सकता था। अफ्रीका में गोरे शिकारियों ने मानवभक्षी सिंहों के शिकार में इस युक्ति का उपयोग करके बड़ी सफलता प्राप्त की है। लेकिन भारतीय गुलदारों के लिए यह विशेष कारगर नहीं सिद्ध हो सकी। यहाँ केवल भेड़िये और लकड़बग्घे ही इस युक्ति के शिकार बने।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त के आस-पास मद्रास प्रेसीडेंसी के अंग्रेजों ने जानवरों को ज़हर देकर मारने वालों के एक पूरे दस्ते को अपने यहाँ नौकर रख रखा था। उनका काम था कि वे अनचाहे हिंसक पशुओं (विशेष रूप से शेर और गुलदार) का पता लगाएँ, उनके शिकारों का पता-ठिकाना मालूम करें तथा उनके खाने के माँस में संखिया मिला दें। उन्हें इस काम में काफ़ी सफलता मिली थी। लेकिन इसका कोई लेखा-जोखा नहीं रखा गया कि उन्होंने कब कितने शेर और गुलदार इस प्रकार मारे। यहाँ यह उल्लेख किया जा सकता है कि रुद्रप्रयाग के मानवभक्षी

गुलदार पर साइनाइड की उस तगड़ी मात्रा का भी कोई खास असर नहीं हुआ था, जिसे कार्बेट साहब ने उस जानवर के मानव 'शिकार' के माध्यम से उसे देने का प्रयास किया था। मानवभक्षी हिंस्र-जीवों के नाश के लिए ज़हर का प्रयोग करने में एक बड़ा खतरा यह है कि अपराधी जीव तो सज़ा से बच निकलते हैं और उनकी जगह निरपराध जीवों को मुफ़्त में अपनी जान से हाथ धोना पड़ सकता है।

लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि अफ्रीका के आदिवासियों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले ज़हर-बुझे तीरों से गुलदार का बच निकलना लगभग असम्भव होता है। उसके द्वारा प्रयुक्त वानस्पतिक विष धीमी गति से लेकिन निश्चित रूप से प्राण ले लेता है।

जंगली जानवरों में घायल गुलदार से अधिक खतरनाक और कोई जानवर नहीं होता। यह तो जैसे बिना फ़्यूज के उस समय बम की तरह हो जाता है जो अप्रत्याशित रूप से फट पड़ता है और बड़ी क्षति पहुँचाता है।

घायल हो जाने पर आमतौर से गुलदार कहीं सिर छिपाने की जगह ढूँढ़ता है ताकि वहाँ बैठकर अपने घाव चाट सके। उस समय यह बिलकुल एकान्त चाहता है। अगर उस हालत में कोई शिकारी इसका पीछा करता है तो वह कहीं दुबक कर बैठा रहता है और उसे पहले अपने पास आने देता है, और जब वह इसकी मार की हद में आ जाता है तो यह अपने छिपने की जगह से एकदम बिजली की तेज़ी से बाहर निकल आता है और उस पर टूट पड़ता है। उस समय का इसका वार बड़ा भयानक होता है। इस एकदम अप्रत्याशित आक्रमण से अच्छा-से-अच्छा शिकारी भी भौंचक्का रह जाता है। घबराहट में बन्दूक उसके हाथ से दूर जा गिरती है और वह खाली हाथ ही इसका सामना करने के लिए विवश हो जाता है। पाशविक क्रोध से फुँफकारते हुए गुलदार के तेज़ दाँतों और भयानक पंजों की मार के आगे निहत्थे शिकारी की क्या गति होती होगी, इसकी कल्पना कठिन नहीं है।

लेकिन इस स्थिति का एक दूसरा पहलू भी है जिससे कुछ राहत मिलती है। वह यह कि मनुष्य के लिए गुलदार का आक्रमण आमतौर से घातक नहीं होता है। नोंच-खसोट में दो-चार छोटे-बड़े घाव या बहुत हुआ तो एकाध हाथ-पैर गँवाकर शिकारी अपनी जान बचाने में सफल हो जाता है। लेकिन शेर के भयानक आक्रमण से किसी के इस तरह जीवित बच निकलने के उदाहरण मैंने बहुत कम देखे हैं।

चित्र ५. क्रोध से गुर्राते हुए।

चित्र ६. भोला—काला गुलदार।

चित्र ७. अस्पताल का वह पिंजरा जहां से भोला भाग निकला था। उसने अपने निकलने के लिए जो रास्ता बनाया था वह मुश्किल से एक फाउन्टेन पेन के बराबर था।

चित्र ८. घात लगा कर बैठा गुलदार।

चित्र ९. शिकार की टोह में।

जे० ए० हंटर (१०) ने अपने समय के प्रसिद्ध शिकारी चार्ल्स कोटार के आश्चर्यजनक कारनामों का विस्तार से वर्णन करते हुए बताया है कि किस तरह कोटार ने बिना किसी हथियार के खाली हाथ ही तीन गुलदारों का मुकाबला किया था और उनका कचूमर निकाल दिया था। कोटार बहुत लम्बा-चौड़ा, बिल्कुल दैत्याकार व्यक्ति था। उसकी ऊँचाई लगभग सवा छह फुट थी। एक बार उसने एक कुत्ते की लाश पर से एक गुलदार को घसीट कर अलग कर दिया था। उसने गुलदार की पिछली टाँगों को पकड़ कर खींचा और उसके पंजों के भयानक थपेड़ों की परवाह किये बिना गला दबा कर उसे मार दिया था। कुछ दिन बाद दो छोटे गुलदारों ने एक साथ कोटार पर हमला किया। वे एक पेड़ पर घात लगाकर बैठे थे। ऐसा लगता था जैसे वे अपने साथी की हत्या का बदला लेना चाहते थे।

हंटर ने लिखा है—"कोटार पर यह हमला अचानक हुआ। उसे किसी प्रकार की पूर्व-सूचना नहीं थी। गुस्से में भरे हुए दोनों जानवर अचानक उस पर टूट पड़े और अपने तेज़ नाखूनों से उसका बदन फाड़ने लगे। कोटार ने अपनी राईफ़ल ज़मीन पर फेंक दी क्योंकि वह जानता था कि ऐसे मौके पर राईफ़ल बेकार होती है। गुलदारों को उसकी ताकत का कोई अन्दाज़ नहीं था। उनके आक्रमण का कोटार के विशाल शरीर पर तुरन्त कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। जब कोटार ने राइफ़ल फेंककर अपने को सम्भालते हुए दोनों को झटक-कर ज़मीन पर फेंक दिया तो गुलदार कुछ क्षणों के लिए तो जैसे भौंचक्के रह गये होंगे। कोटार को उनकी भयानक पकड़ से अपने आपको मुक्त कराने में ज़रा भी देर नहीं लगी और देखते-देखते वे दोनों उसके पैरों के पास ज़मीन पर छटपटाने लगे। कोटार ने भी इस मौके से लाभ उठाया और लपककर एक गुलदार की गर्दन पकड़ ली। उसकी बाहें इतनी लम्बी थीं कि आसानी से गुलदार के गले के चारों ओर जकड़ गईं। वह बाहों को कसता चला गया। यहाँ तक कि गुलदार की आँखें बाहर निकलने लगीं और उनमें खून उतर आया। कोटार खुद भी लहू-लुहान हो चुका था। उसकी बाहों से खून के रेले बह कर गुलदार के मुँह में जा रहे थे और उसके लम्बे-लम्बे दाँतों को खून से लाल कर रहे थे।

"इतने में दूसरा गुलदार किसी तरह अपने को सम्भाल कर उठ खड़ा हुआ और तुरन्त कोटार की पीठ पर उछला लेकिन ऐसा करके उसने जैसे अपनी मौत ही बुला ली। कोटार पहले वाले गुलदार की गर्दन पर अपनी जकड़ और भी गहरी करने के लिए आगे की ओर झुका हुआ था। गुलदार को पीछे से छलाँग लगाते

देख कर वह थोड़ा-सा और झुक गया और गुलदार निशाना चूक कर सीधे उस पर से होकर ज़मीन पर पहले गुलदार की टाँगों पर आ गिरा, जो पहले से ही छटपटाते हुए ज़ोरों से अपनी टाँगें फेंक रहा था, देखते-देखते उसके तेज़ पंजों से दूसरे गुलदार का पेट फट गया।

"कोटार ने अपने दुश्मन की इस गलती से तुरन्त लाभ उठाया। उसने अब दोनों घायल जानवरों की गर्दनें अपनी बाहों में जकड़ लीं। कोटार उनका गला दबा रहा था और वे बुरी तरह से अपने हाथ-पैर फेंक रहे थे। उनके ज़ोरदार थपेड़ों ने कोटार को सीधा खड़ा होने के लिए विवश कर दिया, लेकिन इनने पर भी उसने गले पर अपनी पकड़ ढीली नहीं होने दी।

"कोटार के कन्धों और बाहों पर कई जगह माँस नुच गया था और खून के रेले वह रहे थे। लेकिन उसके शरीर में न मालूम कहाँ से असाधारण शक्ति आ गयी थी। उसका लम्बा-चौड़ा शरीर जैसे शक्ति का भण्डार बन गया था।

"उसने ज़ोर-ज़ोर से गुलदारों को सिर के बल एक दूसरे से टक्कर मारना शुरू किया।

"वे भयानक जानवर भी आसानी से हार मानने के लिए तैयार नहीं थे। उनके फुर्तीले और ताकतवर शरीर रह-रहकर तेज़ी से मरोड़ खाते थे और उनके पंजे कभी हवा में और कभी कोटार के शरीर पर थपेड़े मारते थे। कुल मिलाकर अपने आप में यह एक अविस्मरणीय दृश्य था—एक भीमकाय व्यक्ति और उसकी बाहों में जकड़े हुए ज़ोर-ज़ोर से गुर्राते और बुरी तरह छटपटाते हुए दो भयानक गुलदार। शक्ति और संघर्ष की इस अनोखी प्रतिमा को कोई कुशल मूर्त्तिकार एक अद्वितीय शिल्प का रूप दे सकता था। कोटार के कपड़े चिथड़े-चिथड़े हो गये थे और उसके हाथ-पैर ही नहीं पूरा शरीर लहू-लुहान हो रहा था। गला दबाने से गुलदारों की आवाज़ घरघरा रही थी। उनकी पूँछें चाबुक की तरह हवा में सन-सनाती थीं, हाथ-पैर रह-रहकर ऐंठते थे और खोपड़ियाँ ज़ोरों से टकरा उठती थीं। क्रोध, संघर्ष, प्रतिहिंसा और जिन्दगी और मौत की यह लड़ाई शिकार के इतिहास में अपना सानी नहीं रखती।

"कुल मिलाकर यह लड़ाई दो मिनिट या इससे कुछ ही अधिक चली होगी। लेकिन कोटार के लिए तो निश्चय ही ये दो मिनट दो सप्ताह के बराबर सिद्ध हुए होंगे। कोटार पर जब इन गुलदारों ने अचानक हमला किया था तो उसके आदिवासी सहायक और अर्दली वगैरह जान बचाकर वहाँ से भाग निकले थे। अब उनमें से कुछ लोग हिम्मत करके आगे बढ़ने लगे। इस असाधारण कुश्ती को

देखकर मारे भय और आश्चर्य के उनकी आँखें फटी-की-फटी रह गयी थीं। किसी को पास आने की हिम्मत नहीं हो रही थी। वे कोटार की सहायता करना चाहते थे, लेकिन उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। गोली चलाना मुमकिन नहीं था क्योंकि निशाना चूक सकता था और गोली गुलदारों को लगने की बजाय कोटार को लग सकती थी। इस समय तो सिर्फ कोटार की हिम्मत, ताकत, और सहनशक्ति का ही भरोसा था, और वास्तव में अंत में कोटार की हिम्मत और ताकत की ही विजय हुई।

"कुछ ही देर में गुलदारों के हाथ-पाँव ढीले पड़ने लगे, पूँछें झूलने लगीं और उनका विरोध कम हो गया। कोटार खुशी से गुर्राया। उसके पैरों के नीचे की घास उसके अपने शरीर से बहे खून तथा घायल गुलदार के फटे हुए पेट से निकले ढेर सारे खून से बिल्कुल सन गयी थी। उसके पैर फिसलने लगे थे। लेकिन इतने पर भी उसने अपनी जकड़ ढीली नहीं की और बाहों को तानकर और भी जोर से गुलदारों की खोपड़ियों को एक दूसरे से तथा बाद में एक पेड़ के तने से टकराना जारी रखा। टकराहट के कारण उनकी खोपड़ियों से निकलने वाली आवाज़ बड़ी अजीब लग रही थी।

"लेकिन कोटार के लिए अब अधिक मेहनत करना ज़रूरी नहीं रह गया था। गला घुटने और बुरी तरह चोट खाने के कारण थोड़ी ही देर में गुलदारों ने दम तोड़ दिया और उनके सुन्दर शरीर ढीले पड़कर ज़मीन पर आ गिरे। और, कोटार भी उनके ऊपर ही लुढक गया। वह थककर चूर हो चुका था। लेकिन अब भी उसकी पकड़ ढीली नहीं पड़ी थी और वह आखीर तक उनके गलों को भींचता रहा।

"अन्त में, वह उठ खड़ा हुआ। उसके पैरों के पास दम तोड़ते हुए गुलदारों के शरीर अब भी रह-रहकर काँप उठते थे। उस समय कोई यही सोचता कि अब कोटार वहीं लेट जायगा और आराम करेगा। लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया। घावों पर मरहम-पट्टी कराने के बाद वह आगे फिर से अपनी यात्रा पर चल पड़ा।"

एक बार पादेरीखत्ता के पशु-केन्द्र के एक बछड़े पर हमला करते हुए एक गुलदार को मैंने घायल कर दिया था। इस खत्ते के पशु-पालक इस गुलदार से बहुत परेशान थे। वे इसके नाश के लिए इतने उत्साहित थे कि मेरी गोली की आवाज़ सुनकर काफ़ी बड़ी संख्या में वहाँ जमा हो गये। इस बीच घायल गुलदार अपनी जान बचाकर पास के नाले के मुँह पर उगी हुई घनी झाड़ियों में जा छिपा।

सब लोगों को घायल गुलदार से दूर रहने की हिदायत देकर मैं अपने हाथी पर नाले की दूसरी ओर पहुँचा। जब मैं गुलदार के पीछे लौटकर भागने का रास्ता ढूंढ़ रहा था तो अचानक मुझे दूसरी ओर लोगों की चीख-चिल्लाहट सुनायी दी। मैं फिर दौड़कर उस जगह पहुँचा जहाँ मैंने गुलदार को गोली मारी थी। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

हुआ यह कि जब मैं वहाँ से इधर आया था तो शेरखाँ नाम का एक आदमी लोगों के बहुत मना करने पर भी बहादुरी दिखाते हुए लाठी लेकर उस झाड़ी में घुस गया जिसमें घायल गुलदार छिपा था। जैसी कि आशंका थी, मौका देखकर गुलदार एकदम से उस पर झपट पड़ा। लाठी उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरी। गुलदार उसे ज़मीन पर गिराकर उस पर चढ़ बैठा। लेकिन तभी चरवाहे और दूसरे लोग लाठियाँ लेकर जोरों से चिल्लाते हुए उसकी मदद के लिए दौड़ पड़े। इतने सारे लोगों को चिल्लाते और अपनी ओर आते देखकर गुलदार घबरा गया और शेरखाँ को छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

शेरखाँ बुरी तरह से घायल हो चुका था। वह शारीरिक चोट से अधिक इस बात से दुखी था कि इतने लोगों के सामने उसकी किरकिरी हो गयी थी। मैं उसे हाथी पर लादकर अपने साथ रेस्ट-हाउस में ले आया। मैंने उसके घावों को पोटेशियम परमेंगनेट से साफ करके उन पर दस प्रतिशत मर्करीक्रोम का घोल लगा दिया। कुछ ही दिनों में वह ठीक हो गया। उसके घाव भरने लगे, लेकिन खंडित गर्व से उत्पन्न हुआ दिल का घाव नहीं भर सका। उसका नाम शेरखाँ हमेशा के लिए कलंकित हो चुका था। दूसरे दिन मैंने इस घायल गुलदार को मार कर शेरखाँ का बदला चुका दिया।

मेरे मित्र हकीमुद्दीन ने बहुत से गुलदार मारे थे। लेकिन अपने छप्पनवें गुलदार के शिकार में तो उन्हें जैसे अपनी जान से ही हाथ धो लेना पड़ता। उन्होने झाँसी से लगभग २७ मील दक्षिण तालबेहाट में डेरा डाल रखा था। वहाँ उन्होंने एक ऐसे गुलदार को मारा जो गाँव से एक बकरी उठा ले गया था और ऊँची पहाड़ी पर बने तालबेहाट के पुराने किले के आसपास की चट्टानों में छिपा था। जब हकीमुद्दीन घायल गुलदार का पीछा करते हुए वहाँ पहुँचे तो उसने अचानक उन पर हमला कर दिया। हकीमुद्दीन अपनी राइफल से लैस थे। गुलदार के छलांग लगाते ही उन्होंने राइफल का घोड़ा दबा दिया। लेकिन दुर्भाग्य से गोली नहीं लगी। अब शिकारी और शिकार दोनों आपस में गुत्थमगुत्था हुए पहाड़ी के तिरछे ढाल पर तेज़ी से लुढकने लगे। बीच में एक जगह एक चट्टान

का कोना इस तरह उभरा हुआ था कि हकीमुद्दीन उसमें अटक गये और गुलदार छिटक कर कुछ फुट नीचे एक दूसरी चट्टान पर जा गिरा। हालांकि हकीमुद्दीन ने इस बीच राइफल को अपनी पकड़ से अलग नहीं होने दिया था, लेकिन इस समय वह उनके लिए बेकार थी, क्योंकि उसका बोल्ट जाम हो गया था और साइट निकल चुके थे। इस बीच एक ग्रामीण ने गुलदार पर अपनी तोड़ा बन्दूक दाग दी। गुलदार पलट कर उसकी ओर झपटा। सौभाग्य से हकीमुद्दीन अपनी राइफल का बोल्ट ठीक करने में सफल हो गये और गुलदार उस ग्रामीण को अपनी घातक चपेट में ले सके, उसके पहले ही उन्होंने गोली मार कर उसका काम तमाम कर दिया।

घायल होने पर गुलदार शेर की तरह शायद ही कभी गुर्राता है या कराहता है। इस समय वह बिल्कुल चुप रहता है और अपनी स्थिति का ज़रा भी पता नहीं देता। इस हालत में छेड़े जाने पर भी वह केवल तभी हमला करता है जब वह ऐसा करना ठीक समझता है।

सुरई में एक घायल गुलदार ने मुझे बड़ा नाच नचाया था। मैं उसका पीछा करने लगा। जहाँ उसके खून के निशान नज़र आने खत्म हो गये थे वहाँ मैं अपने हाथी पर खड़ा हो गया और इधर-उधर नज़र दौड़ा कर देखने लगा। मेरा ख्याल था कि मैं हाथी की पीठ की इस ऊँचाई पर पूर्ण सुरक्षित हूँ। हाथी एक-एक पैर उठाकर सावधानी से आगे बढ़ने लगा। इतने में अचानक गुलदार न मालूम कहाँ से हथगोले की तरह उछल कर हाथी के पिछले पैरों पर झपटा। इससे हाथी घबराकर भड़क गया और भाग निकला। सौभाग्य से हमारे रास्ते में अधिकांश पेड़ों की डालियाँ काफ़ी ऊँची थीं। इसलिए हमारे सिर किसी डाली से नहीं टकराये। बाद में हाथी ने आगे बढ़ने से ही इनकार कर दिया और गुलदार वहाँ से साफ़ निकल भागा। हमने उसे बहुत ढूँढ़ा लेकिन वह पकड़ में नहीं आया।

गढ़वाल के प्रसिद्ध शिकारी मुकंदीलाल को एक बार एक घायल गुलदार के साथ बड़ा बुरा अनुभव हुआ था। एक बार एक गुलदार कहीं से टेहरी नगर में आ निकला और उसने नगर की एक सड़क में एक गधे को मार दिया। उन दिनों हिमालय क्षेत्र के इस छोटे-से नगर में अक्सर गुलदार निकल आते थे। मुकंदी ने १९३८ से १९४३ के बीच कुल ११ गुलदार मारे थे।

मरे हुए गधे की लाश पर एक लालटेन रख दी गयी ताकि अगर देर रात में गुलदार आये तो दिखायी दे सके। गढ़वाल में यह तरीका अक्सर अपनाया जाता है। सारा इंतज़ाम करके मुकंदी सड़क की दूसरी ओर सामने वाले मकान की

खिड़की में बैठ गये। गुलदार सूरज डूबने के बहुत पहले ही अपने शिकार के पास वापस लौटा। मुकंदी ने निशाना साध कर गोली चलायी लेकिन गुलदार बचकर भाग निकला और महाराजा के पुराने और परित्यक्त महल के बाग में कहीं छिप गया।

दूसरे दिन सुबह मुकंदी ने घायल गुलदार की खूब ढुंढ़ाई की। अंत में मालूम हुआ कि वह एक घनी झाड़ी में छिपा है और आसानी से बाहर आने के लिए तैयार नहीं है। उस पर खूब पत्थर फेंके गये। अंत में किसी तरह वह बाहर आया। मुकंदी ने गोली चलायी, लेकिन निशाना चूक गया और गुलदार वापस भाग कर फिर से उसी जगह जा छिपा। लोग भीड़ लगा कर चिल्लाने लगे और फिर से पत्थर फेंकने लगे। परेशान होकर कुछ देर बाद गुलदार फिर से झपटता हुआ बाहर आ गया। लेकिन इस बार उसे वापस नहीं लौटना था। मुकंदी ने अपनी बंदूक में बची आखिरी गोली भी दाग दी, लेकिन इस बार भी गुलदार बच गया। अब वह सीधा मुकंदी पर टूट पड़ा। मुकंदी से भिड़ते ही उसने अपने दाँत उनके दायें कंधे पर गड़ा दिये। गनीमत थी कि उसने मुकंदी के गले में दाँत नहीं गड़ाये थे। सौभाग्य से बंदूक अब भी मुकंदी के हाथ में थी। जब उन्होंने बंदूक से गुलदार को मारना शुरू किया, तो उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी। जब उसने मुकंदी-लाल के गले पर वार करना चाहा तो वे अपने हाथ की कोहनी पर उसे रोकते हुए अपने दाहिने पैर की ठोकर से उसे दूर हटाने की कोशिश करने लगे। साथ ही मौका देखकर बार-बार उसके सिर पर बंदूक के कुंदे से चोट करते थे। यहाँ तक कि कुंदा भी टूट गया। जब गुलदार के सिर की हड्डी चटक गयी तब कहीं उसने मुकंदी का पैर छोड़ा। मुकंदी ने अपने वार जारी रखे। गुलदार अंत में उनके पैरों के पास ही आ गिरा और धीरे-धीरे अपनी अंतिम साँसें गिनने लगा।

यह सारा नाटक दिन के उजाले में सैकड़ों आदमियों की आँखों के सामने हुआ। लोग डर कर अपनी छतों पर जा खड़े हुए थे और वहाँ से तमाशा देख रहे थे। महाराजा भी पहाड़ी की दूसरी ओर अपने महल में खड़े सारा दृश्य देखते रहे।

मुकन्दी को इस भिड़न्त में कोई गम्भीर चोट नहीं आयी लेकिन उन्हें अपने घावों की मरहम-पट्टी के लिए तीन महीने तक अस्पताल में पड़े रहना पड़ा।

रानीपुर में एक बार मैंने एक ऐसे गुलदार को घायल किया जो मेरे काफ़िले के एक ऊंट के बच्चे पर हमला करना चाहता था। दूसरे दिन सवेरे इस घायल गुलदार का पीछा करते हुए मुझे शिवालिक की पहाड़ियों के ढालों पर जो भयानक

अनुभव हुआ उसे मैं कभी नहीं भूल सकूँगा। मैं इस मुठभेड़ का विस्तार से वर्णन करने की बजाय इतना ही बता देना पर्याप्त समझता हूँ कि इस मामले की चरम परिणति उस समय उपस्थित हुई जब गुलदार पता नहीं कहाँ से अचानक उछलकर मेरे और मेरे शिकारीके बीच आ खड़ा हुआ। लेकिन तभी मेरे शिकारी ने बन्दूक दाग दी। गुलदार को गोली लगी और साथ ही वह इतना घबरा गया कि अपना सन्तुलन खो बैठा। वह कई फुट नीचे खड्ड में जा गिरा और वहीं ठण्डा हो गया।

अफ्रीका में भी कुछ शिकारियों को घायल गुलदारों के बड़े भयानक अनुभव हुए हैं। कार्ल ऐकले नामक एक अमरीकी चर्मप्रसाधक (टैक्सीडरमिस्ट) की १८९६ में अफ्रीका की अपनी पहली यात्रा में ही एक घायल गुलदार से भिड़न्त हो गयी। एक मादा गुलदार अचानक उनके ऊपर कूद पड़ी। हमला करते ही गुलदार ने उनका दाहिना हाथ दबोच लिया। और उनके हाथ से राइफल छूट कर दूर जा गिरी। अपने इस अनुभव के बारे में उन्होंने लिखा है—"इस प्रकार उस मादा गुलदार की दाढ़ों से मेरा गला बचा रहा और दूसरा लाभ यह हुआ कि उसके पिछले पैर भी मेरे पेट की पहुँच से काफ़ी दूर लटके रहे। अब बायें हाथ से मैंने उसका गला पकड़ लिया और उसके मुँह से अपना दायाँ हाथ छुड़ाने की कोशिश शुरू की। लेकिन यह आसान नहीं था। मुझे बहुत धीरे-धीरे ही सफलता मिल सकती थी। जब मैं बायें हाथ से उसका गला दबाता था तो उसके दाँतों की पकड़ कुछ ढीली हो जाती थी और वह मेरे हाथ को एक-दो इंच और नीचे से पकड़ लेती थी। इस तरह एक-एक इंच करके मैंने अपनी पूरी दायीं बाँह उसके मुँह से लगभग बाहर करली। अन्त में जब मैं दायीं बाँह को करीब-करीब आज़ाद करा चुका तो मैं ज़मीन पर आ गिरा। अब फिर मेरा दायाँ हाथ उसके मुँह में था। और वह मेरे नीचे पड़ी हुई थी। मेरा बायाँ हाथ उसके गले पर कसा हुआ था और मेरे घुटने उसकी छाती पर थे। अपनी कोहनियाँ मैंने उसकी दोनों बगलों में गड़ा रखी थीं। इस प्रकार बुरी तरह से फड़फड़ाते हुए उसके अगले पैरों को मैंने इस तरह से चौड़ा कर रखा था कि उसके भयानक पंजे मेरी कमीज़ फाड़ने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते थे।" कार्ल ने केवल अपने हाथों की ताकत से ही मादा गुलदार का खात्मा कर दिया। इस मुठभेड़ में उन्हें जो घाव लगे उनका इलाज करवाने के लिए उनको छः महीने तक अस्पताल में रहना पड़ा था (११)।

अफ्रीका में आखेट-यात्रा (सैफारी) का आयोजन करने वाली एक कम्पनी केर

एण्ड डाउने के इरिक रंडग्रेन को दक्षिण-पश्चिमी केनिया के नारोक क्षेत्र में एक गुलदार ने बुरी तरह ने नोंच डाला था। डैव लूनैन नामक एक अन्य गोरे शिकारी को भी उत्तरी टाँगानिका में मन्यारा झील के पास इसी प्रकार का अनुभव हुआ था।

घायल गुलदार से सबसे अधिक भयानक संघर्ष मन्यारा झील के पास ही एक वार हुआ था (१२)। जनवरी १९५९ में वैरन वान वोसेलैजर मन्यारा की झील के पास पहुँचे। वे एक ऐसे पूर्ण विकसित गुलदार की खोज में थे जिसकी लम्बाई कम से कम ढाई मीटर हो। उनके गोरे शिकारी डेविड ओमानी ने उनके लिए इसका वीड़ा उठाया। डेविड एक अनुभवी शिकारी था और वीस वर्ष की आयु का होने के पूर्व ही पच्चीस गुलदारों का शिकार कर चुका था।

वैरन ने दो अफ्रीकी सूअर, एक छोटा हिरन और एक इम्पाला मारा ताकि गुलदारों के लिए पर्याप्त चारे का इन्तजाम किया जा सके। फिर इन जानवरों को ऐसे इलाकों में जहाँ गुलदारों के मिलने की आशा थी, पेड़ों पर रख दिया गया। अगले कुछ ही दिनों के दौरान पाँच गुलदार इन जानवरों के आसपास देखे गये, लेकिन इनमें से कोई भी वैरन की शर्त के अनुसार ढाई मीटर लम्बा नहीं था। वैरन को तो बस ऐसा ही गुलदार चाहिये था, अन्य किसी से उसे कोई मतलव नहीं था।

अन्त में एक और सूअर मारा गया और उसकी लाश उनके कैम्प से लगभग दो मील दूर एक पेड़ पर टाँग दी गयी। दूसरे दिन सवेरे डेविड चारे की देखभाल के लिए गया तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस भारी लाश का काफ़ी वड़ा अंश गायव हो चुका था। ज़ाहिर था कि यह किसी वहुत वड़े गुलदार का ही काम था।

शाम को डेविड के साथ वैरन उस जगह पहुँचे तो उन्हें वहाँ एक वहुत वड़ा गुलदार मिला। वह पेड़ के पास खड़ा उस सूअर की लाश के वाकी वचे हुए भाग को ललचायी नज़रों से देख रहा था। वैरन ने निशाना साध कर गोली चला दी। गोली गुलदार की दोनों पसली को छीलती हुई निकल गयी, और वह एक तरफ़ उछलकर लम्वी घासों की झाड़ी में जा छिपा। डेविड ने भी अपनी ·४१७ की दोनाली राईफल दागी, लेकिन उसका निशाना भी चूक गया।

अब वैरन और डेविड आसपास के इलाके का ज़रा अच्छी तरह से निरीक्षण करने के उद्देश्य से एक छोटे-से टीले पर चढ़ गये। डूबते हुए सूरज के हल्के प्रकाश में लम्बी घासें लहरा रही थीं और गुलदार उन्हीं में कहीं छिपा बैठा था। लेकिन

वहाँ किसी भी तरह की आवाज़ नहीं आ रही थी। चारों ओर गहरी चुप्पी छायी हुई थी।

इसी बीच बन्दूक ढोने वाले लड़के सलीम ने एक दुनाली बन्दूक भरकर डेविड के हाथ में थमा दी। घायल गुलदार के मुकाबले के लिए इससे बढ़िया हथियार और क्या हो सकता था। बैरन को वहीं टीले पर खड़ा छोड कर डेविड नीचे उतर आया और बहुत सावधानी से कदम रखते हुए 'डोंगा' (घास की झाड़ी) की ओर बढ़ने लगा। सलीम भी उसके पीछे-पीछे चल रहा था। डेविड ने झाडी को निशाना बनाकर एक गोली छोड़ी ताकि जवाब में गुलदार कुछ हरकत करे। फिर कुछ और आगे बढ़कर उसने एक गोली और छोड़ी। लेकिन कुछ नहीं हुआ। झाड़ी में से किसी तरह की आवाज़ नहीं आयी ऐसा लगता था, जैसे गुलदार वहाँ था ही नहीं। डेविड दोबारा अपनी बन्दूक भरकर धीरे-धीरे झाड़ी में घुस गया। कुछ आगे बढ़ने पर अचानक उसे हवा में तैरती हुई एक पीली-सी लहर दिखाई दी और गुलदार उछलकर उसके सिर पर आ पहुँचा। उसने बन्दूक के दोनों घोड़े एक साथ दबा दिये। लेकिन संयोग से दोनों ही निशाने चूक गये, और दूसरे ही क्षण गुलदार उसे ज़मीन पर पटककर उस पर चढ़ बैठा। बन्दूक उसके हाथ से छूट चुकी थी। अपना गला बचाने के लिए वह इधर-उधर मुड़ने और सिर झटकने के साथ ही गुलदार के तेज़ दाँतों के लिए कभी अपना कन्धा और कभी बायाँ हाथ आगे करने के अलावा और कुछ कर ही नहीं सकता था। इस भयानक क्षण में सलीम ने अपना शिकारी चाकू निकाल कर गुलदार की पीठ में घोंप दिया। गुलदार दर्द से छटपटाया और उलट कर तुरन्त वहाँ से गायब हो गया।

बैरन आदमी और गुलदार की इस भयानक कुश्ती को शुरू से अन्त तक देखने के अलावा और कुछ नहीं कर सके। गोली वे चला नहीं सकते थे, क्योंकि उसमें खतरा था कि कहीं गुलदार को लगने की बजाय गोली डेविड को न लग जाय। अन्त में सबने मिल कर डेविड को कैम्प में पहुँचाया, जहाँ से उसे पचहत्तर मील दूर अरूशा के अस्पताल में भेज दिया गया।

डेविड के जाने के बाद सलीम ने कमान संभाली। अपने साथी मुटिया को साथ लेकर वह अंधेरा होने के पहले ही उस झाड़ी के पास जा पहुँचा। जब वह 'डोंगा' के पास खड़ा हाथ का इशारा करते हुए अपने दोस्त को बता रहा था कि 'बवाना' (मालिक) पर किस जगह हमला हुआ था, तभी अचानक वही गुलदार फिर से निकल आया और सीधा उसके चेहरे पर झपट पड़ा। सलीम पीठ के बल

नीचे आ गिरा। उसने गोली चलाई लेकिन वह न जाने कहाँ निकल गई। गुलदार अपने पैने दाँत और पंजों से सलीम के शरीर को चींथने लगा। मुटिया ने उस पर गोली चलायी, लेकिन इससे गुलदार की सिर्फ़ पूँछ कटकर रह गयी। गुलदार दर्द से चीख कर छटपटाया तो मुटिया ने दूसरी नाली का घोड़ा भी दबा दिया। उसका यह निशाना भी बेकार गया लेकिन गुलदार पहली चोट और गोलियों की तेज आवाज़ से इतना घबरा गया था कि सलीम को वहीं छोड़कर भाग निकला और घास में कूद कर फिर से गायब हो गया। उसकी कटी हुई पूँछ वहीं पड़ी रह गयी। सलीम की एक आँख बाहर निकल आयी थी। उसे बैरन खुद अरूशा के अस्पताल में छोड़ने के लिए गये।

वह घायल गुलदार अब भी आज़ाद घूम रहा था। अब कोई ऐसा आदमी नहीं बचा था जो इस मुहीम को जारी रखता। अंत में उन लोगों ने सहायता के लिए नैरोबी फ़ोन किया।

दूसरे ही दिन वहाँ से सेल्बी एन्ड होमबर्ग की सैफारी कम्पनी का गोरा शिकारी थियो पोटगेटर सहायता के लिए आ पहुँचा। उसने ज़्यादा वक्त बरबाद नहीं किया। ज़रूरी पूछताछ करने के बाद उसी दिन दोपहर को वह उस जगह जा पहुँचा, जहाँ दो दुर्घटनाएँ हो चुकीं थी। बैरन और मुटिया भी उसके साथ गये। बैरन फिर उसी टीले पर पहरा देने के लिए जा बैठे जो वास्तव में चींटियों द्वारा बनाया गया टीला था। थियो बन्दूक तान कर धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ सीधा घास की झाड़ी की ओर बढ़ने लगा। उसने वहाँ आगे-पीछे बहुत ढूँढ़ा, लेकिन कहीं भी गुलदार नज़र नहीं आया। वह बैरन को सूचना देने के लिए लौटने लगा कि गुलदार झाड़ी से कहीं अन्यत्र जा चुका है, लेकिन तभी अचानक घायल गुलदार ने न मालूम कहाँ से चुपचाप उस पर हमला कर दिया। गुलदार गुस्से से पागल हो रहा था। थियो ने गोली चलायी और वह गुलदार के कँधे पर लगी, लेकिन इसका जैसे उस पर कोई असर ही नहीं हुआ। उसने उछलकर अपने पंजों से सीधे थियो के सीने पर वार किया। थियो के हाथ से बन्दूक छूट गयी और वह पीछे की ओर लुढ़क गया। गुलदार का एक कंधा घायल हो चुका था, लेकिन फिर भी वह अपनी तीन टाँगों के बल पर थियो पर फिर से झपटने की तैयारी करने लगा। इतने में मौका देखकर बैरन ने उसकी गर्दन में गोली मार दी। गुलदार ने वहीं दम तोड़ दिया। इस प्रकार तीन आदमियों के घायल होने के बाद कहीं बैरन को ढाई मीटर का गुलदार हाथ लग सका!

यहाँ मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि सभी वन-अधिकारियों और शेर के शिका-

रियों का यह नैतिक कर्तव्य है कि वे हर प्रकार का संकट झेलकर ग्रामवासियों को घायल शेरों, सिंहों और गुलदारों से मुक्ति दिलाने का प्रयास करें। किसी शेर या गुलदार के घायल होकर खुला घूमने से गाँव और जंगल का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और सारा कारबार ठप्प हो जाता है। इन घायल जानवरों का पीछा करते समय मुझे अपने जीवन में अनेक संकटपूर्ण क्षणों का सामना करना पड़ा है और कई बार तो मैं मौत के मुँह में जाने से बाल-बाल बचा हूँ।

वर्षों के संकटमय अनुभव से मुझे यह शिक्षा मिली है कि जब कभी किसी घायल शेर या गुलदार का शिकार करना हो तो राइफल की बजाय दुनाली बन्दूक का ही अधिक भरोसा करना चाहिये। इसके अलावा, हालांकि किसी शिकारी ने कभी इसका उल्लेख नहीं किया है, लेकिन मेरा अनुभव है कि किसी घायल गुलदार के अप्रत्याशित आक्रमण का मुकाबला करना हो तो ·३२ या ·४० की रिवाल्वर हमेशा तैयार रखने से बड़ी मदद मिलती है। दस में से नौ मामलों में यह होता है कि जब गुलदार हमला करता है तो उसके धक्के से शिकारी के हाथ से बन्दूक छिटककर दूर जा गिरती है और अगर शिकारी किसी तरह से बन्दूक को थामे रहने में सफल हो जाता है तो भी उसे ठीक से दागने का मौका उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि बन्दूक की नली उसके और गुत्थमगुत्था होकर लड़ने वाले शत्रु के बीच में आ जाती है और निशाना साध पाना असंभव हो जाता है। ऐसे मौके पर कमर में बँधी हुई रिवाल्वर बहुत काम की सिद्ध होती है।

इससे मुझे शिकारियों के बीच इस विषय में चलने वाले विवाद का स्मरण हो आता है कि गुलदार के शिकार के लिए किस प्रकार के हथियार का उपयोग करना चाहिये। मैंने आमतौर से ·४००-·४५० की दोनाली राइफ़ल का ही इस्तेमाल किया है। अधिकांश शिकारी दोनाली बन्दूक और बड़ी गोलियों के प्रयोग के पक्ष में हैं। लगभग २५ गज़ की दूरी से इस्तेमाल किये जाने पर बड़ी गोलियों का प्रयोग सबसे अधिक प्रभावकारी सिद्ध होता है। गुलदार ज़रा मुलायम खाल का जानवर होता है। इसके लिए ठोस गोलियों की बजाय मुलायम सिरेवाली गोलियों का उपयोग ज़्यादा अच्छा रहता है।

अफ्रीका के पाँच सबसे भयानक जानवरों को गिनाते हुए जे० सी० स्मट्स (प्रसिद्ध फील्ड मार्शल स्मट्स के पुत्र) ने निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत किया है :

"इन विषयों को ध्यान में रखते हुए शिकार के जानवर आजकल किन देशों और प्रदेशों में पाये जाते हैं, उनको लंगड़ा कर देने वाली पहली गोली चलाने में

क्या कठिनाई होती है, उनका पीछा करने में कौन-कौन से खतरे हैं, उनके सीधे हमले का सामना करने की क्या समस्याएँ हैं, तथा उनका अपना क्या महत्त्व है —मैं प्राथमिकता की दृष्टि से पहला गौरवमय स्थान सिंह को देना चाहूँगा, इसके बाद भैंसे, तेंदुए, हाथी और गैंडे का स्थान आता है। इनमें हाथी और गैंडे को समान स्तर पर रखा जा सकता है।" (१३)

भारत की दृष्टि से इस सूची में इस प्रकार संशोधन किया जा सकता है :

(१) शेर, (२) भैंसा, (३) गुलदार, (४) हाथी। भारतीय गैंडा—एक सींग वाला बड़ा गैंडा—इतना खतरनाक नहीं होता कि उसे इस सूची में सम्मिलित किया जा सके।

जानवरों की यह अफ्रीकी सूची किसी भी माने में अपरिवर्तनीय नहीं है। ऐंड्र्यू होमवर्ग ने कहा है कि " अगर प्रत्येक दृष्टि से विचार किया जाय तो अफ्रीका के पांच बड़े शिकारी-जानवरों में तेंदुए को सबसे खतरनाक जानवर माना जा सकता है।"

घायल गुलदारों का पीछा करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना लाभप्रद सिद्ध होगा :

(१) रात के समय किसी गुलदार को गोली मारने के बाद अपने मचान से नीचे मत उतरिये।

(२) खाकी वर्दी की बजाय खूब उजले एकदम सफेद कपड़े पहनिये। सफेद टोप पहनिये और उसका पट्टा अपनी ठुड्डी पर कस लीजिये। बड़ी गोली वाली बन्दूक भरकर अपने कंधे पर लटकाइये और एक बढ़िया रिवाल्वर भरकर मजबूती से अपने कमरपट्टे में लटका लीजिये। राइफ़ल का परित्याग कीजिये।

(३) किसी को अपने साथ चलने के लिए मजबूर मत कीजिये। केवल एक या दो अनुभवी शिकारियों को ही अपने साथ रखिये। आप स्वयं गुलदार की खोज कीजिये और अपने साथी शिकारियों को खून के निशान या पैरों के निशान ढूँढ़ने का काम सौंपिये।

(४) अगर ज़्यादा खून गिरा है तो समझ लीजिये कि घाव केवल सतही था और किसी मार्मिक स्थल पर गोली नहीं बैठी। फेफड़े के घाव से कुछ झागदार और हल्के रंग का खून निकलता है। गुर्दे में गोली लगने से खूब गहरे रंग का खून निकलता है। अगर खून में हड्डियों के छोटे टुकड़े भी मिले हुए हों तो समझिये कि गोली कंधे में लगी है। दिल में

गोली लगने पर भी गुलदार छिपने की सबसे पास की जगह तक आसानी से पहुँच सकता है। सिर्फ गले में गोली लगने पर वह वहीं गिर पड़ता है। घायल गुलदार घायल शेर की तरह पानी की खोज नहीं करता।

(५) छोटी और मामूली-सी नज़र आने वाली झाड़ी के पास भी अत्यधिक सावधानी से जाइये। किसी से झाड़ी पर पत्थर फेंकने के लिए कहकर अतिरिक्त सुरक्षा और सतर्कता की व्यवस्था कर लीजिए। हर व्यक्ति की जेब में कुछ छोटे पत्थर भी होने चाहिये। सावधान रहिये कि छोटी से छोटी झाड़ी से गुलदार उछलकर बाहर आ सकता है।

(६) अगर गुलदार अचानक हमला करे तो कुछ क्षण के लिए निश्चेष्ट खड़े रहिये। गोली आखिरी मौके पर ही चलाइये। घायल गुलदार छलाँग लगाकर भागने के पहले आमतौर से कुछ देर के लिए ठहरता है।

(७) घायल गुलदार का पीछा किसी ऊँचाई से नीचे ढाल की ओर ही कीजिये। वह ऐसे मौके पर चढ़ाई की ओर बहुत कम जाता है।

(८) घायल गुलदार का पीछा करने के लिए सधाये हुए हाथी अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। लेकिन सावधान रहें कि हाथी भड़क न जाय। गुलदार हथगोले की तरह एकदम तेज़ी से उछलकर हाथी पर वार करता है।

(९) सबसे ज़्यादा ज़रूरी यह है कि आप प्रतीक्षा करें, ध्यान से देखें और सुनें—फिर आहिस्ता-आहिस्ता सावधानी के साथ आगे बढ़ें। गुलदार को खोजने में और उसका पीछा करने में कभी भी जल्दबाज़ी से काम न लें। याद रखें कि गुलदार चुपचाप कहीं दुबका रहता है और आपकी नहीं, अपनी सुविधा से मौका देखकर वार करता है।

(१०) पोटैशियम परमेंगनेट अपने पास तैयार रखिए। गुलदार का आक्रमण होने की दशा में अगर घावों को तुरन्त पोटाश से साफ कर लिया जाय तो उनके पकने या सड़ने की संभावना कम हो जाती है। गुलदार द्वारा घायल किये गये लोगों को टिटैनस रोग (धनुषटंकार) बहुत कम होता है।

गुलदार घायल होने पर बहुत जल्दी ठीक हो जाता है। अपने घावों को ठीक कर लेने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है। बस, इसे केवल एकांत की आवश्यकता होती है। कई बार तो बड़ी गोलियाँ तक इसके शरीर में हमेशा के लिए धँसी रह जाती हैं।

वहराइच के जंगलों में एक बार गुलदार ने रेस्ट-हाउस में ही रहना शुरू कर दिया था। उससे सम्वन्धित एक घटना का उल्लेख यहाँ उपयोगी सिद्ध होगा।

वरसात के महिनों में जवकि जंगल का सारा कामकाज ठप्प हो जाता है और वन-अधिकारी केन्द्रीय कार्यालयों में लौट आते हैं तो रेस्ट-हाउस खासतौर से खाली पड़े रहते हैं। एक बार वरसात के दिनों में सुजौली का रेस्ट-हाउस एक गुलदार का अड्डा वन गया। वह दिन में उसके स्टोर के कमरे में आराम करता था और सिर्फ शाम को ही शिकार की तलाश में निकलता था।

जव अक्टूवर में कैम्प का मौसम शुरू हुआ तो सहायक वन-अधिकारी एस० एन० खान कुछ दिनों के मुकाम के लिए पहली वार वहाँ पहुँचे। चौकीदार ने उनको वताया कि आजकल यहाँ एक गुलदार ने भी डेरा डाल रखा है और आपको रेस्ट-हाउस में उसके साथ हिस्सा वँटाना पड़ेगा। लेकिन उन्होंने इस वात को मज़ाक में उड़ा दिया।

दूसरे दिन सुवह जंगल का रेंजर उनसे मिलने रेस्ट-हाउस में आया तो उसने इस वात की पुष्टि की। लेकिन जव उन्होंने रेस्ट-हाउस पर किये गये गैर कानूनी कव्ज़े की वात को मानने से इनकार किया तो रेंजर ने उनको वह कमरा दिखला दिया, जिस पर गुलदार ने पूरी वरसात भर कव्ज़ा वनाये रखा था। कमरे का दरवाज़ा वंद था। जव खान साहव ने धक्का देकर दरवाज़ा खोला तो उन्हें अपने जीवन का सवसे भयानक अनुभव हुआ—उन्होंने देखा कि गुलदार उस समय भी वहां आराम कर रहा था।

इस अनावश्यक हस्तक्षेप से चिढ़कर गुलदार झपट कर कमरे से वाहर निकल आया। उसने खान साहव पर हमला कर दिया, और रेंजर ने वीच-वचाव करने की कोशिश की तो उसे भी घायल कर दिया। इसके वाद वह चुपचाप फिर से कमरे में लौट गया।

वन-अधिकारी और रेंजर दोनों को अस्पताल भेजना पड़ा। खान साहव ने सोला-टोपी पहन रखी थी फिर भी उनके सिर में गहरा घाव आया था। लेकिन रेंजर को ज़्यादा चोट नहीं आयी, क्योंकि उसने पगड़ी पहन रखी थी।

इस दुर्घटना से जो हड़वड़ी और शोर-शरावा हुआ, इससे गुलदार को कुछ असुविधा अनुभव हुई। वह निराश होकर कमरे से वाहर आ गया और फिर हमेशा के लिए वहाँ से चला गया।

गुलदार के कमरे की अच्छी तरह जाँच करने पर पता चला कि वह घायल था और मक्खियों से वचने के लिए ही रेस्ट-हाउस में रहने लगा था। उसका कम-से-

कम एक घाव साही के काँटे से लगा मालूम होता था।

आमतौर से ऐसा विश्वास किया जाता है कि घायल होने पर अगर कोई गुलदार बच निकलता है तो वह बाद में मानवभक्षी बन जाता है, क्योंकि तब वह शिकार के अन्य जानवरों का पीछा करने के योग्य नहीं रह जाता है। लेकिन यह बात मानवभक्षी सिंहों और शेरों के लिए तो सही हो सकती है, गुलदारों के लिए नहीं। इसका कारण यह है कि इस प्रजाति के अन्य बड़े जानवर तो केवल जंगली जानवरों के शिकार पर ही निर्भर करते हैं, लेकिन गुलदार ज़रूरत पड़ने पर पालतू जानवरों को भी खा सकता है। सभी मानवभक्षी गुलदार मनुष्य के साथ ही पालतू जानवरों का भी बारी-बारी से शिकार करते रहते हैं, क्योंकि पालतू जानवर उन्हें आसानी से मिल जाते हैं। कोई भी बदनाम मानवभक्षी गुलदार आज तक इतना घायल नहीं देखा गया कि वह मनुष्यों के साथ ही पालतू जानवरों का भी शिकार न कर सके।

अफ्रीकी लोगों में यह अन्धविश्वास प्रचलित है कि गाँव ('क्राल') में किसी व्यक्ति की मृत्यु गाँव भर के लिए अशुभ होती है, इसलिए वे अपने बीमार और बूढ़े लोगों को मरने के लिए गाँव के बाहर झाड़ियों में छोड़ आते हैं। ये बेचारे आत्मरक्षा में असमर्थ होते हैं और आसानी से गुलदारों के शिकार बन जाते हैं। इसी तरह भारत में नदियों के किनारे अक्सर अधजली लाशें गुलदारों को मिल जाती हैं। इस प्रकार उन्हें मानव-माँस का पहला स्वाद मिलता है।

लोगों में यह आम धारणा प्रचलित है कि जब किसी गुलदार को एक बार मानव-माँस का स्वाद मिल जाता है तो फिर वह और किसी चीज़ को खाना पसन्द नहीं करता। लेकिन हम पहले ही बता चुके हैं कि गुलदार अपने भोजन के मामले में किसी प्रकार के सोच-विचार में नहीं पड़ता। यह हर प्रकार का माँस खा लेता है—ताज़ा हो या बासी, यहाँ तक कि अपने ही जैसे किसी अन्य गुलदार का माँस क्यों न हो। इसलिए इसकी सम्भावना बहुत कम प्रतीत होती है कि एक-दो बार मानव-शरीर का भक्षण कर लेने से किसी गुलदार में मानव-माँस के लिए कोई खास तलब पैदा हो जाती होगी। हाँ, यह माना जा सकता है कि ऐसी हालत में दोबारा मानव-माँस मिलने पर वह उसे खाने से इन्कार नहीं करेगा। इसलिए इस बात में कोई तुक नहीं है कि गुलदार अन्य जीवों के माँस और मानव-माँस में किसी प्रकार का अन्तर कर पाता है और मानव-माँस के स्वाद को याद रख पाता है।

इस विषय को और आगे बढ़ाने के पहले मनुष्य पर आक्रमण करने वाले गुल-

दार और मानवभक्षी गुलदार का अन्तर स्पष्ट कर लेना ठीक होगा। अक्सर ऐसा होता है कि जंगल में चरवाहे मवेशियों को चराते रहते हैं और मौका देखकर कोई गुलदार झुंड से अलग हो जाने वाले किसी बछड़े पर हमला कर देता है। अगर कोई चरवाहा बीच-बचाव की कोशिश करता है तो वह गुलदार के क्रोध का शिकार बन जाता है। इसी तरह अगर कोई किसी घायल गुलदार को छेड़ता है तो उसे भी गुलदार के क्रोध का स्वाद चखना पड़ता है। इसके अलावा, कहीं घिर जाने पर या अपने बच्चों की रक्षा के लिए भी गुलदार निश्चित रूप से आक्रमण करता है। इनमें से किसी भी मामले में वह ऐसी वृत्ति का प्रदर्शन नहीं करता जिससे यह प्रमाण मिल सके कि उसे मानव-माँस में कोई खास दिलचस्पी होती है। वह तो केवल आक्रामक को वहाँ से दूर भगाना चाहता है।

केनिया के मानवशास्त्री लुई लेकी का मत है कि प्रकृति ने मनुष्य को एक ऐसी दुर्गंध (या कुस्वाद) से युक्त बनाया है कि वह छछूंदर की तरह बिल्ली प्रजाति के जीवों के लिए अभक्ष्य होता है, और आमतौर से वे मनुष्य का मांस खाना पसन्द नहीं करते।

इसके अलावा यह भी याद रखना चाहिये कि मनुष्य दो पैरों पर चलता है, और उसका यह रूप अन्य सभी जीवों की तरह जंगल के जीवों को भी बड़ा विचित्र लगता है और वे उससे खौफ़ खाते हैं। मेरा ख्याल है कि इसी कारण गुलदार मनुष्य से दूर रहता है। लेकिन जब एक बार उसे यह मालूम हो जाता है कि मनुष्य कितना कमज़ोर है और अपनी रक्षा की दृष्टि से कितना अक्षम है तो मनुष्य के प्रति उसका सारा भय समाप्त हो जाता है।

गुलदार आमतौर से उस स्थिति में मानवभक्षी हो जाते हैं, जब किसी बस्ती के आसपास पहली बार किसी आदमी से उसकी मुठभेड़ होती है और उन्हें मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलता का पता चल जाता है। जब ये एक बार मनुष्य से डरना भूल जाते हैं तो फिर ये मनुष्यों को भी गाँव के पालतू पशुओं के समान ही मानने लगते है, जिन्हें आसानी से मारा जा सकता है।

बिहार के मुख्य वन-संरक्षक एस० पी० साही का विचार है कि बाँका (भागलपुर) की पहाड़ियों के जंगल लगातार साफ़ होते रहे हैं और वहाँ कृषि का क्षेत्र बढ़ता रहा है, इसीलिए शिकार के जानवर वहाँ लगभग समाप्त हो गये हैं। इस प्रकार जब गुलदार का प्राकृतिक भोजन दुर्लभ हो जाता है और उसे मारने के लिए जंगली जानवर नहीं मिलने पाते तो वह मुख्य रूप से पालतू पशुओं पर निर्भर रहने के लिए विवश हो जाता है। मनुष्य पहली बार तो दुर्घटनावश किसी मुठभेड़

में घायल होता है, लेकिन वाद में वह भी पालतू पशुओं की तरह उनके लिए शिकार का एक जीव वन जाता है।

गढ़वाल में भी इसी प्रकार की स्थिति है। इसलिए वहाँ अक्सर मानवभक्षी गुलदार निकल आते हैं। इसी इलाके में रुद्रप्रयाग का कुख्यात मानवभक्षी गुलदार आठ साल तक कहर ढाता रहा था (१४)। जब वह १२५ आदमियों को मार चुका था तब १ मई १६२६ को कारवेट साहव ने एक वकरी के चारे पर उसे गोली मारी थी। सारा इलाका इस गुलदार से आतंकित हो उठा था। इस मानव-भक्षी गुलदार के पिछले वायें पैर पर गोली के घाव का निशान था। इसी टाँग पर शिकंजे से लगी वड़ी खरोंच भी थी और सारे शरीर पर घावों के कई निशान थे। इतने पर भी यह ५०० वर्ग मील से वड़े इलाके में गाय-बैल को मारता रहता था, पालतू जानवरों को खोजने के लिए घरों में घुस जाता था, और अक्सर मनुष्यों पर भी हमला करता रहता था। इसलिए किसी भी हालत में यह नहीं माना जा सकता कि यह जंगली जानवरों के शिकार में अक्षम हो गया था और इसीलिए मानवभक्षी वन गया था। वास्तविकता यह है कि इसे शिकार के लिए पर्याप्त जंगली जानवर ही नहीं मिलते थे।

दक्षिणी अफ्रीका के घास के मैदानों में भी गुलदार ऐसा ही व्यवहार करता है। वहाँ जंगली और शिकार के जानवरों के रहने के लायक जंगल खत्म होते जा रहे हैं। इसलिए गुलदार चट्टानी और पहाड़ी इलाके में चले गये हैं और आम-तौर से पालतू जानवरों के शिकार पर ही निर्भर करते हैं।

मानवभक्षी गुलदार की दुस्साहसिकता की सीमा नहीं रहती है। टर्नर (१५) ने जगेश्वर (अल्मोड़ा) के फ़ॉरेस्ट रेंजर एन० बी० तिवारी के एक अनुभव का उल्लेख किया है। तिवारी रसोईघर में बैठे खाना पका रहे थे कि अचानक एक मानवभक्षी गुलदार ने उन पर हमला कर दिया। तिवारी ने एक जलती हुई लकड़ी निशाना साध कर इस तरह फेंकी कि वह सीधी गुलदार के सिर पर जा बैठी—इस तरह उस दिन उनकी जान वची।

अफ्रीका में मानवभक्षी गुलदारों को मानवभक्षी सिंहों से कम खतरनाक नहीं माना जाता। अपने असाधारण साहस, चालाकी और धूर्तता के कारण तथा गाँव और वस्तियों का अच्छा परिचय होने के कारण ये इतने खतरनाक हो जाते हैं कि मानवभक्षी सिंहों की अपेक्षा इन्हें मारना कठिन होता है। चुपचाप चोरी से हमला करने की अपनी आदत के कारण गुलदार वस्ती के लोगों को इस बुरी तरह से आतंकित किये रहते हैं कि कुछ ही दिनों में वहाँ के आदिवासी उन्हें एक

भयानक प्रेतात्मा मान बैठते हैं। मौरिस रैयान ने अंगोला में दिन-दहाड़े घूमते रहने वाले मानवभक्षी गुलदारों की अनेक कहानियों का उल्लेख किया है। इनमें से एक कहानी में एक ऐसे गुलदार का उल्लेख है जिसने अलाव के पास सोये हुए आदमियों के एक गिरोह पर हमला कर दिया था। वह दो आदमियों को घायल करके सात फुट ऊँची ट्रक के ऊपर से बीस फुट लम्बी छलाँग लगा कर निकल भागा था!

इसी प्रकार ज़ाम्बेज़ी नदी के किनारे लुप्टा मार्ज के ऊपरी मुहाने पर स्थित अफ्रीकी गाँवों में कई वर्ष तक एक मानवभक्षी गुलदार का आतक कायम रहा, और अन्त तक उसे नहीं मारा जा सका था (१६)।

मानवभक्षी गुलदारों के भयानक कारनामों को देखकर दंग रह जाना पड़ता है। वे अकेले राहगीरों का रास्ता रोक लेते हैं, ऊँघते हुए गाड़ीवानों पर चढ़ बैठते हैं, पानी भरने के लिए या लकड़ी बटोरने के लिए जंगल में जाने वाली स्त्रियों और बच्चों को उठा ले जाते हैं तथा पालतू जानवरों की खोज में मवेशियों के बाड़ों में बेखटके घुस जाते हैं। गाँव की कोई जगह उनकी पहुँच से बाहर नहीं रह सकती। वे काफ़ी बड़े इलाके में घूमते रहते हैं और अपनी पहचान मिटाने के लिए रास्ते में कभी मनुष्य का और कभी किसी पालतू जानवर का शिकार करते चलते हैं। उनकी मार से कोई भी नहीं बच सकता। यहाँ तक कि ऐसे शिकारी भी मानवभक्षी गुलदारों के शिकार हो जाते हैं, जो किसी मनुष्य के शव पर रात को पहरा देने के लिए बैठते हैं।

सौभाग्य से मानवभक्षी सिंहों और शेरों की अपेक्षा मानवभक्षी गुलदारों की संख्या बहुत ही कम होती है। लेकिन उनकी संख्या की कमी उनको मारने के काम में उपस्थित होने वाली अत्यधिक कठिनाई से सन्तुलित हो जाती है, अर्थात् उनकी संख्या जितनी ही कम है उनका नष्ट करना उतना ही कठिन है।

गुलदारों की रहस्यमय गतिविधियों के कारण ही एशिया और अफ्रीका में अनेक अन्धविश्वास प्रचलित हो गये हैं। गढ़वाल में मानवभक्षी गुलदारों की गणना ऐसी प्रेतात्माओं में की जाती है, जिनके साथ विश्वासघात करके कोई भी सुखी नहीं रह सकता। मध्य प्रदेश में जंगल के इन प्रेतों को सन्तुष्ट रखने के लिए बकरे की बलि दी जाती है।

पूर्वी अफ्रीका में, खासतौर से टाँगानीका में, यह विश्वास प्रचलित है कि तेंदुए की आत्मा मनुष्य में प्रवेश कर जाती है। इस तरह के अभिशप्त व्यक्ति अपने को 'तेंदुआ-मानव' मानते हैं और तेंदुए की तरह ही व्यवहार भी करते हैं।

यह एक तरह का पुश्तैनी मतिभ्रम है जो पिता से पुत्र को प्राप्त होता है। डाक्टरों ने इस स्थिति को 'वृकोन्माद' (लाइकैंथ्रोपिया) या 'भेड़ियारोग' का नाम दे रखा है। पूर्वी कांँगो (किवू) में मुझे लोगों ने बताया था कि इस प्रकार के तेंदुआ-मानव धर्म-भीरु ग्रामीणों से काफ़ी बड़ी संख्या में बकरे, गाय और मुर्गे-मुर्गी आदि भेंट के रूप में वसूल कर लेते हैं ।

भारत के जंगली इलाकों के गाँवों में भी इस प्रकार के देवी-देवताओं के बहुत से मन्दिर मिल जाते हैं जो एक-दो बकरे की बलि प्राप्त करने के बाद ही किसी गुलदार के नाश के लिए आशीर्वाद देते हैं। मुसलमान फ़कीरों के ऐसे बहुत से मज़ार हैं, जहाँ शिकारियों को अपने अभियान की सफलता के लिए इसी प्रकार की क़ुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं ।

हमारे यहाँ क्षत्रिय, राजपूत और सिख अपने नाम के साथ 'सिंह' लगाते हैं और वीरता तथा साहस की दृष्टि से इस उपाधि से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार, पश्चिमी भारत की एक जाति अपने नाम के साथ 'सिंघल' लगाती है। काँगो में 'सिम्बा' (सिंह) नाम की एक जाति है जिसके सदस्यों ने कुछ समय पूर्व स्टैनलिविले के सभी विदेशी निवासियों को बन्धक के रूप में गिरफ्तार कर लिया था। ये लोग अपनी वीरता के प्रतीक के रूप में गुलदार की खाल धारण करते हैं ।

७. गुलदार का भविष्य

अपने वंश के बराबर जारी रहने की दृष्टि से गुलदार की स्थिति खासी अच्छी है। 'देश' और 'काल' दोनों के विचार से इसे कोई खतरा नहीं है। अपने बड़े भाई-बन्धुओं की अपेक्षा यह पृथ्वी के अधिक बड़े भाग में फैला हुआ है। इसके अलावा, यह अपनी संतानोत्पत्ति इतनी काफ़ी संख्या में करता है कि इसके वंश के कभी नष्ट होने की सम्भावना बहुत कम है।

ऐसा नहीं लगता कि गुलदार की संतानोत्पत्ति का कोई खास मौसम है, हालांकि गुलदार की विशेष 'आरा आवाज़' या साथियों को बुलाने के लिए लगायी जाने वाली गुहार और विडाल-युद्ध की ललकार आमतौर से जाड़े और गर्मी में सुनायी देती है। इसका गर्भकाल लगभग ९० से १०० दिन तक का होता है (ब्रिग्स्नेड के अनुसार ९२ दिन)। सामान्यत: इसके चार या कभी-कभी पाँच बच्चे तक होते हैं। इनमें से आमतौर से केवल दो जीवित रहते हैं और उनमें भी वयस्कता की आयु केवल एक को ही प्राप्त होती है। मुझे कभी किसी मादा गुलदार के साथ दो से अधिक बच्चे दिखायी नहीं दिये। इसी तरह जंगल में जाने वाले चरवाहों को भी गुलदार के आमतौर से केवल दो बच्चे ही इधर-उधर चट्टानों के बीच या पेड़ों के कोटारों में सावधानी से छिपाये हुए मिल जाते हैं।

गुलदार के बच्चे आमतौर से मार्च में ही दिखायी देते हैं। ये जन्म के समय अन्धे होते हैं। यह व्यवस्था प्रकृति ने इस उद्देश्य से कर रखी है कि बच्चे कहीं इधर-उधर नहीं भटकें और उसी जगह बने रहें जहाँ उनकी माँ उन्हें छोड़ती है, ताकि भेड़िये, लकड़बग्घे और इसी तरह के दूसरे हिंस्र जीव उन्हें खा न जायें। उनकी आँखें तीन या चार सप्ताह बाद खुलती हैं।

माता किसी एकान्त स्थान में अकेली ही बच्चों का लालन-पालन करती है। वह उन्हें नर गुलदार से भी बचा कर रखती है, जो अधिक चंचल और अधीर स्वभाव का होता है। वास्तविकता तो यह है कि मादा गुलदार गर्भ धारण के तुरन्त बाद ही नर से अलग हो जाती है और फिर उसके बारे में सब कुछ भूल जाती है। इस कहानी में सचाई का अंश बिल्कुल नहीं है कि नर गुलदार अक्सर एक नज़र यह देख जाता है कि मादा बच्चों का पालन-पोषण किस प्रकार कर

रही है। यह तो हमारी एक कल्पनामात्र है कि नर को कम-से-कम इतना तो करना ही चाहिये।

माँ अपने बच्चों को गर्दन के ऊपर की खाल के बल अपने मुंह में उठाकर इधर-उधर ले जाती है। वह उन्हें चलना-फिरना सिखाती है और यह भी बताती है कि शिकार के समय किस प्रकार दाँत मारना चाहिये। बच्चे माँ के साथ रहकर ही हर चीज़ को संदेह की दृष्टि से देखना सीखते हैं। वे धीरे-धीरे नैसर्गिक रूप से एकान्तप्रिय होते जाते हैं, अपने आपको छिपा कर रखते हैं और चलते समय आमतौर से जंगल के किनारे ही बने रहने की कोशिश करते हैं।

मुझे कभी किसी मादा गुलदार को अपने बच्चों को प्रशिक्षित करते हुए देखने का मौका नहीं मिला, लेकिन पीलीभीत के जंगलों में मैंने एक शेरनी को अपने बच्चों को सिखाते-पढ़ाते ज़रूर देखा था। मैं माला नामक स्थान में इस शेरनी के लिए चारे के रूप में बाँधे गये शिकार पर पहरा दे रहा था। सूरज छिपने के बाद ही धुंधलके में शेरनी मेरे मचान के पीछे आ पहुँची। वह लगभग एक घण्टे तक उस क्षेत्र का बहुत सावधानी से निरीक्षण-परीक्षण करती रही और रुक-रुककर कान लगाकर सुनती रही। यही नहीं, वह उस सड़क तक गयी जहाँ मेरा हाथी खड़ा था और मेरे संकेत का इन्तज़ार कर रहा था। महावत ने शेरनी को दूर से देख लिया और वह हाथी को वहाँ से अलग हटा ले गया।

जब वहाँ अन्धेरा होने लगा और शेरनी को विश्वास हो गया कि सब कुछ ठीक है, तो उसने एक विशेष स्वर में दहाड़ लगाकर अपने बच्चों को वहाँ बुला लिया। उसके दो बच्चे तुरन्त वहाँ दौड़ चले आये। वे अच्छे मोटे-ताज़े बिल्ले से कुछ ही बड़े थे। वे उछलते-कूदते पहले माँ के पास पहुँचे और फिर सीधे शिकार के पास जाने के लिए मचलने लगे। माँ ने नाराज़ होकर उनको इस तरह से झिड़का कि वे तुरन्त दौड़कर उसके पीछे हो लिए। इसके बाद माँ अपने बच्चों के साथ शिकार से लगभग पचास फुट दूर झाड़ी के पीछे छिपकर बैठ गयी। वहाँ वह इन्तज़ार करने लगी और बहुत चौकन्नी होकर इधर-उधर देखने और सुनने लगी। लगभग आधे घण्टे तक बिना ज़रा भी हिले-डुले, चुपचाप इन्तज़ार करने के बाद माँ ने बच्चों को आगे बढ़ने की अनुमति दी। दोनों खूब सावधानी के साथ अपने को झाड़ियों और पेड़-पौधों में छिपाते हुए शिकार की ओर बढ़ने लगे, और फिर शिकार पर टूट पड़े।

शेरनी चुपचाप अपनी जगह पर छिपकर बैठी रही और अपने बच्चों पर पहरा देती रही। उसने इस दावत में कोई हिस्सा नहीं लिया।

शेरनी को इस प्रकार अपने बच्चों को खाना खिलाते देखकर मैं मचान में बैठा-बैठा सोचने लगा कि पशु-जगत् के स्थायित्व में आक्रमण और हिंसा का ही नहीं, प्रेम और वात्सल्य का भी उतना ही महत्व है। अपने बच्चों को खाना खिलाते हुए और उनकी सुरक्षा की देखभाल करते हुए वह शेरनी मुझे वात्सल्य और संतान-प्रेम का एक जीता-जागता उदाहरण प्रतीत हुई। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि कैथोलिक पुराण पंथी ऐसे वात्सल्यमय जीवों के बारे में इस मान्यता को कैसे स्वीकार कर सके कि इनमें प्राण नहीं होता। मुझे तो भगवान बुद्ध की इस शिक्षा से बड़ी तसल्ली मिलती है कि सभी जीवधारी मनुष्य के ही समान हैं।

मुझे विश्वास है कि गुलदार के बच्चों का प्रशिक्षण भी इसी प्रकार होता है, जिस प्रकार शेर के बच्चों का होता है। मादा गुलदार बच्चों को चार-पाँच मास की आयु तक दूध पिलाती है और उसके बाद लगभग एक वर्ष तक अपने साथ रखकर शिक्षा देती है। गुलदार के बच्चे बहुत जल्दी सब कुछ सीख लेते हैं क्योंकि उनमें अपनी सुरक्षा और भरण-पोषण के लिए सक्रिय होने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, ठीक उसी तरह जिस तरह बिल्ली प्रजाति के अन्य जीवों की होती है।

मानव-शिशुओं की तरह ही जानवरों के बच्चों में भी अपने माता-पिता के अनुकरण और आदेश पालन की प्रवृत्ति भी स्वभाव से ही होती है। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण गुलदार के बच्चे आत्मरक्षा का पाठ पढ़ते हैं। और जंगल के अन्य हिंस्र जीवों से अपनी रक्षा करना सीख लेते हैं। जीव-जगत् की यह एक विशेषता है कि बच्चों के जीवन पर संकट आने की स्थिति में सभी माताएँ लड़ने-मरने के लिए तैयार हो जाती हैं। उस समय वे इतनी भयानक हो जाती हैं कि कोई भी आसानी से उनका सामना नहीं कर सकता। एक बार एक जगली मुर्गी ने मेरे हाथी पर आक्रमण कर दिया। वह अपने बच्चों की रक्षा के लिए उसे दूर भगाने की भरसक कोशिश करती रही। इसी तरह एक बार मेरी पत्नी ने एक मुर्गी को एक शेर का मुकाबला करते देखा था। उसने भी शेर को अपने चूज़ों से दूर भगाने की पूरी कोशिश की थी।

हालांकि इसमें कोई सन्देह नहीं कि गुलदार आमतौर से तब तक आक्रमण नहीं करता है जब तक उसे छेड़ा न जाय, लेकिन बच्चों के साथ घूमने वाली मादा गुलदार पर यह नियम लागू नहीं होता। उसे किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप सहन नहीं होता और कई बार तो वह अचानक ही राहगीरों पर हमला कर देती है, लेकिन इसके पीछे भी कोई कारण अवश्य होता है।

कभी-कभी गुलदार का सिंह या शेर से संयोग करवाकर संकर संतान उत्पन्न

करने का प्रयास किया जाता है। मुझे इस व्यर्थ के प्रयोग से बड़ी चिढ़ है। कोल्हापुर के चिड़ियाघर में एक नर तेंदुए और मादा सिंहनी के संकर बच्चे उत्पन्न हुए थे। सन् १९१२ में एक ऐसे ही सिंह-गुलदार संकर की खाल बम्बई की प्राकृतिक इतिहास सभा की ओर से लन्दन के ब्रिटिश म्यूज़ियम में भेजी गयी थी।

जापान के हानशीं चिड़ियाघर के डा० हिरोयुकी दोई ने गुलदार और सिंहनी के संयोग से १९१५ और १९१६ में उत्पन्न बच्चों के बारे में एक अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि इस प्रकार के अध्ययनों से लाभ क्या होता है।

यहाँ एक नर गुलदार और एक मादा शेरनी की विचित्र मैत्री का उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा, जिनके बारे में इफ्तिखार अली खान ने बंबई का प्राकृतिक इतिहास सभा की पत्रिका के दिसम्बर १९३६ के अंक में विस्तार से लिखा है। यह विचित्र जोड़ा मध्य भारत के सामलखेड़ी के संरक्षित वन में रहता था। गुलदार शिकार करता था और हमेशा शेरनी को उसमें हिस्सा देता था। अगर कभी वह कोई बड़ा जानवर मार लेता था तो उसकी देखभाल के काम में शेरनी पूरी तरह से उसका हाथ बँटाती थी। ये दोनों केवल मित्र ही थे या आपस में पति-पत्नी की तरह से रहते थे, इसका कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हो सका, क्योंकि दुर्भाग्यवश एक बार दोनों गोली के शिकार हो गये।

गुलदार को जंगल में अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। इनमें से कई उसके लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं, लेकिन अपने स्वाभाविक चौकन्नेपन, असाधारण सहज बोध, चतुरता और आश्चर्यजनक दुस्साहसिकता के कारण ही गुलदार अपनी जीवन-रक्षा कर पाता है। इसके अलावा, विभिन्न प्रकार की जलवायु के अनुरूप अपने आपको ढाल लेने की योग्यता, हल्की-फुल्की काया और सुगठित शरीर-रचना तथा बिना भोजन और बिना पानी के लम्बे समय तक रह लेने की क्षमता के कारण गुलदार हर प्रकार की परिस्थितियों में जीवित रह सकता है और अपनी संख्या में वृद्धि कर सकता है।

गुलदार ने अपनी बुद्धि और चालाकी के बल पर ही मनुष्य के हर छल-छद्म का, उसके साधनों और हथियारों का मुकाबला करना सीख लिया है। साथ ही, हर प्रकार के धोखे और लालच से बचने, भूख से पीड़ित होने पर भी संदिग्ध अवस्था में मिले शिकार को अस्वीकार कर देने तथा मनुष्यों द्वारा बिछाये गये जाल-फंदों को आसानी से भाँप लेने की अपनी विचित्र क्षमता के कारण गुलदार

अधिकाँश संकटों से बच निकलता है। लम्बे अनुभव से ही उसने अपने इन गुणों का विकास किया है।

इसीलिए यह देखकर आश्चर्य नहीं होता कि शेरों की अपेक्षा गुलदार बहुत कम मारे जाते हैं। निम्नलिखित आँकड़ों से भी यही स्पष्ट होता है :

अवधि : १९४८-१९५२

स्थान	मारे गये गुलदार	मारे गये शेर
उत्तर प्रदेश	१४८	४४८
मध्य प्रदेश	२९४	४०८
योग	४४२	८५६

स्पष्ट है कि शिकारियों को प्रति दो शेरों के पीछे केवल एक गुलदार को मारने में सफलता मिली। अगर यह स्मरण रखा जाय कि गुलदारों की संख्या शेरों की संख्या से कहीं अधिक है तो मारे गये गुलदारों से संबंधित ये आँकड़े इसका प्रमाण है कि गुलदार आत्मरक्षा में अधिक सक्षम होते हैं।

लेकिन गुलदार अफ्रीकी लोगों के ज़हरबुझे तीरों से अपनी रक्षा किसी भी हालत में नहीं कर पाता है। इस शताब्दी के आरंभ में गुलदार की सुन्दर खाल की माँग बहुत अधिक बढ़ गयी थी। यही कारण था कि अफ्रीका में लोगों ने गुलदार का बड़े पैमाने पर शिकार शुरू कर दिया था। बहुत थोड़े से पारिश्रमिक या पारितोषिक के बदले आदिवासियों ने गुलदारों को मारना शुरू कर दिया। अपनी स्वाभाविक चतुरता और चौकन्नेपन के बावजूद गुलदार इन आदिवासियों द्वारा फैलाये गये जाल-फंदों और गहरे गढ्ढों तथा इससे भी बढ़ कर इनके ज़हरबुझे तीरों की मार से अपने को बचा नहीं सके। जॉन एफ० बर्गर (७) ने लिखा है, "मैंने आदिवासी शिकारियों और ग्रामीणों से बहुत सस्ता सौदा करके गुलदार की सौ से अधिक बढ़िया खालें इकट्ठी कीं। इन खालों को बेचने के लिए मैंने अच्छी तरह से साफ़ कर लिया। एक-दो बहुत बढ़िया खालों के लिए तो मुझे १५ पौंड तक का मूल्य मिल गया।"

तीसरे दशक तक तो अफ्रीका के पूर्वी किनारे के किसी भी बंदरगाह पर दो-तीन पौंड में गुलदार की खाल मिल जाया करती थी, लेकिन इधर के वर्षों में तो स्थिति यह हो गयी है कि आरमंड डेनिस के कथनानुसार सोमाली गुलदार की एक अच्छी खाल के लिए न्यूयार्क में १५ हज़ार डालर तक प्राप्त हो जाते हैं। जब श्रीमती जैकेलिन केनेडी अमरीका की 'प्रथम महिला' थीं तब उन्हें सोमाली

सरकार ने कोट बनाने के लिए गुलदार की कुछ खालें उपहार में दी थीं जिनका मूल्य ३० हज़ार डालर कूता गया था। हाल में इसी प्रकार गुलदार की खाल का उपहार सोमाली सरकार ने अमरीका के उप-राष्ट्रपति की पत्नी श्रीमती म्यूरिल हम्फ्री को भी उनकी अफ्रीका-यात्रा के दौरान भेंट किया था। ये खालें इतने अधिक मूल्य की थीं कि श्रीमती हम्फ्री को इन्हें अपने देश के विदेश विभाग को सौंप देना पड़ा।

गुलदार की खालों के इन कल्पनातीत मूल्यों से संकेत मिलता है कि अफ्रीका में अब गुलदारों की संख्या कम होती जा रही है। गुलदारों की तेज़ी से घटती हुई जनसंख्या से चिंतित होकर ही कुछ अफ्रीकी राज्यों ने अपने यहाँ गुलदारों को संरक्षित पशुओं की सूची में सम्मिलित कर लिया है।

अगर सच ही कहना है तो कहा जा सकता है कि गुलदार बुद्धि की दृष्टि से मनुष्य के लगभग समकक्ष होता है—इसके अवचेतन मन में युगों से संकलित अनुभव ने, जो इसकी रहस्यमय सहज बुद्धि के रूप में प्रकट होता है, इसे इतना बुद्धिमान बना दिया है कि अगर मनुष्य विष का प्रयोग न करे तो इसे आसानी से पराजित नहीं कर सकता। अपनी सहजबुद्धि के बल पर ही यह मनुष्य द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले अधिकाँश जाल-फंदों और शिकंजों से आसानी से बच निकलता है।

परन्तु गुलदार का जीवन ही नहीं, समस्त पशु-जगत् का जीवन जिस तथ्य से संकट में पड़ गया है वह है जंगलों का बराबर नष्ट होते जाना। इस प्रकार जंगली जानवरों के जीवन का आधार ही नष्ट होता जा रहा है। एशिया और अफ्रीका दोनों ही जगह तेज़ी से बढ़ती हुई जनसंख्या का सीधा प्रभाव जंगलों पर पड़ रहा है और उनका क्षेत्रफल घटता जा रहा है। जंगल ही गुलदार को आश्रय और भोजन प्रदान करता है, और उसके रंगमय व्यक्तित्व और चरित्र को विकास का अवसर देता है। शिकारी, निशानेबाज़, जाल और फंदे बिछाने वाले लोग तथा पेशेवर शिकंजेबाज़ तो गुलदारों की संख्या कम करते ही रहते हैं, लेकिन हमेशा के लिए उनकी समाप्ति का दायित्व अगर किसी बात पर होगा तो वह है जंगलों की व्यापक बरबादी।

मनुष्य के हितों और जंगली जीवों के हितों में जो संघर्ष है उसे युक्तिपूर्ण ढँग से हल किया जाना चाहिये। जंगल जंगली जीवों को आश्रय प्रदान करता है और उनकी जीवन-रक्षा करता है इसलिए जंगल की सुरक्षा भौतिक और आर्थिक दोनों पहलुओं से आवश्यक है। पेड़ों को अंधाधुन्ध काटने और जंगल को नष्ट

करने से प्राकृतिक पर्यावरण नष्ट होता है, और इसका जंगली जीवों की उत्पादन क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। खाद्य-समस्या का हल यह नहीं है कि व्यापक क्षेत्र में कृषि-कार्य किया जाये, बल्कि सघन कृषि ही इसका एकमात्र हल है। इसलिए किसी देश की संतुलित अर्थ-व्यवस्था में वनों की जो आश्रयदायी और उत्पादन-संबंधी भूमिका होती है उसको ध्यान में रखकर ही भूमि के उपयोग की योजनाओं को निर्धारित किया जाना चाहिये। भूमि का एक अंश स्थायी रूप से वनों के लिए और वन के निवासी जीव-जंतुओं की वर्तमान और भावी संतति के लिए सुरक्षित कर दिया जाना चाहिये।

८. गुलदार के निकट सम्बन्धी

१. जैगुआर (पैंथेरा ओंसा)

गुलदार से सम्बद्ध अनेक प्रजातियों में अमरीकी जैगुआर ही इसका सबसे निकट सम्बन्धी मालूम होता है। 'नई दुनिया' का निवासी जैगुआर यों तो गुलदार की जाति—'पैंथेरा'—में ही सम्मिलित माना जाता है, लेकिन प्रकृति-विज्ञानियों ने उसमें और 'पुरानी दुनिया' के गुलदार में कुछ अन्तर भी माना है। 'एक ही छलाँग में शिकार पर चढ़ बैठने की क्षमता' के कारण दक्षिणी अमरीका के आदिवासी इण्डियनों ने इसका नाम 'जैगुओरा' रखा है। रूप-रंग के आधार पर इसके कुछ अन्य नाम भी प्रचलित हैं, जैसे, अमरीकी तेंदुआ, मैक्सिको का शेर, चिकत्तेदार शाही बिल्ली और छल्लेदार पूँछवाला गुलदार, आदि।

जैगुआर उत्तरी अमरीका के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र से लेकर मैक्सिको और अर्जेंटीना तक के भूभाग में पाया जाता है। यह उष्ण-कटिबन्धीय और अर्ध-उष्णकटिबन्धीय जंगलों का निवासी है, तथा इन क्षेत्रों के घास के मैदानों और रेगिस्तानों में भी कभी-कभी मिल जाता है।

सामान्य गुलदार की तरह जैगुआर का शरीर इतना लचकीला और मुलायम नहीं होता। यह कुछ अधिक बड़ा, भारी-भरकम और तगड़ा होता है। इसका हल्का पीला रंग गुलदार जैसा ही होता है। लेकिन इसकी एक मुख्य विशेषता यह होती है कि इसके धब्बों के बीच एक (या दो) काला दाग होता है, जो शरीर के निचले हिस्से की अपेक्षा पीठ पर अधिक स्पष्ट होता है। इसके कान खड़े होते हैं, और पीछे की ओर से काले होते हैं। इसके निचले ओंठ के नीचे एक ठोस काला दाग होता है। मैंने एक बार पीलीभीत (उत्तर प्रदेश) के जंगलों में एक गुलदार मारा था जिसमें कुछ धब्बों के बीच में जैगुआर की तरह ही काले-काले दाग थे। जैगुआर के सिर, कन्धों और पैरों पर ठोस काले दाग होते हैं जो इसके पेट पर जाकर कुछ लम्बे होने लगते हैं।

जैगुआर का भोजन स्थान-विशेष में मिलने वाले शिकार के जानवरों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। यह पालतू जानवरों के साथ ही अन्य हर प्रकार के जानवरों को खा सकता है, जैसे, अल्पाका, इलामा, तापिर, हिरन,

स्लॉथ, सूअर, कुतरने वाले जानवर, चिड़ियाँ आदि। यह बड़े जानवरों का मुकाबला गुलदार की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह से कर सकता है। गुलदार की तरह यह पानी मे भयभीत नहीं होता। जैगुआर पानी में घुसकर मछली मार सकता है, कछुओं को पकड़ सकता है और मौका पड़ने पर घड़ियालों को भी मार सकता है। गुलदार से इस तरह के काम की कभी उम्मीद नहीं की जा सकती।

जैगुआर चिड़ियाघरों में बड़े मज़े में रह लेता है। सन्तानोत्पत्ति की दृष्टि से यह गुलदार के समान ही है। इसका गर्भकाल ९५-१०८ दिन होता है (डी० जे० ब्राँड के अनुसार)। बच्चों की संख्या २ से ४ तक होती है। जंगलों में एक माता ही बच्चों की देखभाल करती है। जैगुआर के बच्चों की आँख तीसरे सप्ताह में खुलती है। ये बच्चे गुलदार के बच्चों की अपेक्षा अधिक दिनों तक अपनी माता के साथ लगे रहते हैं।

गुलदार की तरह ही जैगुआर की खाल का रंग भी कई प्रकार का होता है। नम इलाकों में काले रंग के जैगुआर अधिक मिलते हैं। लेकिन इनका रंग काला होने पर भी अगर तेज़ रोशनी में देखा जाय तो उस पर गहरे काले धब्बे स्पष्ट देखे जा सकते हैं। रेगिस्तानी इलाकों में जैगुआर का रंग काफ़ी हल्का होता है। लेकिन जैगुआर के रंग में मिलने वाला यह अन्तर केवल व्यक्तिशः ही होता है, एक प्रजाति के रूप में यह वास्तविक रंग के बच्चों को ही जन्म देता है। अनेक बार सामान्य रंग के किसी जैगुआर के बच्चों में कोई बच्चा बिलकुल काले रंग का भी हो सकता है।

जैगुआर गुलदार की अपेक्षा कम सीधा होता है और इसे सधाना और भी मुश्किल होता है। यह पेड़ पर चढ़ने में तो बहुत अच्छा होता ही है, बड़ा कुशल तैराक भी होता है। जंगलों के लगातार कम होते जाने और खेती-बारी के इलाके के बढ़ते रहने के कारण जैगुआर की संख्या अर्जेंटीना में घटती जा रही है। इसी प्रकार मेक्सिको में भी इसका भविष्य अन्धकारमय है।

२. हिम तेंदुआ ('अन्सिया अन्सिया' ग्रे, १८६७)

कुलू घाटी में १२,००० फुट की ऊँचाई पर पहाड़ी चरागाहों में भूरे भालुओं का पीछा करते समय मुझे हिम तेंदुए के चिह्न तो अनेक बार देखने को मिले, लेकिन तेज़ी से लोगों की नज़र से दूर हो जाने वाला यह जानवर स्वयं कभी दिखायी नहीं दिया। यह प्रायः 'औंस' के नाम से भी जाना जाता है। यह ऐसी कठिन जगहों में ही मिलता है कि सामान्यतः शिकारियों को बहुत कम दिखायी

देता है। औंस पश्चिमी हिमालय के अपने निवासस्थल में (पामीर, लेह और तिब्बत) प्रायः हिमरेखा के आसपास ही रहता है जहाँ ऊँचाई पर मिलने वाले बलूत और भोज वृक्ष समाप्त होने लगते हैं और उनकी जगह घास के मैदान शुरू हो जाते हैं। यह पूर्वी रूसी तुर्किस्तान (अल्ताई पर्वत) तथा त्यान-शान पर्वतमाला के इलाके में भी पाया जाता है। इसके अलावा, यह चीनी तुर्किस्तान में आस्तिन तागू के क्षेत्र में भी मिलता है।

इसकी खाल का रंग हल्का पीलापन लिए हुए भूरा होता है और निचला हिस्सा सफ़ेद होता है। गुलदार से मिलते-जुलते काले धब्बे सिर्फ़ इसकी पीठ पर ही साफ़-साफ़ नज़र आते हैं। ये धब्बे नीचे की ओर दोनों तरफ़ हल्के पड़ते जाते हैं और निचले हिस्से में तो बिलकुल गायब हो जाते हैं। इसके सिर और पैरों पर ठोस काले धब्बे होते हैं। इसके सीधे खड़े कानों के किनारे काले होते हैं और पीछे की ओर एक बड़ा सफ़ेद धब्बा होता है। यह एक सुन्दर और शर्मीला जानवर है, और गुलदार की तरह चालाक नहीं है। यह सिर्फ़ रात को ही शिकार के लिए निकलता और दिन के समय चट्टानों में छिपकर आराम करता रहता है। हिम-मंडित पर्वत-शिखरों पर यह अपनी खाल के रंग के कारण बड़ी कठिनाई से नज़र आता है। किसी की नज़र से ओझल होने के लिए इसे केवल इतना ही करना होता है कि यह जहाँ खड़ा है वहीं चुपचाप जमकर बैठ जाय, क्योंकि पृष्ठ-भूमि के रंग के साथ इसका रंग आसानी से मिल जाता है।

औंस स्वभावतः उन्हीं जानवरों का शिकार करता है जो इसके निवास-क्षेत्र में पाये जाते हैं, जैसे जंगली भेड़ (शापू और भराल), बकरी, हिरन (आइबेक्स, मारखोर, ताहर, और सेरौ) तथा कुतरने वाले जीव। यह अक्सर पहाड़ी चरा-गाहों पर धावा बोलता रहता है, जहाँ गर्मी के मौसम में पालतू भेड़-बकरियाँ और कुत्ते वगैरह एकत्र होते हैं। कभी-कभी यह झुण्ड से पिछड़ने वाले किसी मेमने को उठा ले जाता है। लेकिन यह उन लम्बे-चौड़े और खूँखार भोटिया कुत्तों से भिड़ने की गलती कभी नहीं करता क्योंकि इन कुत्तों के गले में ऐसे पट्टे पड़े होते हैं जिनमें तेज़ काँटे और कीलें जड़ी रहती हैं।

अपने सुरक्षात्मक रंग, दुर्गम स्थानों में स्थित अपने अड्डों तथा रात में ही शिकार के लिए निकलने की अपनी आदत के कारण औंस कभी भी शिकारी की गोली का निशाना नहीं बनता। इसे आमतौर से भेड़ का चारा डालकर गड्ढे या जाल में फँसा कर पकड़ा जाता है। सुन्दर खाल ही वास्तव में इसका सबसे बड़ा शत्रु है। श्रीनगर के पश्मीने वालों की दूकानों में औंस की खालें खूब बिकती हैं।

औंस भी सन्तानोत्पत्ति सम्बन्धी आदतों, गर्भकाल और सन्तान की संख्या आदि की दृष्टि से गुलदार के समान ही होता है।

हिम तेंदुआ 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त का पक्षपाती होता है। यह हमेशा अपने-आप में खोया रहता है, और शायद ही कभी किसी मनुष्य पर आक्रमण करता है। जानवर पकड़ने वाले पेशेवर शिकारियों को इसे पकड़ कर वन्दी वनाने में कोई खास दिक्कत नहीं होती, क्योंकि यह स्वभाव से ही शान्त और विनम्र होता है। लगभग प्रत्येक औंस के पैरों पर ऐसी चोट के निशान होते हैं, जो इन्हें पकड़ने के लिए लगाये जानेवाले शिकंजों या फन्दों के कारण लगी होती हैं।

३. बादली तेंदुआ ('नेओफ़ेलिस नेबुलोसा' ग्रे, १८६७)

गुलदार का एक और सम्वन्धी है जो 'वादली तेंदुआ' कहलाता है और जिसे प्राणि-शास्त्रियों ने पृथक् जाति में माना है। एक पृथक् जाति के सदस्य के रूप में इसकी मान्यता का मुख्य कारण वहुत मामूली-सा है—इसके दाँतों की व्यवस्था तथा इसकी कंठिका (हाइऑइड) की वनावट गुलदार से कुछ भिन्न होती है। अपने अन्य सभी सगे-सम्वन्धियों की तुलना में बादली तेंदुए के सूआ-दाँत (कैनाइन्स) सवसे अविक लम्वे होते हैं, और इसके प्राचीन कृपाण-दंत पुरखों की याद दिलाते हैं। वोर्नियो में इस प्रकार के तेंदुए के लम्वे दाँतों की वड़ी माँग रहती है और इनके लिए वीस डालर तक का मूल्य प्राप्त हो जाता है। वहाँ के कयान तथा अन्य आदिवासी इन दाँतों को अपनी वीरता और साहस के प्रतीक के रूप में कानों में लटकाते हैं। हालाँकि वहाँ इसके दाँतों की इतनी अविक माँग है, लेकिन वैसे वहाँ इसको उसी प्रकार पवित्र और अवध्य माना जाता है जिस प्रकार भारत में गाय को माना जाता है।

इस तेंदुए की कंठिकास्थियों की वनावट ऐसी होती है कि ये सिंह, शेर, गुलदार, जैगुआर और हिम तेंदुए की तरह दहाड़ नहीं सकते—हालाँकि गुलदार, जैगुआर और हिम तेंदुए को भी किसी ने आज तक दहाड़ते नहीं सुना। वादली तेंदुए की वोली को गुरगुराने और कुनमुनाने की आवाज़ जैसा वताया गया है। अपनी कंठिकास्थियों की वनावट के कारण ही इसे 'गुरगुराने वाली सवसे वड़ी विल्ली' कहा गया है।

बादली तेंदुआ मुख्य रूप से पूर्वी एशिया का जानवर है। यह पूर्वी हिमालय पर्वतमाला (नेपाल, भूटान, सिक्किम और असम) में तथा उत्तरी वर्मा, दक्षिणी

चीन, फारमूसा, मलयेशिया, सुमात्रा और वोर्नियो में पाया जाता है। चीन में इसे 'पुदीना तेंदुआ' कहा जाता है, क्योंकि इसके धब्बों का आकार पुदीने की पत्तियों से मिलता-जुलता होता है। मलयेशिया में यह 'वृक्ष तेंदुआ' कहलाता है, क्योंकि यह अक्सर पेड़ पर रहता है।

बादली तेंदुआ उन्हीं इलाकों में बड़ी संख्या में पाया जाता है, जहाँ बड़े घने जंगल होते हैं और भोजन की कोई कमी नहीं होती है। यह इन जंगलों में बहुतायत से मिलने वाले स्तनपायी जीवों और चिड़ियों का शिकार करता है। शिकार के पीछे दौड़-भाग करने की बजाय यह पेड़ पर से सीधे छलाँग लगाकर शिकार पर कूद पड़ना ज़्यादा पसन्द करता है। बंदर, हिरन, सूअर और साही—सभी जानवरों को यह चाव से खाता है। यह पालतू जानवरों को भी शौक से खाता है और उनका पीछा करते समय खासा खूँखार हो सकता है। खाना खाते वक्त किसी प्रकार की छेड़छाड़ पसन्द नहीं करता और अगर ऐसे समय कोई दखल देता है तो उसके साथ किसी तरह की रियायत नहीं करता। यह अपने मारे हुए जानवर को पूरी तरह से अपने कब्ज़े में रखना चाहता है और गुलदार की तरह मामूली से संदेह के कारण उसे कभी नहीं छोड़ता।

घने वृक्षों की छाया में पनपने वाले इस जानवर के शरीर पर के धब्बों को देखने से पता चलता है कि गोल धब्बों से लम्बे धब्बों और धारियों का विकास किस प्रकार हुआ होगा। इसकी खाल के भूरे-पीले रंग की पृष्ठभूमि पर गुलदार जैसे फूल की आकृति के धब्बों की जगह गोल, चौकोर, आयताकार, षट्कोण आदि विभिन्न प्रकार के काले धब्बे होते हैं जो प्रायः बीच से खोखले होते हैं। बच्चों की बजाय वयस्क आयु के जानवरों में ये धब्बे अधिक स्पष्ट होते हैं।

बादली तेंदुए चेयेनी माउण्टेन चिड़ियाघर (कोलोराडो, अमरीका) तथा राष्ट्रीय ज़ूलॉजिकल पार्क (वाशिंगटन, अमरीका) में बिना किसी दिक्कत के रहे हैं और वहाँ इन्होंने बच्चे भी दिये हैं। बंदी-जीवन में आमतौर से इनके दो बच्चे होते देखे गये हैं। प्राकृतिक जीवन में इनकी कितनी सन्तान होती है और ये उन्हें किस तरह पालते हैं, इसके बारे में बहुत कम जानकारी प्राप्त हो सकी है।

बादली तेंदुआ सीधे और खिलवाड़ी स्वभाव का होता है, तथा इसे आसानी से पाला जा सकता है। अगर इसे भोजन के समय न छेड़ा जाय तो यह मनुष्य पर कभी आक्रमण नहीं करता। आरमंड डेनिस (११) ने वोर्नियो के बादली तेंदुए के एक ऐसे जोड़े का उल्लेख किया है, जिसने अपने मारे हुए बन्दर की हिफाज़त के लिए आदमियों पर आक्रमण कर दिया था। बादली तेंदुए की यह आदत शेर

से मिलती-जुलती है। एक बार मैं पीलीभीत में शारदा नहर के उस हिस्से में जहाँ नहर दो भागों में विभक्त होती है, शेर के मारे हुए जानवर का पता लगा रहा था। लाश घसीटने के निशान का पीछा करते हुए हम—मैं और मेरा शिकारी—शेर के पास जा पहुँचे। वह अपने शिकार को खा रहा था। हमें देखते ही वह इतनी जोर से दहाड़ा कि हम वहाँ से भाग खड़े हुए।

४. चीता ('एसोनीनिक्स, जुवाटस', ब्रूक्स, १८२८)

एक पृथक् जाति के रूप में हिम तेंदुए और बादली तेंदुए की अपेक्षा चीते का वर्गीकरण अधिक ठोस आधार पर हुआ है। चीता वास्तव में एक बिल्कुल भिन्न प्रकार का जानवर है और देखने में बिल्ली की अपेक्षा कुत्ते से अधिक मिलता-जुलता है। इसकी टाँगें लम्बी होती हैं, और पैर कुत्ते जैसे होते हैं। इसके पंजे कम मुड़े हुए, मुथरे, आवरणहीन और खुले हुए तथा बहुत कम सिकुड़ने वाले होते हैं। इसके पैरों की गद्दियाँ कुछ कड़ी और खुरदरी होती हैं, ताकि इसे बहुत तेज़ी से दौड़ने और एकदम ठहरने में मदद दे सकें।

इसकी खाल का रंग, धब्बे और डिज़ाइन गुलदार से मिलते-जुलते होते हैं, लेकिन मोटे तौर पर ही। ज़रा अच्छी तरह से देखा जाय तो मालूम होगा कि गुलदार-जैसी पृष्ठभूमि पर इसके धब्बे ठोस काले होते हैं, खोखले और फूलों की आकृति के नहीं। ये धब्बे इसकी पीठ पर अधिक घने होते हैं ओर निचले सफेद हिस्से की ओर हल्के पड़ते जाते हैं। इसका सिर इसके आकार को देखते हुए बहुत छोटा और चेहरा चपटा होता है। इसकी आँखों के कोनों से दो काली धारियाँ नाक की दोनों तरफ से होती हुई मुँह के कोनों तक जाती हैं। नर और मादा दोनों की गर्दन पर कुछ बड़े और घने रोएँ होते हैं। ये रोएँ जैसे आरम्भिक अयाल की याद दिलाते हैं। चीते की भी मूँछें होती हैं, लेकिन उतनी स्पष्ट नहीं जितनी गुल-दार की होती हैं। इसके कान छोटे होते हैं और आँख की पुतलियाँ गोल होती हैं।

चीते के दाँत उतने प्रभावकारी नहीं होते। इसके बड़े और छोटे दोनों ही प्रकार के दाँत गुलदार की अपेक्षा छोटे होते हैं। इसके पंजे गुलदार की अपेक्षा मुथरे होते हैं, और इन्हें यह किसी पेड़ पर रगड़-रगड़ कर तेज़ करता रहता है। इसके लिए यह एक ही पेड़ का बार-बार उपयोग करता है। चीते को फँसाने के जाल और फंदे भी लोग आमतौर से इन्हीं पेड़ों के पास लगाते हैं।

चीता मुख्य रूप से अपनी दृष्टि के बल पर शिकार करता है। इसकी श्रवण-

चित्र १०. गुलदार बिल्ली जैसे चौकन्नेपन और फुर्ती के लिए प्रसिद्ध है।

चित्र ११. गुलदार के नटखट वच्चे ।

चित्र १२. चीते के धब्बे ठोस होते हैं।

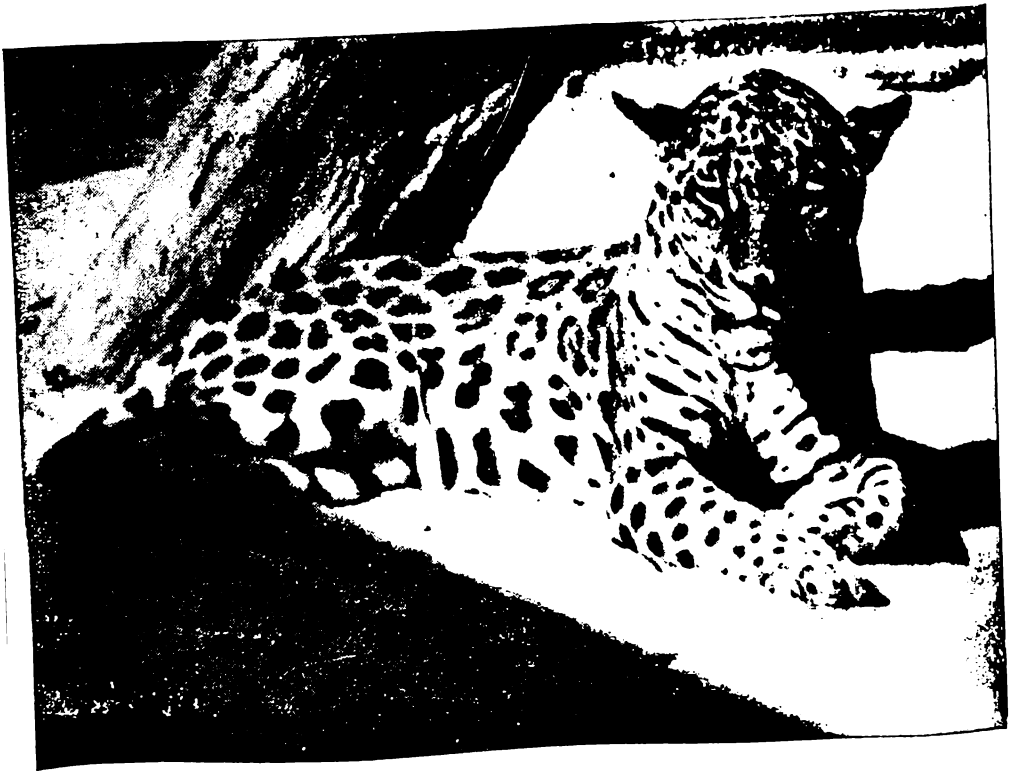

चित्र १३. जैगुआर—अपनी शाही शान में।

शक्ति और घ्राणशक्ति दोनों ही कमज़ोर और द्वितीय महत्व की होती हैं। शायद इसकी घ्राणशक्ति श्रवणशक्ति से अधिक अच्छी होती है। गुलदार के ठीक विपरीत, यह केवल दिन की रोशनी में शिकार करता है।

चीता जब संतुष्ट होता है तो घुरघुराने की हल्की आवाज़ करता है, उत्तेजित होने पर ज़ोर से दहाड़ता है और खाते समय भी प्रसन्नता की ध्वनि उत्पन्न करता है। मैंने एक चीते को दिल्ली के चिड़ियाघर में अपने पिंजरे में पीड़ा से कराहते सुना है। उसकी पूँछ में चोट आ गयी थी।

चीता शिकार के लिए आमतौर से जोड़े में निकलता है। यह हिरनों और दूसरे जानवरों को दौड़ा कर उनका पीछा करता है। गुलदार और बिल्ली प्रजाति के अन्य बड़े जानवर शिकार के समय इन्तजार करने और घात लगाने की नीति का प्रयोग करते हैं, लेकिन चीते का इस नीति में कोई विश्वास नहीं होता। यह आक्रमण के समय किसी प्रकार की गोपनीयता नहीं बरतता और खुले आम हमला करता है। यह रात में नहीं, दिन-दहाड़े शिकार करता है। चीता पहले धीरे-धीरे चहलकदमी करते हुए अपने शिकार को खोजता है। जब शिकार नज़र आ जाता है तो फिर एक क्षण की भी देर लगाये बिना तेज़ी से उसकी ओर दौड़ पड़ता है, और देखते-देखते ६० मील प्रति घंटा की रफ़्तार पकड़ लेता है।[१] चीता ३-४ मील तक अपनी यही रफ़्तार बनाये रख सकता है, और इतनी दूरी में आमतौर से अपने शिकार से आगे निकल जाता है। अगर इस दौड़ में असफल रहता है तो फिर प्रयास छोड़ देता है और बहुत निराश और दुःखी होकर बैठ रहता है। जब यह दौड़ लगा कर शिकार को पकड़ने में सफल हो जाता है तो उसे वहीं मारकर खाने बैठ जाता है। चीता अपने मारे हुए जानवर को घसीट कर कहीं नहीं ले जाता और उसे कहीं छिपाने की कोशिश भी नही करता। इसका खाने-पीने का ढँग बड़ा गंदा होता है। इधर-उधर बिखेर कर खाने के बाद यह अपनी राह चल देता है और फिर भूल कर भी उस जगह वापस नहीं लौटता। मारे गये शिकार के पास वापस लौटने में जो खतरा है उसके प्रति इसकी सहज बुद्धि स्वयं ही इसे आगाह कर देती है।

चीता उत्तरी अफ्रीका के भूमध्यसागरीय किनारे पर मिस्र, लीबिया और मोरक्को के घास के लम्बे-चौड़े और खुले मैदानों (सवाना) में पाया जाता है।

---

१. इंग्लैंड के ग्रेहाउंड रेसिंग एसोसिएशन ने एक बार हैरिंगे में घड़ी से चीते की दौड़ की रफ़्तार नापी थी। सबसे तेज़ ग्रेहाउंड कुत्ता ४२ मील प्रति घंटा की रफ़्तार से दौड़ा, जबकि चीता ६० मील प्रतिघंटा की रफ़्तार पर पहुँच गया।

यह सोमालिया में तथा सूडान और नाइजीरिया के उष्णकटिबंधीय जंगलों से लेकर दक्षिण अफ्रीका तक में मिलता है। एशिया में ईरान ही इसका वास्तविक निवास-स्थान था और आज भी है। वहीं से यह ईराक, सीरिया, सऊदी अरब और ओमान में भी फैला। जब १९२८ में अपने बच्चों के साथ एक चीता ईराक पहुँचा तो वहाँ बड़ी सनसनी फैली। वहाँ इस विचित्र जानवर को कोई नहीं पहचानता था। आर० आई० पोकॉक (३) का कहना है कि ईरान से ही चीता बिलोचिस्तान होकर भारत पहुँचा। भारत में किसी जमाने में चीता पश्चिम के मैदानों से लेकर मध्य भारत के पठारों और दक्षिण में भी पाया जाता था। नील गाय, काला हिरन और चार सींगोंवाला हिरन चीते के शिकार के मुख्य जानवर रहे हैं।

शायद गुलदार से बहुत मिलता-जुलता होना ही इसके नाश का कारण सिद्ध हुआ है। अब तो भारत के उन इलाकों में जहाँ कभी चीता पाया जाता था, उसका नाम भी सुनने को नहीं मिलता। अब भारत में इसे एक विलुप्त जीव मान लिया गया है।[१]

चीता कुत्ते से कुछ मिलता-जुलता होता है। इसीलिए पुराने ज़माने में बड़े जानवरों के शिकार के समय इसका खूब उपयोग किया जाता था। कहा जाता है कि रोम के सम्राट खेल और शिकार में चीते का उपयोग करते थे। आरमंड डेनिस (११) ने एक चीते का उल्लेख किया है जो सन् ४३९ में बाइजेंटाइन सम्राट अनास्तासियस को उपहार में मिला था। हित्ती लोगों की मुख्य देवी का वाहन चीता ही था। तूताँखामेन की मज़ार पर चीते के अनेक चित्र खोदे गये हैं। क्रीट द्वीप के निवासी, ग्रीक और एट्रस्कन लोग शिकार के समय चीते का उपयोग करते थे। मिस्र के दसवें राजवंश के एक फराऊन को अपने शत्रुओं को कुचलते हुए मानव-शीशधारी चीते के रूप में चित्रित किया गया है।

भारत में भी राजा-महाराजा शिकार में प्रयोग के लिए अपने यहाँ हाथियों और कुत्तों के साथ चीते भी पालते थे। शिकार में चीते के प्रयोग का एक तरीका प्रचलित था—चीते को (कभी-कभी चीते के जोड़े को) आँखों पर पट्टी बाँधकर और बैल गाड़ी में लाद कर जंगल में पहुँचाया जाता था। हिरन और बारहसिंगे पहचाने हुए बैलों को अपने पास आने देते हैं। जब उनकी नज़र बैलगाड़ी में

---

१. बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी की सूचना के अनुसार १९१९ में उत्तर प्रदेश में एक चीता देखा गया था। इसी प्रकार १९५१ में आंध्र प्रदेश में चीते का एक जोड़ा देखा गया था।

सवार लोगों पर पड़ती है तभी वे चौंककर भागते हैं। जैसे ही शिकार का कोई जानवर दिखाई देता था, चीते की आँखों पर से पट्टी खोल ली जाती थी और वह शिकार को देखते ही तेज़ी से दौड़ पड़ता था। देखते-देखते चीता हवा से बातें करने लगता था और आगे बढ़कर शिकार की गर्दन दबोच लेता था। चीता इस तरह सिखाया हुआ होता था कि शिकार का एक अंश उसी समय इनाम के रूप में प्राप्त करके संतुष्ट हो जाता था।

मैसूर के शासक टीपू सुल्तान की पराजय के बाद उनके पाँच चीते भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज़्ली (वेलिंगटन के ड्यूक) को भेंट किये गये थे। लेकिन उन्होंने इन चीतों का शिकार के लिए शायद कभी उपयोग नहीं किया।

चीता जब गति में होता है तो बहुत सुन्दर लगता है। लेकिन वैसे, इसका चलने का ढंग खासा भद्दा होता है। स्वभाव से यह सीधा और खिलवाड़ी होता है, और आसानी से पाला जा सकता है। बहुत जल्दी यह अपना और अपने मालिक का नाम याद कर लेता है। चीते का व्यवहार बिल्ली की अपेक्षा कुत्ते से अधिक मिलता-जुलता होता है। जब इसे कैद करके रखा जाता है तो प्यार के साथ इसकी खासी देखभाल करनी पड़ती है। लियोपोल्डविले (काँगो) में मेरे एक बेल्ज़ियन पड़ोसी के पास एक चीता था, जिसे उन्होंने गराज में बंद कर रखा था। कोई भी उसकी ओर ध्यान नहीं देता था। उसे कसरत कराने के लिए तो दूर रहा, कभी हाथ-पैर सीधे करने के लिए बाहर नहीं निकाला जाता था। मेरा ख्याल है कि देखभाल के अभाव में ही वह मर गया।

चीता भारत में ही समाप्त नहीं हुआ है, यह अफ्रीका के भी अपने अनेक पुराने ठिकानों में अब बहुत कम शेष रह गया है। काफ़ी पहले जब १८७० से १९०६ में सी० जी० शिलिंग्स ने अफ्रीका का भ्रमण किया था तो उन्हें यह देखकर चिन्ता हुई थी कि वहाँ चीते की जनसंख्या बहुत कम रह गई थी।

इंग्लैंड[1] और अमरीका में ग्रेहाउंड कुत्तों की दौड़ में चीते को भी शरीक करने के सारे प्रयास असफल सिद्ध हुए थे। चीतों ने बिजली की ताकत से दौड़ने वाले

१. अफ्रीकी शिकारियों के वरिष्ठ नेता रेमंड हुक दिसम्बर १९३६ में १२ चीते इंग्लैंड ले गये थे। लेकिन इन चीतों को व्हाइट सिटी स्टैडियम में ग्रेहाउंड दौड़ में शरीक करना संभव नहीं हो सका क्योंकि चीते ने बिजली के हिरन का पीछा करने से इनकार कर दिया था, हालांकि उस पर एक मरा हुआ खरगोश लालच देने के लिए रखा गया था।

खिलौना-हिरनों का पीछा करने में कोई दिलचस्पी नहीं ली, क्योंकि पकड़ में आ जाने पर उनसे उन्हें एक कौर माँस भी नहीं मिलता था।

बन्दी जीवन में चीते की संतानोत्पत्ति कम हो जाती है। इसका गर्भकाल लगभग ६० दिन का होता है, और बच्चों की संख्या २ से ४ तक होती है। बच्चों के लालन-पालन सम्बन्धी इसकी आदतें बिल्ली प्रजाति के अन्य बड़े जानवरों के समान ही होती हैं। चीतों के बच्चे तो पेड़ों पर बड़े मज़े में चढ़ जाते हैं, लेकिन वयस्क चीते इस काम को निरर्थक मानते हैं। आरम्भ में बच्चों की रेशमी खाल हल्के नीले-भूरे रंग की होती है और उम्र बढ़ने के साथ-साथ उस पर धब्बे स्पष्ट होने लगते हैं।

दक्षिण रोडेशिया में सालिस्बरी के पास १६२६ में काली धारियों वाले चीतों के कुछ नमूने प्राप्त हुए थे। इस किस्म के चीतों की पीठ पर धब्बों के स्थान पर धारियाँ होती हैं, और ये शाही चीते (असीनोनिक्स रेक्स) कहलाते हैं। आर० आई० पोकॉक के अनुसार शाही चीता सामान्य चीते का ही एक प्रकार है, और इसे एक पृथक् प्रजाति मानने के लिए पर्याप्त कारण उपलब्ध नहीं हैं।

इन विभिन्न प्रजातियों के शारीरिक नाप के तुलनात्मक आँकड़े काफी दिलचस्प हैं :

प्रजाति	सिर और शरीर की लम्बाई	पूंछ की लम्बाई	कंधों पर ऊँचाई	वजन
	से० मी०	से० मी०	से० मी०	किलो०
गुलदार ...	६१-१५०	६१ अधिक०	८०	६१ अधिकतम
जैगुआर ...	१५०-१८०	७०-६१	८५	६८-१३६
हिम तेंदुआ ...	१२०-१५०	६०-११५	७५	३३-४१
बादली तेंदुआ ...	६२-१०७	६१-६१	८०	१६-२३
चीता ...	१४०-१५०	६०-७५	१००	५०-६५

इन प्रजातियों की आयु-सीमा पंद्रह से पच्चीस वर्ष तक होती है।

सन्दर्भ

१.	—	**जर्नल द फ़िज़िक्स,** ३३ खण्ड २, १७८८ जर्नल,
२.	—	वॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, ३४वाँ अंक, १९३०
३.	पोकॉक आर० आई०	**"कैटेलॉग ऑव द जेनस, फ़ेलिस'**, ब्रिटिश म्यूज़ियम (नैचुरल हिस्ट्री), लंडन, १९५१
४.	वॉकर, ई० पी० तथा अन्य	**"मेमल्स ऑव द वर्ल्ड"**, जॉन हॉप्किन्स प्रेस, बाल्टीमोर, यू० एस० ए०, १९६४
५.	—	द लॉन्स्डेल लाइब्रेरी, खंड १४, **"बिग गेम शूटिंग इन अफ्रीका"**, सीले सर्विस एण्ड कम्पनी लि०, लंडन, १९५२
६.	जे० स्टीवेन्सन-हैमिल्टन	**"वाइल्ड लाइफ इन साउथ अफ्रीका"**, केसेल कम्पनी लि०, लंडन १९४७
७.	जॉन एफ़० वर्गर	**"एफ्रिकन जंगल मेमरीज़"**, रॉबर्ट हेल लि० लंडन, १९५८
८.	ओ० स्माइथीज़	**"टाइगर लेडी"**, लंडन, १९५३
९.	जूलियट हक्सले	**"वाइल्ड लाइव्स् ग्रॉव ग्रफ्रीका"**, कोलिन्स्, लंडन, १९६३
१०.	जे० ए० हंटर	**"हंटर्स ट्रैक्स"**, हैमिश् हैमिल्टन लंडन, १९५७
११.	आरमंड डेनिस	**"कैट्स् ऑव द वर्ल्ड"**, द वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ़ फ़ंड सीरीज़, कॉन्स्टेबल् एण्ड कम्पनी लि०, लंडन, १९६४
१२.	फ्रैन्क सी० हिवेन	**"हंटिग इन ग्रफ्रीका"**, राबर्ट हेल लि०, १९६२

१३. जॉन एफ़० वर्गर	"माई फ़ॉर्टी ईयर्स इन अफ्रीका", रॉबर्ट हेल लि०, लंडन, १९६०
१४. जिम कॉर्बेट	"द मेन-ईटिंग लेपर्ड ऑव रुद्रप्रयाग", ऑक्सफ़र्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, १९४८
१५. जे० ई० सी० टर्नर	"मैन-इट्र्स एण्ड मेमरीज" रॉबर्ट हेल लि०, लंडन, १९५९
१६. जॉन टेलर	"मैन-ईटर्स ऐण्ड मैरौडर्स", फ्रेडरिक मुलर लि०, लंडन, १९५४

भारत—देश और लोग

प्रकाशित पुस्तकें

१. फूलों वाले पेड़	एम० एस० रणधावा	६.५०
२. असमिया साहित्य	हेम बरुआ	५.००
३. कुछ परिचित पेड़	एच० सन्तापाऊ	४.००
४. भारत के सर्प	पी० जे० देवरस	४.७५
५. धरती और मिट्टी	एस० पी० राय चौधरी	४.५०
६. भारत के खनिज पदार्थ	मेहर डी० एन० वाडिया	४.००
७. पालतू पशु	हरवंस सिंह	४.२५
८. वन और वानिकी	के० पी० सागरीय	४.५०
९. राजस्थान का भूगोल	विनोदचन्द्र मिश्र	५.५०
१०. बगीचे के फूल	विष्णु स्वरूप	६.००
११. जनसंख्या	श्रीनारायण अग्रवाल	३.७५
१२. निकोबार द्वीप	कौशल कुमार माथुर	४.५०
१३. हमारे परिचित पक्षी	सालिम अली और लईक़ फतेहअली	९.००
१४. सब्जियाँ	बिश्वजीत चौधरी	५.५०
१५. भारत का आर्थिक भूगोल	वी० एस० गणनाथन	४.५०
१६. औषधीय पौधे	सुधांशु कुमार जैन	५.५०
१७. असम	संकलनकर्त्ता : एस० बरकटकी	५.२५
१८. राजस्थान	डा० धर्मपाल	४.५०

34464
28-5-70
SIMLA

राष्ट्रीय जीवन-चरित माला

प्रकाशित पुस्तकें

१. गुरु गोविंद सिंह	डॉ० गोपाल सिंह	२·००
२. गुरु नानक	डॉ० गोपालसिंह	२·२५
३. कबीर	डॉ० पारसनाथ तिवारी	२·००
४. रहीम	डॉ० समरबहादुर सिंह	१·७५
५. महाराणा प्रताप	श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट	१·७५
६. अहिल्या बाई	श्री हीरालाल शर्मा	१·७५
७. त्यागराज	प्रो० पी० साम्बमूर्ति	१·७५
८. पण्डित भातखण्डे	डॉ० एस० एन० रतनजनकर	१·२५
९. पण्डित विष्णु दिगम्बर	श्री वी० आर० आठवले	१·२५
१०. रानी लक्ष्मीबाई	श्री वृन्दावनलाल वर्मा	१·७५
११. सुब्रह्मण्य भारती	डॉ० (श्रीमती) प्रेमा नन्दकुमार	२·२५
१२. हर्ष	श्री वी० डी० गंगल	१·५०
१३. चन्द्रगुप्त मौर्य	श्री लल्लनजी गोपाल	१·२५
१४. काज़ी नज़रुल इस्लाम	श्री वसुधा चक्रवर्ती	१·५०
१५. शंकराचार्य	डॉ० टी० एम० पी० महादेवन	१·७५
१६. समुद्रगुप्त	श्री लल्लनजी गोपाल	१·२५
१७. मिर्ज़ा ग़ालिब	श्री मालिक राम	२·००
१८. हरिनारायण आप्टे	श्री महेश्वर ए० करन्दीकर	१·७५
१९. सूरदास	डॉ० व्रजेश्वर वर्मा	१.७५

तरुण भारती

१. गजराज	रामेश बेदी	३.२५
२. नेहरू—न जानी हुई बातें	पी० डी० टंडन	४.००
३. अपना भविष्य अपने हाथ	कोनोसुके मात्सुशिता	२.७५
४. गुलदार का शिकार	मनहोरदास चतुर्वेदी	३.२५

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की स्थापना, सन् १९५७ में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्था के रूप में इस महत्वपूर्ण उद्देश्य से की गई कि देश में ऐसा वातावरण तैयार किया जाए, जिसमें पुस्तकों के प्रति सार्वजनिक रुचि जागृत हो।

ट्रस्ट के कार्यकलाप में पुस्तक-प्रदर्शनियों, राष्ट्रीय पुस्तक-मेलों एवं पुस्तकों के लेखन, अनुवाद, प्रकाशन और वितरण की समस्याओं पर विचार-गोष्ठियों का आयोजन भी सम्मिलित है।

सत्साहित्य का प्रकाशन, उसको प्रोत्साहन देना तथा ऐसे साहित्य को कम मूल्य पर सर्व-साधारण तक पहुँचाना ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य है।

Library IIAS, Shimla
H 591.5 C 392 G
00034464